

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 दिसम्बर 2023

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 दिसम्बर 2023

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61

अंक : 17

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23

Office Posted At R.M.S., Bikaner



राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापारसक

धार्मिक

पाक्षिक

विवेक हो विहार में,
यतना का आलंबन हो।
तभी सुरक्षित है संयमी जीवन,
और शुद्ध साध्वाचार हो।।



राम चमकते भानु समाना

जो दिल से होती
है वह प्रशंसा है।
जो मात्र शब्दों से
होती है वह
चापलूसी है।

शुक्रवार

दूसरों से किया
गया प्रेम पागल
बनाता है। अपने
से किया गया
प्रेम परमात्मा
बना देता है।

जो मालिक बन
जाता है,
वह कभी किसी
को गुलाम
नहीं बनाता।

-पद्मेश्वर, पद्मेश्वर आचार्य प्रवचन 1008 श्री रामानुज जी म.सा.

॥ आगमवाणी ॥

ल्योयंसि जाण अहियाय दुक्खं।

-आचारंग (1/3/1)

यह समझ लीजिए कि संसार में अज्ञान तथा मोह ही अहित और दुःख करने वाला है।

Know that the only harmful things in the world are ignorance and delusion.

अण्णाणं परमं दुक्खं, अण्णाणा जायते भयं।

अण्णाणमूलो संसारो, विविहो सव्वदेहिणं।।

-ऋषिभाषित (21/1)

अज्ञान सबसे बड़ा दुःख है। अज्ञान से भय उत्पन्न होता है, सब प्राणियों के संसार भ्रमण का मूल कारण अज्ञान ही है।
Ignorance is the greatest misery, It gives rise to fear and results in worldly wandering.

जहा अस्साविणि णावं, जाइअंधो दुरुहिया।

इच्छइ पारमागंतुं अंतरा य विसीयई?।

-सूत्रकृतांग (1/1/2/31)

अज्ञानी साधक उस जन्मांध व्यक्ति के समान है, जो छिद्रवाली नौका पर चढ़कर नदी पार करना चाहता है,
किंतु किनारा आने से पहले ही बीच प्रवाह में डूब जाता है।

An ignorant aspirant is like a blind man who wishes to cross a river in a leaky boat but drowns midstream.

समुप्पायमजाणंता, कंहं नायंति संवरं?

-सूत्रकृतांग (1/1/1/3/10)

जो दुःखोत्पत्ति का कारण ही नहीं जानते, वह उसके निरोध का कारण कैसे जान पाएँगे?

How can those who do not know the reason for their misery find the means of its mitigation?

अब्बाणी किं काही, किं वा नाही सेयपावगं?

-दशवैकालिक (4/10)

अज्ञानी आत्मा क्या करेगी? वह पुण्य और पाप को कैसे जान पाएगी?

What will an ignorant person do? How will he come to know about merit and demerit (Piety and sin)?

जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा।

लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए।।

-उत्तराध्ययन (6/1)

जितने भी अज्ञानी तत्त्वबोध हीन पुरुष हैं, वे सब दुःख के पात्र हैं। इस अनंत संसार में वे मूढ़ प्राणी
बार-बार विनाश को प्राप्त होते रहते हैं।

All the ignorant ones, devoid of the knowledge of fundamentals, are destined to suffer the worldly misery. Such ignorant souls get repeatedly destroyed in this world.

साभार- प्राकृत मुक्तावली 



राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना व अन्य

❁ धर्मदेशना ❁

- 06** अक्षय तृष्णा
-आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.
- 08** काया-क्लेश का लक्ष्य
आत्मशुद्धि
-आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.
- 11** जयं चरे
-आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

❁ ज्ञान सार ❁

- 15** मधुर वचन
-संकलित
- 17** श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र
-सरिता बैंगानी

❁ तत्त्व ज्ञान ❁

- 19** नैरयिक व परमाधार्मिक
-संकलित

संस्कार सौरभ

- 20** धर्ममूर्ति आनंदकुमारी
-संकलित
- 26** अभयदान की
सर्वश्रेष्ठता
-आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.
- 29** मुझे जैन होने पर गर्व है
-त्रिलोकचन्द जैन
- 33** जीवन विहार
-डॉ. आभाकिरण गाँधी
- 35** मर्यादा ही विवेक
-सुरेश बोरदिया
- 38** भगवान महावीर स्वामी
का दीक्षाकल्याणक
-कंचनदेवी कांकरिया



भक्ति रस व विविध

❁ भक्ति रस ❁

- 34** विहार
-राखी अलिझाड़
- 41** विहार विवेक
-संध्या धाड़ीवाल

❁ विविध ❁

- 18** बाबूजी घर के रहे
न घाट के
-ओनम जारोली
- 23** बालमन में उपजे ज्ञान
-मोनिका जय ओस्तवाल
- 32** सहजता
-आरती नवलखा
- 43** नीमच चातुर्मास
समाचार
-महेश नाहटा



विविध

चिंतन पराग

किं कर्तव्यम्

-परम पूज्य आचार्य प्रवर । 008 श्री रामलाल जी म.सा.

अपना पेट तो पशु भी भरता है, पक्षी भी भरता है। मनुष्य यदि अपनी उदर पूर्ति करे या अपने परिवार के उदर पूर्ति के लिए प्रयत्नशील बने अथवा अपनी मान्यता के साधु-साध्वियों की सार सम्हाल करे, उनके विहारादि संदर्भ में चिंतन-मनन करे तो इसमें क्या विशेषता है? कुछ व्यक्ति ऐसे भी देखे जाते हैं जो बिना भेदभाव के चाहे दिगम्बर हो, श्वेताम्बर हो, स्थानकवासी या अन्य कोई भी हो सभी के विहारचर्या में सेवा देना, उनके ठहरने की व्यवस्था देखना, गोचरी-पानी के घर बताना आदि में तत्पर रहते हैं। कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि यदि साधु-साध्वी डब्बा लें तो हम व्यवस्था देख सकते हैं, अन्यथा हम घर बताने आदि रूप व्यवस्था नहीं कर सकते। कुछ लोगों की ऐसी भी वृत्ति सामने आई कि उस उस सम्प्रदाय के श्रावकों द्वारा उनके पास व्यवस्था करने का पत्र पहुँचे व व्यवस्था के पश्चात् धन्यवाद पत्र भी। इस प्रकार भिन्न-भिन्न रुचि वाले लोग देखे जाते हैं। सबसे उत्तम बात तो यह है कि बिना किसी मान-सम्मान की चाह के मात्र कर्तव्य पालन की भावना से कार्य करे। कार्य यदि साधु-साध्वी जी से संबंधित हो तो उसमें निर्दोषता का पूरा लक्ष्य रखा जाए। साधु के लिए बनवाकर या पैसे देकर व्यवस्था की या करवाई जाती है तो वह सम्यक् रूप नहीं है।

कुछ व्यक्ति-संस्थाएँ स्वधर्मी सहयोग के रूप में, अध्ययन के लिए सहयोग के रूप में एवं उपचार के लिए भी सहयोगात्मक भाव लेकर चलते हैं। उसमें भी मुख्य बात यह होनी चाहिए कि उसे प्रदर्शन का विषय न बनाया जाए। उससे स्वयं को प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न न किया जाए। कर्तव्य बुद्धि से कार्य सम्पादित होता है तो उससे वह विशेष रूप से लाभान्वित होता है। मान-सम्मान या नाम कमाने के उद्देश्य से किए गए उपक्रम अत्यंत हलके-फुलके होते हैं। उनसे वह सामान्य लाभ का अधिकारी भी बन पाता है या नहीं, यह संदिग्ध है। अतः जो कार्य किया जाए निरूपह-निष्काम भाव से, कर्तव्य दृष्टि से किया जाए।

चैत्र कृष्णा 12, सोमवार, 04-04-2016

साभार- आरोह

श्रमणोपासक

अक्षय तृष्णा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

माया के पीछे भागने से तृष्णा कभी नहीं मिटती। इसके लिए एक उदाहरण लीजिए- एक मनुष्य किन्हीं सिद्ध महात्मा के पास पहुँचा। महात्मा ने कहा- “मनुष्य शरीर सुलभ नहीं है। धर्म का आचरण न किया तो शरीर किस काम का?” आगत मनुष्य ने कहा- “महाराज! घर में तो बाल-बच्चे हैं, उनका पालन-पोषण करना पड़ता है। संसार की स्थिति विषम से विषमतर होती जा रही है। सारे दिन दौड़-धूप करने के बाद भरपेट खाना मिल पाता है। कहीं कुछ आजीविका का प्रबंध हो जाए, घर का काम चलने लगे तो धर्मध्यान करूँ।”

महात्मा ने पूछा- “तुझे प्रतिदिन एक रुपया मिल जाए तब तो तू भगवान का भजन किया करेगा?”

आगत मनुष्य ने प्रसन्न होकर कहा- “ऐसा हो जाए तो कहना ही क्या है? फिर तो मैं ऐसा भजन करूँ कि ईश्वर और मैं एकमेक हो जाएँ।”

महात्मा ने उसका हाथ लेकर एक का अंक उस पर लिख दिया। उसे किसी भी प्रकार एक रुपया मिल जाता था। एक रुपया रोज में वह खाता-पीता और अपनी संतान का पालन-पोषण करता। मगर उसे अब पहले जितना भी भजन नहीं होता था।

एक दिन वह फिर उन्हीं महात्मा से मिला। महात्मा ने उससे कहा- “आजकल तू क्या करता है। अब भजन नहीं करता?” वह बोला- “हाँ महाराज, अच्छी याद दिलाई आपने। आपने एक रुपया रोज का प्रबंध कर दिया है, मगर आप ही सोचकर देखें कि एक रुपया रोज में खाने-पीने, कपड़े-लत्ते, स्त्री के गहने

आदि का खर्च किस प्रकार निभ सकता है।”

महात्मा ने पूछा- “फिर चाहता क्या है?”

उसने कहा- “महाराज और कुछ नहीं, दस रुपया रोज मिल जाए तो खर्च बखूबी चल सकता है।”

महात्मा- “दस रुपया रोज मिलने पर तो भगवान का भजन किया करेगा? फिर गड़बड़ तो नहीं करेगा?”

उसने उत्तर दिया- “नहीं महाराज! फिर काहे की गड़बड़? इतने में तो मजे से काम चल जाएगा।”

महात्मा ने उसके हाथ पर एक का जो अंक बनाया था, उसके आगे एक शून्य और बढ़ा दिया। अब उसे प्रतिदिन दस रुपये अर्थात् तीन सौ रुपया मासिक मिलने लगे। उसने अपना काम खूब बढ़ा लिया। अनेक स्थानों पर उसकी दुकानें एवं कारखाना आदि चलने लगे। नतीजा यह हुआ कि उसे तनिक भी फुर्सत न मिलती। स्त्री कहने लगी- “घर में अच्छे दिन आए हैं तो मेरी भी कुछ सुध लोगे या नहीं?” स्त्री के ऐसे आग्रह से उसके लिए भी आभूषण बनने लगे। उसके रहन-सहन का पैमाना (Standard) भी ऊँचा हो गया। विवाह-सगाई भी ऊँची हैसियत के अनुसार होने लगी।

कुछ दिनों के पश्चात् फिर उसे वे ही महात्मा मिले, बोले- “आजकल तुझे दस रुपया रोज मिलते हैं, अब क्या करता है? अब भी तू भजन नहीं करता!”

उसने उत्तर दिया- “दीनदयाल! खूब स्मरण दिलाया। आपने मुझे दस रुपया रोज पाने की जो शक्ति दी है, मैं उसका दुरुपयोग नहीं करता। आप हिसाब देख

लीजिए, इतने से तो कुछ होता ही नहीं! संसार में बैठे हैं। गृहस्थी का भार सिर पर है। इज्जत के माफिक ही सब काम करने पड़ते हैं।”

महात्मा बोले- “मैंने दस रुपये रोज प्रपंच बढ़ाने के लिए दिए थे या घटाने के लिए?”

उसने कहा- “करुणानिधान! गृहस्थी में प्रपंच के सिवाय और क्या चारा है? प्रपंच न करें तो काम कैसे चले?”

महात्मा- “फिर तू चाहता क्या है?”

वह बोला- “आपकी दया। आपकी दया हो जाए और कुछ आमदनी बढ़ जाए तो जीवन सफल हो।”

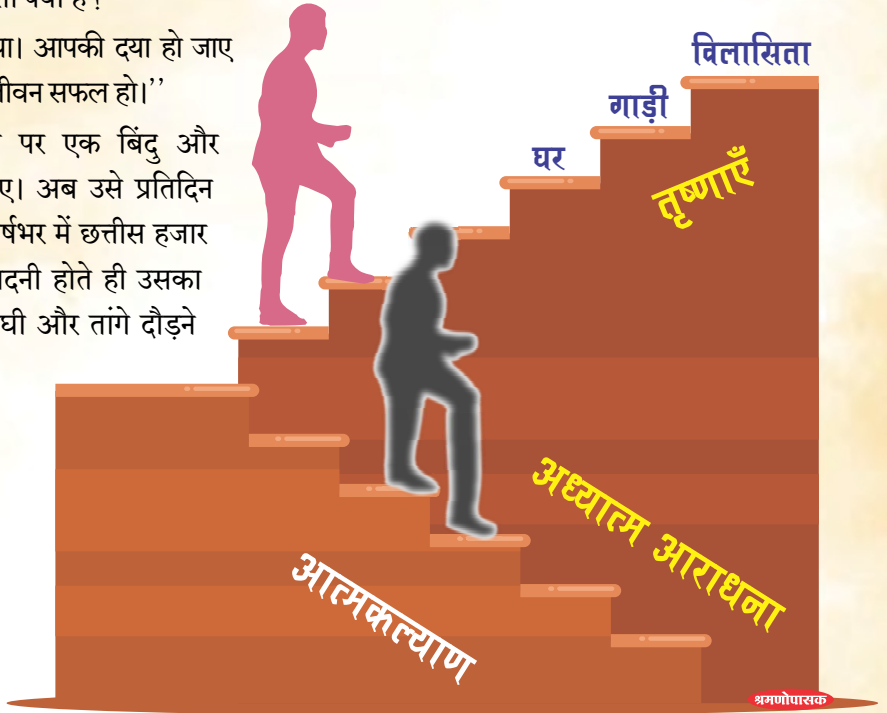
महात्मा ने उसके हाथ पर एक बिंदु और बढ़ाकर सौ रुपया रोज कर दिए। अब उसे प्रतिदिन सौ, महीने में तीन हजार और वर्षभर में छत्तीस हजार रुपये मिलने लगे। इतनी आमदनी होते ही उसका धंधा और बढ़ गया। मोटर, बघी और तांगे दौड़ने लगे। पहले अवकाश मिलने की जो संभावना थी, वह भी अब जाती रही। वह इतनी उलझनों में फँस गया कि उसे महात्मा को मुँह दिखलाना भी कठिन हो गया।

आज के श्रीमंत भी आत्मकल्याण में कितना समय

व्यतीत करते हैं? वे समझते हैं मानो हमारी सृष्टि ही अलग है। गरीबों और अमीरों की दो भिन्न-भिन्न सृष्टियाँ हैं।

उस व्यक्ति ने जितना प्रपंच बढ़ाया उतना ही मोहमाया में उलझता गया और धर्म-ध्यान तो क्या उनके भावों से ही दूर होता गया। होना यह चाहिए कि हम धन-दौलत बढ़ाने की अपेक्षा शुभ कर्मों का संचय करें तभी यह जीवन सार्थक होगा।

साभार- जवाहर किरणावली-18
(उदाहरण माला भाग-3)



“ रावटी से आगे आचार्य श्री नानेश का विहार हो रहा था। जानकारी की गई कि रास्ते में आस-पास कोई गाँव है तो मालूम हुआ कि सड़क से लगभग तीन किमी. अन्दर एक गाँव है, जहाँ जैनियों के चार-पाँच घर हैं। आचार्यदेव ने विचार किया कि जैनों के घर हैं तो कुछ आहार-पानी की जोगवाई हो सकती है; जो आवश्यक भी थी, क्योंकि साथ में छोटे संत भी थे। वहाँ गए तो जैन भाई आश्चर्य करने लगे कि ये कौन आ गये! वहाँ कभी संतों का आगमन हुआ ही नहीं था। आचार्य भगवन् वहाँ चबूतरे पर विराज गए। लोगों को लगा जैसे कोई सर्कस या नाटक आया है। वे देखने के लिए आने लगे। जब उन्हें मालूम पड़ा कि ये जैन मुनि हैं तो एक जैन भाई आचार्य भगवन् से पूछने लगा- आप कितनी मूर्ति हैं? उत्तर मिला- हम सात जने हैं। उस भाई ने पुनः पूछा- आपके लिए चाय-नाश्ता बनवाऊँ या सीधी रसोई तैयार करवाऊँ? जरा सोचिए कि यह कौन पूछ रहा था? जैन थे, पर जानते नहीं थे कि जैनत्व क्या होता है? जैनियों की साधुचर्या कैसी होती है? बस सुन रहा था कि हमारा परिवार जैन हैं।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

- * विहार, भिक्षाचरी, केशलुंचन आदि काया-क्लेश तप से जीवन में नई ऊर्ध्वगामी पवित्रता का संचार होता है।
- * जीवन की प्रत्येक क्रिया धर्म-क्रिया के अनुरूप होनी चाहिए।
- * दृष्टि की सृष्टि बदली तो समस्त जीवन-क्रम बदल जाएगा।
- * ज्ञानपूर्वक जीवन-क्रम में परिवर्तन से ही काया-क्लेश तप की आराधना होती है।

शान्ति जिन एक मुझ विनती....

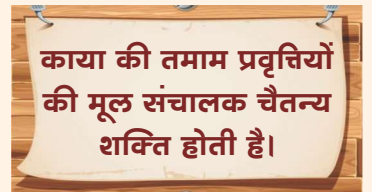
परम आत्मशांति की अवस्था को प्राप्त करने के लिए मन के परीक्षण द्वारा शुद्ध प्रणिधान के संबंध में चिंतन किया जा रहा है। शुद्ध प्रणिधान जब आत्मा को प्राप्त होता है तो समझिए कि उसने जीवन का सम्पूर्ण सार पा लिया है, किंतु शुद्ध प्रणिधान की प्राप्ति ही अति कठिन साधनाजन्य होती है। जीवन में इस शुद्ध प्रणिधान को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम शरीर को ही माध्यम बनाना पड़ता है। हमारा यह मानव शरीर आत्मिक और धार्मिक साधना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन होता है। मानव शरीर जो बाहर से साधारण दिखाई देता है, अपनी संगठन शक्ति एवं कर्मण्यता में अद्भुत होता है। हमारे और आप सभी के शरीर के भीतरी आवरण का मुख्य अंग द्रव्य मन होता है और इसी द्रव्य मन की स्थिति के साथ भाव मन को पकड़ने का प्रयास किया जाता है। आत्मा की शक्ति भाव रूप में प्रवाहित होती हुई द्रव्य मन को संचालित करती है और द्रव्य मन के माध्यम से मानव-शरीर को प्रभावित करती है।

जीवन में आत्मा से लेकर शरीर तक का सारा संबंध इसी प्रकार जुड़ा रहता है। शारीरिक प्रक्रियाएँ भी कई प्रकार से होती हैं, जिनमें बाह्य प्रक्रियाएँ तो दिखाई देती हैं किंतु मन के माध्यम से चलने वाली प्रक्रियाएँ तो भीतर ही भीतर चलती रहती है। यह भीतरी दृष्टि से चलने वाली प्रक्रियाएँ द्रव्य मन की होती हैं, किंतु भाव मन की शक्ति उससे भी बढ़कर होती है और इन सबकी संचालन शक्ति आत्मा के पास रही हुई हैं। इन सबका संबंध यंत्रवत् जुड़ा रहता है।

समझने की बात यह है कि चाहे क्रिया बाहरी हो या भीतरी कोई भी क्रिया बिना आत्मा के संचरित ही नहीं होती है। जितनी भी क्रियाएँ हैं, वे शरीर के माध्यम से आत्मा का ही शक्ति स्वरूप प्रदर्शित करती हैं।

शरीर श्रम का आध्यात्मिक रूप

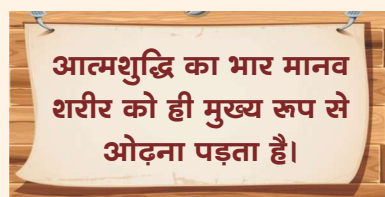
ये जो सारे क्रिया-कलाप हैं, वे शरीर के माध्यम से चलते हैं। इसे हम शरीर का श्रम कह सकते हैं, किंतु शरीर श्रम की प्रवृत्ति अधिकाधिक बढ़े और



वह श्रम आध्यात्मिकता से संबंधित हो, इस ओर क्रिया-कलापों की गति अवश्य मुड़नी चाहिए। काया की तमाम प्रवृत्तियों की मूल संचालक चैतन्य शक्ति होती है। यही चैतन्य शक्ति विकारपूर्ण दशा में अशुद्ध प्रणिधान में बहती है, जिसे आत्मशुद्धि की दिशा में मोड़कर शुद्ध प्रणिधान के निर्माण में सहायिका बनानी चाहिए। शुद्ध प्रणिधान और आत्मा का शुद्धिकरण - ये अन्योन्याश्रित स्थितियाँ होती हैं।

आत्मा के शुद्धिकरण अभियान में जो त्याग और तप के प्रसंग हैं, इनके बाह्य रूपों की दृष्टि से मानव-तन का इसमें बहुत बड़ा योग होना चाहिए। त्याग या तपाराधन में शरीर को जो भी श्रम करना पड़ता है या कष्ट देखना पड़ता है, उस काया-क्लेश का अभिप्राय शरीर को कष्ट पहुँचाना बिल्कुल नहीं, बल्कि उसके जरिए आत्मा को परम शुद्ध बनाना ही होता है। जब इस उद्देश्य के साथ काया-क्लेश तप किया जाता है तो वह वास्तव में एक तप कहलाता है। यही तप हमारे शरीर श्रम के आध्यात्मिक रूप को प्रकाशित करता है।

आप देखते होंगे कि जिन सुकुमार व्यक्तियों ने अपने कोमल शरीर को कभी भी किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया होगा और जिन्होंने जूते व बूट अपने पैरों में पहिनकर भी कभी अधिक चलने की कोशिश नहीं की होगी, उन्हें ही जब आत्मशुद्धि एवं शुद्ध प्रणिधान



की लगन लग जाती है और उसके लिए एक तड़प पैदा हो जाती है तो वे

संसार के सारे सुखों को छोड़कर मुनि धर्म अंगीकार करते हैं तथा अधनंगे बदन और नंगे पैरों से हजारों कोसों का परिभ्रमण करते हैं। कंटीले और पथरीले मार्गों पर वे गति करते हैं तो उनके पैर लहलुहान हो जाते हैं, फिर भी वे अपने उद्देश्य से विचलित नहीं होते हैं। साधारण व्यक्ति सोचते होंगे कि शुद्ध प्रणिधान के लिए

इतना अधिक कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता है अथवा आत्मशुद्धि की साधना राजभवनों का सुख उठाते हुए क्यों नहीं की जा सकती है? जान-बूझकर ऐसा शरीर-कष्ट क्यों मोल लिया जाता है? एक तो खुले पैरों से पैदल भ्रमण करना, फिर कहीं पानी मिला या नहीं मिला तो प्यास का कष्ट सहन करना और भूख, गर्मी, सर्दी की विकटताओं को सहते हुए केशलुंचन का कष्ट भी देखना, ये सब प्रक्रियाएँ क्यों की जाती हैं? आत्मशुद्धि करनी है तो भावों के साथ ही उसकी शुद्धि क्यों नहीं कर ली जाए? आत्मशुद्धि के साथ शरीर-कष्ट की इन सारी प्रक्रियाओं का क्या संबंध है? ऐसे कई प्रश्न ज्ञान दशा के अभाव में साधारण व्यक्तियों के सामने उपस्थित हो जाते हैं, जिन पर इन प्रक्रियाओं के आंतरिक महत्व की दृष्टि से आध्यात्मिक चिंतन किया जाए, तभी काया-क्लेश का मर्म स्पष्ट हो सकेगा।

काया-क्लेश तप का माहात्म्य

आत्मशुद्धि का भार मानव शरीर को ही मुख्य रूप से ओढ़ना पड़ता है। जब सारी क्रियाएँ आत्मा के संचालन में शरीर के माध्यम से होती हैं तो त्याग और तप की क्रियाएँ भी शरीर के ही माध्यम से की जाएगी। बारह प्रकार के तपों में पाँचवे क्रम पर इसी कारण से काया-क्लेश तप का उल्लेख है, जिसका अभिप्राय है कि काया को जो क्लेश या कष्ट देना है, उसका एकमात्र उद्देश्य आत्मशुद्धि की अवस्था को प्राप्त करना है। काया-क्लेश के तप का इसी दृष्टि से अपूर्व माहात्म्य माना गया है।

जब आरामदायक और ऐश्वर्यपूर्ण कोमलताभरी परिस्थितियों में रहने वाले व्यक्तियों ने भी इस दिशा में गहरा अनुसंधान किया तथा आत्मशुद्धि करने का अपना दृढ़ संकल्प बनाया तो वे भी काया-क्लेश के तप के सारपूर्ण माहात्म्य को समझ कर शरीर कष्ट के मार्ग पर निडर होकर चल पड़े। ऐसे पुरुषार्थी व्यक्तियों की सामान्य रूप से चर्चा न भी करें, किंतु जिन शांतिनाथ भगवान की प्रार्थना की जा रही है, वे कौन थे और ज्ञान व भावना के साथ उन्होंने किस प्रकार शरीर कष्ट सहे

तथा सर्वोच्च आत्मशुद्धि सम्पादित की? शांतिनाथ प्रभु तीर्थंकर हुए, जिन्होंने माता के गर्भ से ही तीन ज्ञान पाए और जिनका जीवन सुकोमल, भौतिक सत्ता एवं सम्पत्ति से सम्पन्न था, उन्होंने भी जब सोचा कि मैं शुद्ध प्रणिधान प्राप्त करके परम शांति का लाभ लूँगा तो उन्होंने अपनी सम्पूर्ण भौतिक सत्ता एवं सम्पत्ति तथा कोमलतापूर्ण जीवन का परित्याग कर दिया। यही नहीं, उन्होंने साधु जीवन के कठोर कष्टों को भी हर्षपूर्वक अपनाया कि उनके माध्यम से आत्मशुद्धि का कार्य भली प्रकार सम्पन्न हो सकेगा।

विहार, भिक्षाचरी, केशलुंचन आदि की कष्टप्रद प्रक्रियाएँ आज कोई नई नहीं है। ये सभी प्रारंभ से ही चल रही हैं और तीर्थंकर भी इन प्रक्रियाओं को अपनाते हुए चलते आए हैं।

काया-क्लेश तप से संबंधित इन सभी प्रक्रियाओं पर जब बारीकी से विचार किया जाएगा तो स्पष्ट होगा कि शुद्ध प्रणिधान की उपलब्धि के लिए इस तप की परम आवश्यकता है। अनशन तप की दृष्टि से तीर्थंकरों ने भी एक उपवास से लेकर बारह-

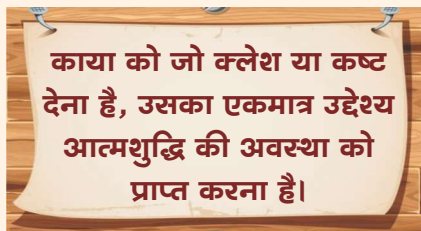
बारह माह तक का भी तपाराधन किया है। परंतु अनशन के साथ ऊनोदरी, भिक्षाचरी, रस-परित्याग आदि तपों पर आचरण करते हुए उन्होंने काया-क्लेश तप को भी अपने जीवन में पूरी तरह से उतारा। **इस मानव शरीर को ज्ञानपूर्वक ऐसे श्रम में लगाना जिसका उद्देश्य आत्मशुद्धि हो तो ऐसा सारा श्रम काया-क्लेश तप के अंतर्पेट में ही आता है।** काया-क्लेश तप जीवन में नई ऊर्ध्वगामी पवित्रता का संचार करने वाला होता है।

काया-क्लेश के विभिन्न प्रकार

काया-क्लेश तप से शरीर की मूर्च्छा हटती है तो शरीर के प्रति रहने वाली मूर्च्छा भी समाप्त होती है। यह तप शरीर-मोह को जर्जरित बनाने वाला होता है।

अंतःकरण के प्रणिधान को शुद्ध बनाने की दृष्टि से मांजने हेतु ज्ञानपूर्वक इस शरीर को तपाया जाता है। विहार करने में जहाँ जीवों की रक्षा का प्रसंग है तो उसी प्रकार शरीर को कष्ट देकर आत्माभिमुखी वृत्तियों को जागृत बनाने का भी विहार का उतना ही लक्ष्य होता है। इसलिए विहार काया-क्लेश तप है। मुनिराज दीक्षा लेकर जो पैदल परिभ्रमण करते हैं, वे भिन्न-भिन्न प्रकारों से अंतः साधना ही करते हैं। वे ग्रामानुग्राम उग्र विहार करते हैं तो उग्र का यह अर्थ नहीं कि वे भागते-दौड़ते हैं। उग्र का अर्थ है कि वे आत्मरमण की मस्ती के साथ अधिकाधिक परिभ्रमण करते हुए अधिकाधिक जनसंपर्क साधकर जनमानस में से अशुद्धि को निकालने का कठिन प्रयास करते हैं।

मुनियों के लिए पद-विहार का प्रयोजन यह भी होता है कि वे छोटे से छोटे स्थान पर जाकर व्यक्तियों के



जीवन में फैलने वाली अनैतिकता को दूर करने का उपदेश दें।

इस कारण संतों के लिए प्रावधान है कि वे चातुर्मास समाप्ति के बाद आठ विहार व एक विहार पुनः चातुर्मास में पहुँचने के लिए -

इस प्रकार नौ विहार कम से कम करें ही। नौ-कल्प विहार होना चाहिए। इसका कारण है कि वे अनेकानेक गाँवों में स्पर्शना कर सकें, तो यह जो स्पर्शना होती है, वह तप है। कभी-कभी भाई देखते हैं कि महाराज बड़ा कष्ट उठा रहे हैं तो यह सही नहीं है। अगर इसको कष्ट समझा जाएगा तो फिर विहार ही नहीं करेंगे। आत्मशुद्धि एवं शुद्ध प्रणिधान को पाने के लिए मुनियों द्वारा देखा जाने वाला यह कष्ट सही तौर पर कष्ट की परिभाषा में नहीं आता है, बल्कि काया-क्लेश तप की परिभाषा में आता है।

गंगाशहर-भीनासर

दि. : 26-11-1973

साभार- नानेशवाणी-35 (सर्वत्याग की साधना) **श्रमणोपासक**

जयं चरे

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

**पद्मप्रभु जिन तुज मुज आंतरू रे, किम भांजे भगवंत?
कर्म विपाके कारण जोईने रे, कोई कहे मतिमंत॥**

आत्मा और परमात्मा के बीच जो दूरी है उसका हेतु/कारण कर्मविपाक है और कर्मविपाक से जो कर्मबंधन के हेतु बनते हैं, उन्हें बंध का और दूरी का कारण बताया गया है। कर्मबंध क्रिया से होता है। कहा भी गया है- 'या या क्रिया सा सा फलवती' यह क्रिया मन से, वचन से और काया से होती है। चलना, फिरना, बोलना, बैठना, ये सब क्रियाएँ हैं। जो भी क्रिया होगी उसमें शुभाशुभ आश्रव का संयोग होगा। शुभाशुभ आश्रव से जो आदान होगा वह आत्मा से संयुक्त होगा और कार्मण-वर्गणा रूप पुद्गलों का आत्मा से संयुक्त होना ही कर्म की संज्ञा प्राप्त करता है। अबाधाकाल बीतने पर ये कर्म उदय में आते हैं। विपाक (फल), फिर क्रियाएँ और बंध, यह क्रम अनवरत चला आ रहा है। एक समय भी ऐसा नहीं होता जिसमें मन, वचन या काया की क्रिया नहीं हो रही हो। व्यक्ति विचार करता है, क्रिया रुकती नहीं, कर्मबंध चलता रहता है तो फिर मुक्ति का उपाय ही नहीं है। गुरु से ऐसा उपदेश सुनकर एक शिष्य ने जिज्ञासा प्रकट कर दी- 'भंते! क्या चलना-फिरना बंद कर दें, एक जगह बैठ जाएँ?' भगवान ने कहा-

**अजयं चरमाणो उ, पाण-भूयाईं हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कइयं फलं॥**

-दशवैकालिक सूत्र 4/36

अर्थात् अयतना से चलता हुआ प्राण-भूतादि की हिंसा करता है, वह पाप कर्मों का बंध करता है, जिसका कटुक विपाक होता है। 'भगवान! कहां चरे... फिर कैसे

चलें?' गुरु ने उत्तर दिया- 'जयं चरे' अर्थात् यतनापूर्वक चलो। पर यतना कैसे की जाए, उसके तौर-तरीके क्या हैं? इसके उत्तर से ही उस प्रश्न का उत्तर भी मिलता है कि दूरी कैसे दूर हो? दूरी किन कारणों से है? दूरी जिन कारणों से है उनमें चलना भी एक कारण है। तब प्रश्न उत्पन्न होता है कि चलकर तो दूरी तय की जाती है। चलने से यदि दूरी बढ़ती हो तो फिर दूरी तो दूर होनी ही नहीं है। दो व्यक्ति मकान के दो छोरों पर हैं। दोनों मिलना चाहते हैं और यदि दोनों सोच लें कि हमें चलना नहीं है, तो क्या मिल पाएँगे? विचार करें कि दूरी चलने पर मिटेगी या क्रिया रोकने पर? 13वाँ गुणस्थान है सयोगी केवली और 14वाँ गुणस्थान है अयोगी केवली। सिद्धत्व प्राप्ति से पहले 14वें गुणस्थान में जाना जरूरी है। योग प्रवृत्ति के विराम बिना सिद्धत्व नहीं हो सकता। अयोग अवस्था में योग प्रवृत्ति का अभाव हो जाएगा फिर तो मात्र 5 ह्रस्व अक्षर (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के उच्चारण जितने समय में संपूर्ण कर्म विलय से निरंजन, निराकार अवस्था लब्ध हो जाएगी। पर होगी कब? जब क्रिया रुक जाए, कर्म के हेतु और कर्मबंध रुक जाए। भेद कल्पना मिट गई। शिष्य के प्रश्न 'कहां चरे' के उत्तर में प्रभु ने कहा- 'जयं चरे'। यहाँ प्रवृत्ति है, निषेध नहीं है और इतने से सूत्र में बहुत कुछ समाविष्ट भी हो गया है। साधक को आवश्यक होने पर ही चलना है, अनावश्यक नहीं और चलना पड़े तब भी ईर्यासमिति की विधि से ही गमन करे। उत्तराध्ययन सूत्र 24/8 में उस विधि का निरूपण किया गया है-

**इंदियत्थे विवज्जेता, सज्जायं चैव पंचहा।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवत्ते रियं रिण॥**

अर्थात् इन्द्रिय अर्थों का वर्जन करता हुआ। इन्द्रियाँ पाँच कही गई हैं और अर्थ यानी उनका विषय, जैसे श्रोत्र का विषय सुनना, चक्षु का विषय देखना, घ्राण का विषय सूंघना आदि; इन विषयों से अपने-आप को अलग हटाकर चलना। चलते-चलते मधुर गायन सुनने में लग जाएँ तो क्रियाएँ तो दो हो जाएँगी, पर उपयोग एक में ही रहेगा। चल लेंगे, पर ईर्या शोधन नहीं कर पाएँगे। इसके साथ ही पाँच प्रकार की स्वाध्याय, वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा को भी चलते समय त्याग दें। कभी-कभी कुछ लोग कहते हैं कि प्रभु ने योग-साधना और ध्यान-साधना का स्वरूप नहीं बताया। पर देखिए इसी गाथा में आगे कहा है- तन्मुत्ती-तन्मूर्ति (एकमेक) और तप्पुरक्कारे अर्थात् उसी कार्य को प्रधानता दें। यह तन्मयता ही योग-साधना है, ध्यान की एकाकारता है। किसी को आशंका होती है कि जैन सिद्धांत सिर्फ निवृत्ति धर्म की बात करता है। यह मत करो, वह मत करो, विधेय रूप में क्या स्वीकार किया जाए, उसका दिग्दर्शन इस धर्म में नहीं है। वस्तुतः यह बात यथार्थ नहीं है। जैन सिद्धांतों में विधेय रूप में भी बहुत-कुछ उपलब्ध है- ‘जयं चरे’ यह विधेयात्मक वाक्य ही है और यदि देखा जाए तो निषेध भी एक प्रकार से विधेय को ही उजागर करता है। सड़क में वाहनों के चलने के लिए निर्देश होता है कि बायीं ओर चलें, इससे दाहिनी ओर चलने का निषेध हो जाता है और यदि दायीं का निषेध करें तो बायीं का विधान अपने आप हो जाएगा। यह तो वाहन के लिए हुआ और पैदल चलने वाले को दाहिनी ओर अर्थात् राइट साइड चलना चाहिए। एक प्रकार से यह तथ्य भी इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को ही उजागर कर रहा है कि पैदल चलने वाला राइट (सही) चलता है, वह ईर्यासमितिपूर्वक चलता है। वाहन चालक भी सुरक्षा हेतु गड्ढे, पत्थर आदि से बचकर तो चलता है, पर उसकी तेज रफ्तार में छोटे प्राणियों की सुरक्षा कहाँ संभव है? खैर, मैं कह रहा था, चलने की क्रिया में ‘तन्मयता’ और ‘तत्प्रधानता’ कितने गहन शब्द

हैं। इसी के साथ ही कहा है कि उपयोगपूर्वक चले। ‘जयं चरे’ की परिभाषा को ही स्पष्ट करने के लिए कहा गया है-

**दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया।।**

-दशवैकालिक सूत्र 5/1/14

अर्थात् दबदब करता हुआ न चले, बात करता हुआ, हँसता हुआ न चले। यह सभ्यता की दृष्टि से भी उचित नहीं है, क्योंकि इन स्थितियों में ईर्या का पालन नहीं हो सकेगा। चलने की क्रिया दुर्योधन ने भी की थी। महल का भाग ही ऐसा था कि पानी नहीं होने पर पानी का आभास होने से उसने धोती ऊँची कर ली थी और जिस भाग में पानी था वहाँ ज्ञान नहीं हो पाया, उसने धोती ऊँची नहीं की, यद्यपि वैसा ज्ञात नहीं होने से हुआ था। आज भी इस प्रकार के चमकदार पत्थर होते हैं कि यदि उन पर पानी गिरा हो तो सहसा नजर नहीं आता। अस्तु, दुर्योधन की इस क्रिया पर द्रौपदी को हँसी आ गई थी और हँसी के साथ ही उसने कुछ शब्द भी उच्चरित कर दिए। यह था चलने की असावधानी का परिणाम।

शेरशाह सूरी बादशाह का पुत्र था, जिसे बादशाह ने युवराज पद दे दिया था। एक दिन युवराज की सवारी निकली अर्थात् वह भी गमन क्रिया कर रहा था, चलने में ध्यान नहीं था। वह इधर-उधर नजर डालता चल रहा था। मार्ग में एक पान की दुकान आई। वह मोदी की दुकान थी। मोदी की एक सुंदर कन्या दुकान पर खड़ी थी। उस रूपसी पर युवराज की निगाहें टिकीं और युवराज ने पानदानी से दो बीड़े उठाकर उस कन्या पर फेंक दिए। कन्या कुछ समझ नहीं पाई, सकुचा गई। मोदी इस हरकत को देखकर दुःखी हुआ। सोचने लगा- मैं क्या करूँ? ये युवराज हैं, मैं इनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। पर हाँ, मैं बादशाह सलामत से न्याय की अपील कर सकता हूँ। उसकी अपील पर बादशाह ने सुनवाई की। एक दिन भरे दरबार में राजकुमार को कटघरे में खड़ा किया गया। राजकुमार नीची निगाहें किए खड़ा था। मुँह

उठाने का साहस भी नहीं रहा था। इतने में बादशाह की गंभीर गर्जना गूँजी- 'हमारे पास एक फरियाद आई है कि तुमने मोदी की कन्या पर पान के बीड़े फेंके हैं।' युवराज ने कहा- 'अब्बाजान, पर मैंने किसी बुरी भावना से नहीं फेंके थे।' इतना सुनते ही बादशाह गरजा- 'बुरी निगाह से नहीं फेंके, किसी की बहन-बेटी पर इस प्रकार बीड़े फेंकना क्या उचित है? बुलाओ अपनी बेगम को।' बेगम को बुलाया गया। उस जमाने में रानियाँ मुँह ढँके रहती थीं। कोई उनका मुँह नहीं देख सकता था। बादशाह ने कहा- 'तुम बेगम का बुरका हटाओ।' (मुँह उद्घाटित करना एक प्रकार से उसका तिरस्कार था) राजकुमार ने बुरका उठाया। बादशाह ने मोदी को दो बीड़े देकर कहा- 'इन्हें बेगम के मुँह पर फेंक दो।' मोदी ने बीड़े हाथ में लिए और उनके मन में विचार चलने लगे कि मैं युवरानी पर बीड़े फेंकूँ, नहीं, नहीं! उसका विवेक काम कर गया, उसने वे बीड़े उसके चरणों पर रख दिए और विनम्रतापूर्वक कहा- 'बादशाह सलामत, मैं जानता हूँ कि आप पूरे राज्य की बहन-बेटी को अपनी बहन-बेटी समझते हैं, उनकी इज्जत-आबरू का खयाल रखते हैं। मैं तो सिर्फ युवराज के अपराध को दंडित करने की भावना से आया हूँ, पर यहाँ स्वयं अपराध करने के लिए नहीं। यदि मैंने भी युवरानी पर बीड़े फेंके तो मैं स्वयं अपराधी साबित हो जाऊँगा।' बादशाह तख्त से उठे और मोदी को गले लगा लिया। ऐसे प्रसंग पर विरले व्यक्तियों में ही विवेक जग पाता है। इसलिए भगवान ने 'जयं चरे' कहा। इन्द्रियों के विषय में ध्यान नहीं देते हुए गमन क्रिया में ही ध्यान रहे तो दुर्घटना टल सकती है। मूल बात यह है कि यदि युवराज सिर्फ चलने में उपयोग रखता तो वैसा घटनाक्रम ही नहीं बनता।

उठ जाग रे चेतन, निंदिया उड़ा लें मोह राग की....!

यह मोह कहाँ से पैदा हुआ? इन्द्रिय विषयों से लगाव जुड़ने पर हमारे भीतर मोहभाव-रूप संतान पैदा होती है। वह पदार्थ से आकर्षित होती है और उस मोह

का पट धीरे-धीरे अपना नशा दिखाता है। शराब पीते समय तो नशा नहीं आता, पर पीने के बाद जब व्यक्ति लहरे लेने लगता है तब मालूम होता है कि उसका क्या दुष्प्रभाव होता है। मोह की मादकता भी सम्मोहित करती है। व्यक्ति भान भूल जाता है। इसीलिए प्रभु ने कहा है- 'चलने की एक क्रिया द्वारा भी बंध हो जाता है, भगवान से दूरी बढ़ जाती है। अतः यदि तुमने संसार से ऊपर उठने हेतु कमर कस ली है, तो सजग बन जाओ।' व्यक्ति तर्क करता है कि पूरी सड़क पर जीव बिछे हैं, क्या फर्क पड़ता है, कैसे भी चलें? पर भाई, जीव बिछे हैं या नहीं, इससे फर्क नहीं पड़ता, पर इतनी-सी भावना से तुम्हारे भीतर फर्क पड़ जाएगा। जीव मरे या नहीं, पर तुम्हारी आत्मा का तो मरण हो ही जाएगा और वह हिंसा सामान्य नहीं होगी। जब मन में यह भाव होता है कि क्या फर्क पड़ता है और इस प्रकार प्रमाद किया जाता है तब आत्मा की हिंसा तो हो ही जाती है, आत्मभावों की मृत्यु भी हो जाती है। यदि विवेक रखकर यतनापूर्वक चलें तो उस स्थिति में किसी प्राणी का वध-अतिपात हो भी जाए तो वहाँ भाव-हिंसा नहीं होने से पापकर्म का बंध नहीं होगा। यदि देखकर यतनापूर्वक नहीं चल रहे हैं तो चाहे हिंसा नहीं भी हुई, जीव की विराधना नहीं भी हुई, फिर भी प्रमाद के कारण कर्मबंध, पापकर्म का बंध होगा। आप कहेंगे यह तो उल्टी बात हो गई। बात उल्टी नहीं सीधी है, यतना में सजग अवस्था है और अयतना में जड़ता है। जड़ता में जीने वाले में 'आत्मवत् सर्वभूनेषु' की भावना नहीं रहती। अतः यह क्रिया भावरूप-हिंसा होकर पापकर्म का बंध कराने वाली हो जाती है। चलने की क्रिया एक है, परंतु यतनापूर्वक वह नहीं करने से हमें परमात्मा से दूर कर देती है। चलने की क्रिया से ही साधक परमात्मा से दूर हो जाता है और उसी से पास भी हो सकता है। यदि व्यक्ति सावधानी बरते, वह साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका कोई भी हो, तो परमात्मा से दूरी समाप्त कर सकता है। बहनों को घर में अनेक प्रकार के कार्य करने पड़ते हैं। वे रसोई बनाती हैं, उन्हें आग भी

जलानी पड़ती है अतः आग जलाने से पहले वे चूल्हे की पलेवणा सम्यग् प्रकार से निरीक्षण कर लें, जहाँ बर्तन आदि रखे हैं, वहाँ पर देख लें। आजकल तो गैस है, जीव कहाँ होंगे? किंतु गैस के चूल्हे को भी प्रातःकाल खोलकर देखें तो ज्ञात होगा कि छिद्रों में कंसारी आदि कितने ही जीव प्रविष्ट हो जाते हैं। बिना देखे जलाने पर उन जीवों का क्या दशा बनती होगी, समझने की बात है। एक बार संत गोचरी में आचार ले आए। उसे लाकर देखा गया तो उसमें सफेद लट्टे निकलीं। कभी-कभी चावल में भी ऐसा प्रसंग आता है। चावल में दूध या पानी डालकर देखा जा सकता है। कभी-कभी दलिया-थुली, जो कई दिनों की हो जाती है, उनमें भी लट्टे निकल आती हैं। हम साधक हैं, गाँव-गाँव घूमते हैं। कई बार भोजन का प्रतिलेखन करते हुए इस बात की अनुभूति होती है कि खाद्य सामग्री में त्रस-जीवों के मृत कलेवर होते हैं। साधु गृहस्थों के घरों से आहार ग्रहण करते समय तो ध्यान रखें ही फिर स्थान पर आकर भी उसकी पलेवणा करें। एक बार खीर आई, उसमें कुछ काला-काला दिखा। किसी ने कहा इलायची है, परंतु जब गौर से देखा गया तो लाल चींटियाँ दिखाई दीं।

अब सोचें कि उस थोड़ी-सी खीर में इतनी-सारी चींटियों के कलेवर क्या दर्शाते हैं? अयतना, अविवेक। इसीलिए आहार चौड़े पात्र में करें ताकि कभी कम रोशनी भी हो तो भी वह साफ-साफ नजर आ जाए। आज बहनें जल्दी-जल्दी में काम करती हैं। विवेक का उपयोग कम रहता है, यतना नहीं रह पाती है, जो रहनी चाहिए, क्योंकि यतना करने से वर्तमान जीवन की सुरक्षा होती है। यदि यतनापूर्वक चल रहे हैं तो ऊबड़-खाबड़, कंकरीले-पथरीले, कंटकाकीर्ण मार्ग पर, यदि कोई खड्डे या पत्थर आदि आएँगे तो उनसे बचेंगे और ठोकर भी नहीं खाएँगे। इस प्रकार कठिन मार्ग पर भी हम सुरक्षित रह सकते हैं, बशर्ते कि हमने चलने की विधि सीख ली हो।

गुरु शिष्य से कहते हैं- 'जयं चरे'। कवि भी संकेत कर रहा है कि इस क्रिया से तुम परमात्मा के

सन्निकट पहुँच जाओगे। विपाक में कर्मबंध होता है, पर यदि सही क्रिया अपना ली गई तो बंध रुक जाएगा और कर्मों की श्रृंखला टूट जाएगी। संत जब चलकर आते हैं तो सुख-साता की पृच्छा की जाती है अर्थात् चलने से आपकी आत्मा की साता में तो बाधा नहीं पहुँची और यदि उस परीषह पर विजय प्राप्त हो गई, चलने की सही विधि अपना ली गई तो आत्मा सुख-शांति की सच्ची अधिकारिणी बन जाएगी।

-भाद्रपद कृष्णा 2, दिनांक : 30-08-1996

साभार- रामउवाच-2 (यतना की महिमा) श्रमणीपासक

“

प्रभु महावीर के पास भाई पहुँचे- भगवन्! हम सक्षम नहीं हैं, साधु जीवन अंगीकार कर सकें इतनी हम में दृढ़ता नहीं है। प्रभु ने कहा- कोई बात नहीं, दूसरा मार्ग भी है। पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत भी हैं, अपनी क्षमता को तोल कर आगे बढ़ो। अपने मन को, वचन को, काया को तोलो और फिर कोई व्रत स्वीकार करो। देखा-देखी करने की जरूरत नहीं, परन्तु ली गई प्रतिज्ञा पर अटल रहना आवश्यक है। ऐसी कोई प्रतिज्ञा हम किसी दूसरे के लिए नहीं, आत्मकल्याण के भाव से स्वीकार करते हैं। आत्मकल्याण की बात पहले है, अन्य बातें गौण हैं। आवश्यकता इस बात की है कि त्याग के प्रति बहुमान बना रहे। स्थानांग सूत्र में कहा गया है- सिंह की तरह साधु जीवन स्वीकार किया है तो उसी तरह पार पहुँचाएं। यह कसौटी है वैराग्य भावना की, इसी के धरातल पर साधु जीवन सुरक्षित रह सकता है। नहीं तो स्वयं का जीवन तो डुबाते ही हैं, दूसरों को भी डुबाते हैं। प्रभु महावीर की संस्कृति को सुरक्षित रखें, यह साधुचर्या की प्रथम शर्त है। प्रभु महावीर का यह बेड़ा (जहाज) पत्थर का नहीं, लकड़ी का है। यह बेड़ा तिराने वाला है, यह समझना भी आवश्यक है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

‘ऐसी वाणी बोलिए’ धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। ‘मित वचन’ पूर्ण होने के पश्चात् ‘मधुर वचन’ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय की व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

ज्ञान सार

ऐसी वाणी बोलिए मधुर वचन

15-16 नवंबर 2023 अंक से आगे....

6 अभद्र शब्दों का प्रयोग करना

- ★ “तुमं तुमं ति अमणुण्णं, सव्वसो तं ण वत्तए”
‘तू-तू जैसे अभद्र शब्द कभी नहीं बोलने चाहिए।’ (श्री सूत्रकृतांग सूत्र (1/9/27))
- ★ जिन Words (शब्दों) को हम Choose (चूज) और Use (यूज) करते हैं, उनसे हमारे व्यक्तित्व की, हमारी संस्कारों की पहचान हो जाती है।
- ★ पहले के समय में तो ऊँचे घराने के लोग प्रायः ऊँचे (श्रेष्ठ) शब्दों का ही प्रयोग करते थे, परंतु आज ऐसा देखा जाता है कि ऊँचे घराने के लोग भी बिना किसी संकोच के निम्न शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं।
- (A) लोग गुस्से में आकर बच्चों को गधा, बेवकूफ, बदतमीज, नालायक, गुंडा, बदमाश, झूठा, शैतान, साला आदि-आदि कह देते हैं अथवा इससे भी ओछे शब्दों (गाली-गलौज) का प्रयोग कर लेते हैं, जिन्हें यहाँ लिख पाना मुश्किल है।

Note 1 - ऐसा कहते हैं कि बच्चों को जैसा बनाना हो, उनके लिए वैसे शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। अतः हमें अपने बच्चे को अच्छे शब्दों से ही पुकारना चाहिए।

2 - यदि माता-पिता खुद ही अनुशासित नहीं रहेंगे, तो बच्चे को अनुशासन कैसे सिखा पाएँगे।

Family 1

दादी किसी को कोई बात बता रही थी, बात में कुछ हेर-फेर लगी तो पास में बैठा पोता (7 साल का) फट से बोला- ‘दादी एक नंबर की झूठी हैं।’ उसकी मम्मी ने शर्मिंदा होकर धीरे से उसे कहा- ‘बेटा, दादी को ऐसे नहीं बोलते। वो आपसे कितनी बड़ी हैं।’ उसने चिल्लाकर कहा- दादी भी मेरे को कितनी बार बोलती है- ‘तू एक नंबर का झूठा है। जब वो बोल सकती है तो मैं क्यों नहीं बोल सकता?’

Note - बच्चों को सही गलत की पहचान नहीं होती। उन्हें तो बस इतना पता होता है कि जो घर वाले कर रहे हैं, वो मुझे करना है। बच्चों में जानने की, सीखने की तीव्र चाह होती है, अतः जो सीन उनके सामने आता है वे उसे सीख जाते हैं।

Family 2

एक परिवार में लगभग सभी रेस्पेक्टफुल शब्दों का प्रयोग करते थे। पधारो, विराजो आदि। उस घर में लगभग 2½ साल की बच्ची जिसे बोलना शुरू किए लगभग 25 दिन हुए थे, वह भी घर वालों को काँपी करती। खाने के समय में जब किसी के लिए थाली परोसी जाती, तब वह उस व्यक्ति के सामने जाकर कहती - ‘पधालो, थाना पलोच दिया।’

- (B) गुस्से में आकर कहना : हाथ-पैर तोड़ दूँगा, जबान खींच लूँगा। जान से मार दूँगा, हड्डी-पसली तोड़ दूँगा। बुरी तरह से पीट दूँगा... आदि।
- (C) किसी के शरीर में कोई कमी हो, उसे उस नाम से पुकारना- 'ऐ मोटे, ऐ काणे, ऐ काले, ऐ भैंसे, ऐ बौने...आदि।

Note - "तहेव काणं 'काणे' ति, पंडगं पंडगे ति वा।

वाहियं वा वि 'रोगि' ति, तेणं 'चोरे' ति नो वए॥ 12 ॥"

कठोर भाषा की तरह ही काणे को काणा अथवा हिंजडे को हिंजड़ा तथा रोगी को रोगी नहीं कहें। ये वचन सत्य होने पर भी पीड़ाकारी होने से वर्जनीय हैं।

- (D) इसी प्रकार किसी को नीच, दुराचारी, कंगाल, भाग्यहीन, बददिमाग (बिना दिमाग वाले) आदि कहकर टॉर्चर नहीं करना।

Note - कई बार हमारे शब्द हम पर ही असर कर जाते हैं।

एक परिवार में एक जेठानी अपनी देवरानी को कुछ भी गलती होने पर अथवा गुस्सा आने पर कहती- 'बददिमाग है', बिना दिमाग वाली औरत। रोटी भी बेलना नहीं आता... उनका ये डायलोग फिक्स था। देवरानी के दो लड़कियाँ थी और तीसरी लड़की होने वाली थी। इधर जेठानी के लड़का होने वाला था (दोनों को डॉक्टर ने पहले बता दिया किसको लड़का, किसको लड़की होगी)। इस पर जेठानी ने पुनः टॉर्चर करना शुरू किया... 'दो-दो लड़कियाँ हैं, तीसरी भी लड़की है। फिर भी Abortion (गर्भपात) नहीं कराते, इसे कहते हैं- 'बददिमाग। पढ़े-लिखे गँवार'... वो बोलती गई। देवरानी ने उस समय बहस करना उचित नहीं समझा, अतः वो पीहर चली गई। अगले दिन उसके Husband का फोन आया और वो बोले- 'भाभीजी को अचानक Admit करके Operate करना पड़ा। उसकी Wife ने आश्चर्य से पूछा - क्यों, क्या हुआ? कल तो अच्छी थी। उन्होंने बताया कि उनके पेट में जो बच्चा था, उसकी Body तो ठीक थी, दिमाग का हिस्सा बना ही नहीं। उसका पाँइजन भी फैल सकता था, इसलिए Abortion करना पड़ा।' (जो दूसरों को बोला गया वह खुद पर ही पड़ गया)

"जहा कडे कम्मे, तहा सि भारे"

जैसे किया हुआ कर्म, वैसा ही उसका भोग।

(सूत्रकृतांग सूत्र 1/5/1/26)

* शब्दों का विवेक -

पूर्व के समय में राजा-रानी, श्रावक-श्राविका, गृहस्थादि एक-दूसरे को सम्मानसूचक शब्दों के द्वारा पुकारते थे-

रानी (राजा को) - हे स्वामिन्!

राजा (रानी को) - हे देवानुप्रिय!

माता-पिता को - हे माता-पिता!

पुत्र को - हे पुत्र! हे नंद! हे लाल!

सेवकों को - (कौटुम्बिक पुरुष) हे देवानुप्रियो!

- * आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान में आचार्य श्री रामेश छोटे बच्चे को भी 'आप' कहकर पुकारते हैं।
- * वर्तमान में विनम्र श्रावक-श्राविकाओं द्वारा निम्न सम्मानसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए देखा जाता है :- जय जिनेन्द्र, प्रणाम, नमस्ते, पधारिए, आपका स्वागत है, आपके साता है...आदि।
- * उपरोक्त बिन्दुओं को समझकर संस्कारवान श्रावक छोटे-बड़े, गुणी-अवगुणी सबके साथ शालीन और सभ्य शब्दों से बात करें।

"Treat everybody with politeness even those who are rude to you for, remember that you show courtesy to others not because they are gentleman but because you are one."

-क्रमशः श्रमणोपासक



श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

एकादश अध्यायन : बहुस्सुयपुज्जं

15-16 अक्टूबर 2023 अंक से आगे....

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण .- तीर्थंकर भगवान, सिद्ध भगवान, आचार्य, समस्त पाँच महाव्रतधारी साधु, जिनका श्रुत (शिक्षा) चारों ओर फैला हुआ है और विशाल है, ऐसे बहुश्रुत की पूजा भावों से अर्थात् गुणगान, बहुमान, आराधना आदि से होती है। प्रस्तुत अध्ययन में भगवान महावीर स्वामी ने सर्वप्रथम बहुश्रुत के आचार का सर्वांगीण परिचय दिया है।

प्रश्न 20. 'कोहा' शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर 'कोहा' अर्थात् क्रोध। क्रोध के दो रूप हैं-

1. खिन्नचित्ते - उदास होना, चुपचाप बैठना आंतरिक क्रोध का संकेत है।
2. दित्तचित्ते - जोर-जोर से बोलना।

प्रश्न 21. कैसे पहचानें कि क्रोध आया?

उत्तर जब शब्दों में उतावलापन एवं तेजी आ जाए तब कहीं न कहीं भय और क्रोध कारण होते हैं। अगर ये दोनों कम हैं तो क्रोध जल्दी शांत हो जाता है या क्रोध की ताकत कम हो जाती है।

प्रश्न 22. क्रोध के दुष्परिणाम क्या हैं?

उत्तर क्रोध से गर्मी आती है, साधक की थकान बढ़ती है। क्रोध से शारीरिक रोग बढ़ते हैं एवं खून जलता है। क्रोधी व्यक्ति ज्ञान को ग्रहण नहीं कर पाता है। क्रोधी व्यक्ति किसी का भी प्रिय पात्र नहीं बनता।

प्रश्न 23. 'पमाएणं' शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर 'पमाएणं' अर्थात् प्रमाद- आत्मभावों का विस्मरण ही जीवों को प्रमादी बनाता है। इसके मुख्य पाँच कारण हैं-

1. मद्य, 2. विषय, 3. कषाय, 4. निद्रा, 5. विकथा।

इससे विपरीत अप्रमत्तता उच्च कोटि की साधना है।

प्रश्न 24. 'रोगेणा' शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर 'रोगेणा' अर्थात् रोग। टीका में रोग उत्पन्न होने के दो विशेष कारण बताए गए हैं-

1. अति आहार के कारण रोग उत्पन्न होता है।
2. अपथ्य (अहितकर) आहार के कारण रोग उत्पन्न होता है।

प्रश्न 25. 'आलस्सएणं' शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर 'आलस्सएणं' अर्थात् आलस्य - उत्साहहीनता। यों तो आलस्य प्रमाद के अंतर्गत आता है, किंतु यहाँ प्रमाद का अर्थ आत्मतत्त्व का भान न होना है।

प्रश्न 26. किन-किन कारणों से साधक शिक्षा को ग्रहण कर पाता है?

उत्तर इसके संबंध में सर्वज्ञ ने इस प्रकार फरमाया है-

अह अट्टहिं ठाणेहिं, सिक्खासीले ति वुच्चई।
अहस्सिये सया दंते, न य मम्म-मुदाहरे।।४।।
नासीले ण विसीले, न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीले ति वुच्चई।।५।।

भावार्थ- इन आठ स्थानों में व्यक्ति को शिक्षाशील कहा जाता है-

1. जो अधिक हँसी-मजाक न करे।
2. जो अधिक दांत (इन्द्रियों) और मन को दमन (वश में) करे।
3. जो दूसरों के मर्म का उद्घाटन न करे।
4. जो कुशील अर्थात् चारित्र से हीन न हो।
5. जो विशील अर्थात् जो व्रत एवं चारित्र में दोषों (अतिचारों) से कलुषित न हो।
6. जो रसों में अति लोलुप न हो।
7. जो क्रोध न करता हो।
8. जो सत्य में अनुरक्त हो।

सिक्खासीले - शिक्षा में रुचि रखने वाला या शिक्षा का अभ्यास करने वाला 'शिक्षाशील' कहलाता है।

सच्चरए - सत्यरत, सत्य में रत या संयम में रहने वाला।

अकोहणे - अक्रोधन, अपराधी एवं निरपराधी पर भी क्रोध न करने वाला।

-क्रमशः श्रमणोपासक

बाबूजी घर के रहे न घाट के

-ओनम जारोली, उदयपुर

कोलकाता के अमोलक चटर्जी जिन्हें लोग प्यार से बाबू जी पुकारते थे, वे विवाह समारोह में जाने के लिए मुम्बई से जयपुर के लिए रवाना हुए। रास्ते में अहमदाबाद स्टेशन पर गाड़ी पहुँची तो डिब्बे में भारी भीड़ हो गई। यात्रियों से खचाखच भरे डिब्बे में पाँव रखने की जगह नहीं थी और आधी रात का समय हो रहा था। बाबूजी के मन में एक उपाय आया। उन्होंने अपने बैग से एक प्लास्टिक का साँप निकाल कर उसमें चाबी भरी और डिब्बे में धीरे से छोड़कर जोर-जोर से चिल्लाने लगे- डिब्बे में साँप, डिब्बे में साँप, डिब्बे में साँप घुस आया। आधी रात को उस डिब्बे में अफरातफरी मच गई। मुसाफिर ईधर-उधर भागने लगे और देखते ही देखते डिब्बा खाली हो गया। बस, बाबू जी को मन चाही मुराद

मिल गई और वे खाली सीट पर चादर ओढ़कर सो गए।

सुबह-सुबह ट्रेन के उस डिब्बे के पास से चाय वाला जोर-जोर से आवाज देता हुआ निकला- चाय वाला, चाय वाला, गरमागरम चा ले लो। बाबू जी उठे और चाय वाले को आवाज दी और एक चाय लेकर उससे पूछा- कौन-सा स्टेशन आया है भाई? चाय वाला- अहमदाबाद। अब बाबू जी का माथा चकराया। बाबू जी ने डिब्बे से उतरकर स्टेशन के स्टाफ से पूछा तो उसने बताया कि रात को इस डिब्बे में साँप घुस गया था। इसलिए सुरक्षा कारणों से इस डिब्बे को हटाकर शेष गाड़ी को आगे के लिए रवाना कर दिया गया। बाबू जी की होशियारी धरी रह गई। इसीलिए कहते हैं असत्य का परिणाम असत्य और सत्य सदैव सुखदायी होता है।

श्रमणोपासक

नैरयिक व परमाधार्मिक

15-16 नवंबर 2023 अंक से आगे....

प्र. 20 परमाधार्मिक देवता नैरयिक को दुःख क्यों देते हैं?

उत्तर जैसे निर्दयी मनुष्य अपने शिकार के व्यसन का पोषण करने के लिए जंगलों में पशु, पक्षियों को गोली, छर्रे, गुलेल आदि मारते हैं और वे जीव दुःखी होकर तड़पते हैं तथा शिकारी आनंद मनाते हैं। कितने ही निर्दयी पुरुष पाडे, भेड़, तीतर, मुर्गी आदि को आपस में लड़ाकर सुख मानते हैं। इसी प्रकार परमाधार्मिक नैरयिकों को दुःखी देखकर ही आनन्दित होते हैं।

प्र. 21 ऐसा करने से परमाधार्मिक देवों को पाप होता है या नहीं?

उत्तर हाँ, पाप जरूर लगता है और इस पाप के करने से नीच योनियों में बकरे, मुर्गे आदि होकर अधूरे आयुष्य से ही मरते हैं।

प्र. 22 एक जाति के देवता कितने हैं?

उत्तर असंख्येय।

प्र. 23 नैरयिकों का आयुष्य कितना होता है?

उत्तर जघन्य 10 हजार वर्ष और उत्कृष्ट 33 सागरोपम।

प्र. 24 नैरयिकों का शरीर कैसा होता है?

उत्तर अत्यंत कुरूप।

प्र. 25 नैरयिक की अवगाहना कितनी होती है?

उत्तर प्रत्येक पृथ्वी में अलग-अलग है। सबसे कम पहली पृथ्वी में (7^{3/4} धनुष 6 अंगुल) और सबसे ज्यादा सातवीं पृथ्वी में (500 धनुष)।

प्र. 26 नैरयिक अपनी अवगाहना कम-ज्यादा कर सकता है या नहीं?

उत्तर ज्यादा से ज्यादा अपनी अवगाहना का दुगुना कर सकता है।

प्र. 27 नरक में प्रकाश होता है या नहीं?

उत्तर नहीं, वहाँ हमेशा अंधकार ही रहता है।

प्र. 28 अंधकार में वे एक-दूसरे को कैसे देखते हैं?

उत्तर अवधिज्ञान या विभंगज्ञान से।

प्र. 29 अवधिज्ञान से कहाँ तक देख सकता है?

उत्तर कम से कम आधा कोस (सातवीं पृथ्वी वाले)। ज्यादा से ज्यादा 4 कोस (पहली पृथ्वी वाले) देख सकते हैं।

प्र. 30 नैरयिक के कितनी इन्द्रियाँ होती हैं?

उत्तर पाँच होती हैं।

प्र. 31 हम भी कभी नैरयिक व परमाधार्मिक हुए होंगे?

उत्तर अनंत बार।

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

श्रमणोपासक

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

संस्कार सौरभ

प्रतिबंधों का सामना

15-16 नवम्बर 2023 अंक से आगे....

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंदकँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र्य प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

मनुष्य दूसरों को अपने अनुकूल बनाने के लिए कई बंधनों का निर्माण करता है। चोरों को अनुकूल बनाने के लिए और उनकी चोरी की वृत्ति छुड़ाने के लिए उसने बेड़ियाँ बनाई, जेलखाने बनाए। चंचल घोड़ों, मतवाले हाथियों और बैलों को वश में रखने के लिए उसने उनके मुख या पैरों पर रस्सी के बंधन डाले। रेलगाड़ी, मोटर या साईकिल आदि वाहनों को वश में करने के लिए उसने सबके ब्रेक लगाए। इसी तरह स्त्रियों को अपने अधिकार में रखने के लिए पुरुषों ने भाँति-भाँति के प्रतिबंध लगा दिए, पर इन सब बंधनों के होते हुए भी वहाँ गड़बड़ियाँ हो जाती हैं। कभी-कभी दुर्घटनाएँ भी हो जाती हैं। प्रेमरूपी रस्सी का बंधन विचित्र ही है। इस बंधन में गड़बड़ी होनी असंभव-सी है।

'दूरस्थोऽपि न दूरस्थो यो यस्य मनसि स्थितः'
जो जिसके मन में बसा हुआ है वह दूर होने पर भी दूर नहीं है। इसी प्रकार की उक्ति एक कवि ने कही है-

**जल में बसे कुमुदिनी, वन्दा बसे आकाश।
जो जाही के मन बसे, सो ताही के पास॥**

आनंदकुमारी जी पर भी बंधन लगाया गया। घर वालों ने सोचा कि इस बंधन से उनका दिमाग ठिकाने आ जाएगा। पर साहसी व्यक्ति के सामने इन बाह्य बंधनों की क्या गिनती है? आप जब संसार की मोहमाया के बंधन को तोड़ने के लिए तुल गए हैं तो इन कृत्रिम

बंधनों से क्या हो सकता था? किसी के मन पर कौन ताला लगा सकता है? वैराग्यमूर्ति जम्बुकुमार को कितने बंधनों के पाश में जकड़ दिया गया था, पर वह ऐसा साहसी निकला कि एक ही रात्रि में सारे बंधनों को चीरकर सूर्य के समान प्रकट हो गया और प्रभुचरणों में जा बैठा।

आनंदकुमारी जी में भी बंधनों को तोड़ने की असाधारण शक्ति थी। उनके मन में वैराग्य की सतत् ज्वाला जल रही थी। महासती जी की प्रेम भरी छवि उनके हृदय में विराजमान थी। उस हृदयस्थ मूर्ति को हटाने की किसमें ताकत थी?

कई दिन हो गए हैं, गुरुणी जी के दर्शन नहीं हुए। मन में बड़ी बेचैनी हो रही है। क्या ऐसे प्रतिबंधों को मैं तोड़ नहीं सकती? महासती राजीमती ने इतने-इतने बंधनों को तोड़ दिया तो मैं क्या इस जरा से बंधन को नहीं तोड़ सकती? उस सिंहनी को माया के पिंजरे में डालने का कितना प्रयत्न किया गया, फिर भी वह तो स्वतंत्र ही रही। मैं इन छोटे से बंधनों में कैसे पड़ी रहूँगी? बात मन में भूलती रही। आपको झटपट एक अच्छी बात सूझ गई। आपने सोचा कि इस समय आधी रात होगी। किसे पता चलेगा? सब नींद में खुराटे ले रहे होंगे। अभी झटपट जाकर सवेरा होने से पहले-पहले महासती जी के दर्शन कर वापस लौट आऊँगी। शौच

जाने का बहाना ठीक रहेगा। पास ही नोहरा है। वहाँ बन्द करने के बाद कोई आता-जाता नहीं है।

उधर से महासती जी के उपाश्रय जाने का सीधा रास्ता है। बस, काम बन जाएगा। अवसर पाकर सबकी आँखें बचाकर आप शौच के लिए लोटा हाथ में लेकर नोहरे में चली गई। वहाँ से उपाश्रय का रास्ता सीधा था। अंधेरी रात्रि थी। भयानक वातावरण था। सर्वत्र शांति छाई हुई थी। ऐसे कठिन समय में आप निर्भय होकर चली गई। यह वीरता के बिना नहीं हो सकता था। वैराग्य का रस पिए बिना इतनी शक्ति नहीं आ सकती थी।

समय बड़ा विकट था, पर वे वीरांगना एवं साहसी थी। वैराग्य के रस से उनका हृदय लबालब भरा हुआ था। जो कष्टों से घबराकर वापिस लौट गया, उसका भाग्य लौट गया। प्रभु का मार्ग शूरवीरों के लिए है, कायरों के लिए नहीं।

**प्रभु नो मारग छ शूरा नो।
नहि कायर नो काम जोने॥**

शूरवीर असंभव को भी सम्भव कर दिखाता है। प्रकृति का उपद्रव अपनी पूरी शक्ति से प्रतिरोध कर रहा था, परंतु प्रतिरोधों, प्रतिबंधों को कुचलकर आगे बढ़ना ही वीरता की मौलिक परिभाषा है। वीर पुरुष अपने इष्ट के दर्शन के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं। आनंदकुमारी जी के मन में गुरुणी जी के दर्शन की मंगलमय कामना थी। आप सारे संकटों से लड़कर गुरुणी जी के दर्शन के लिए आगे बढ़ीं। संत कबीर की वाणी उनका मार्गदर्शन कर रही है-

**लम्बा मारग दूर घर, विकट पंथ बहुमार।
कहै कबीर कस पाइये, दुर्लभ गुरु-दीदार॥**

आप उपाश्रय पहुँची। द्वार खटखटाया। एक साध्वीजी की निद्रा भंग हुई। उन्होंने पूछा- “कौन? इस समय आधी रात को आने वाला कौन है?”

आनंदकुमारी जी- “और कोई नहीं, मैं ही

आपकी शिष्या हूँ ‘आनंद’।”

महासती जी- “इस समय क्यों?”

आनंदकुमारी जी- “कई दिन हो गए गुरुणी जी म.सा. के दर्शन की अंतराय लगी हुई थी। मन में व्याकुलता छाई हुई थी। आपने मुझ पर प्रेम का ऐसा जादू उड़ला है कि वह मेरे हृदय में अपना अडोल आसन जमाए हुए है। मेरे घर वालों ने प्रतिबंध लगा दिया था और मेरी आत्मा इस प्रतिबंध को तोड़ने के लिए तैयार हो गई।”

साध्वी जी ने दरवाजा खोला और आनंदकुमारी जी महासती जी के दर्शन कर आनंदविभोर हो उठीं- “धन्य गुरुदेवता! मानो कई दिन से प्यासे को आज पानी मिला हो। सवेरा होने वाला है, अब जल्दी से चलना चाहिए। देरी से पहुँचूँगी तो घर वालों के मन में संदेह पैदा हो जाएगा, जिससे फिर कभी आने नहीं देंगे।” ऐसा विचार कर महासती जी से मांगलिक सुनकर आप झटपट जिस नोहरे से होकर आई थी, वहीं से वापिस लौट आई। लोटा नोहरे में रखा था, जिसे उठाकर घर में प्रवेश किया। घर के सभी लोग अपने-अपने काम में लगे थे। किसी को संदेह जैसी बात पैदा ही नहीं हुई।

इस तरह कई दिन बीत गए। आपका यह क्रम चलता रहा। बस आधी रात होती और आप लोटा उठाकर चल देती। निद्रा भी मानो उस समय अपने पीहर चली गई थी। घर वाले सोच रहे थे कि इस बार इस पर कड़ा प्रतिबंध लगाया गया है। अब वैराग्य का पता लग जाएगा। साध्वियों का दर्शन नहीं होने से थोड़े ही दिनों में वैराग्य रफूचककर हो जाएगा, लेकिन आनंदकुमारी जी अपने अपूर्व आनंद का विलक्षण अनुभव कर रही थीं। आप दबने वाली शक्ति नहीं थीं। आपने प्रतिबंध रूपी ताले की कुंजी खोज ली थी।

आप जानना चाहते होंगे कि आनंदकुमारी जी ने यह चाल क्यों चली? इसका समाधान मैं अपनी ओर से

दे देता हूँ। बात यह थी कि आनंदकुमारी जी पर दिन-रात कड़ा पहरा रखा जाता था, पर किसी के मन पर पहरा थोड़े ही लग सकता है? कई दिनों से महासती जी के दर्शन किए बिना आपको पूरी निद्रा नहीं आ रही थी और भोजन भी रुचिकर नहीं लगता था। ऐसी दशा में इस प्रतिबंध को तोड़े बिना कोई चारा नहीं था।

घर वालों ने जब यह देख लिया कि यह वैराग्य के उच्चमार्ग पर चलने वाली है और उस योग्य भी है, तब इनका मार्ग रोके रखना उचित नहीं था। इस अनौचित्य का परिहार करने के लिए ही आपने यह कदम उठाया था। उसके परिणामों को भोगने के लिए भी आप तैयार थी। क्या किसी के वैराग्य की तेज धारा को रोका जा सकता है? गेंद को जितना जोर से नीचे गिराया जाता है वह उतनी ही ऊँची उठती है। ऐसी ही आनंदकुमारी जी की वृत्ति थी। उन्हें ज्यों-ज्यों रोका जा रहा था, त्यों-त्यों उनके वैराग्य में तीव्रता आ रही थी।

एक दिन रात्रि के समय सतियों के यहाँ जाने की घटना का पता आपके पीहर वालों को लग गया। अचानक ही किसी की नींद खुल गई। आपको इधर-उधर देखने पर भी न पाया तो परिवार वाले नोहरे में गए, पर वहाँ भी कोई नहीं था, केवल लोटा पड़ा था।

अब आपके ऊपर उपालम्भों एवं डाँट-फटकार की बोछारें होने लगीं। सभी कहने लगे कि यह काम ठीक नहीं है। इस तरह से रात्रि में अकेले कहीं निकल जाना इज्जत के लिए बड़ा खतरनाक है। यह तो ठीक हुआ कि हमें मालूम चल गया नहीं तो कभी कोई अनहोनी हो जाती तो हमारा मुँह काला हो जाता। आइंदा कभी ऐसा मत करना। हम तुम्हें ज्यादा कहना ठीक नहीं समझते, इसलिए इतने में ही समझ जाना।

आप तो प्रारम्भ से ही गंभीर प्रकृति की थीं। आपने अपने घर वालों की बात का उत्तर थोड़े में ही देना ठीक समझते हुए कहा- “आप अपना प्रतिबंध हटा लेते

तो मुझे यह मार्ग अपनाना ही क्यों पड़ता? मैं अब भी हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक कहती हूँ कि आप मुझ पर ऐसे प्रतिबंध न लगाएँ। किसी की सच्ची वैराग्यवृत्ति को दबाया नहीं जा सकता।”

घर वालों ने आपकी बात की कोई सुनाई नहीं की। उन्होंने देखा कि यहाँ से उपाश्रय निकट ही है, इसलिए यह रात को चली जाती है। इसे ससुराल भेज दिया जाए तो वहाँ से साध्वी जी का उपाश्रय बहुत दूर पड़ेगा। वहाँ साध्वी जी को कौन पूछता है? इस तरह कई दिन बाद अपने आप इस झंझट से छुटकारा मिल जाएगा। परंतु भोले माता-पिता को क्या पता था कि वे अपनी पुत्री को जिस लक्ष्य से हटाना चाहते हैं वहीं पहुँचा रहे हैं।

आप अब ससुराल आ गई थी। वहाँ भी आप पर महासती जी के यहाँ जाने-आने पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था। आपको इस प्रतिबन्ध को तोड़ने का यहाँ भी साहस करना पड़ा। उसका कारण वही था जो पहले बता दिया गया है। आपको कहीं भी स्वतन्त्र रूप से जाने-आने नहीं दिया जाता था। आपको यहाँ आए हुए कई दिन हो गए थे। महासती जी के दर्शन के लिए चित्त लालायित था, पर क्या किया जाए? मन में सहसा वीरता की एक लहर उठी, एक प्रबल प्रेरणा जागी कि यदि सदा के लिए इस प्रतिबन्ध का अन्त कर दिया जाए और महासती जी के पास जाकर वहीं जाकर अड्डा जमा लूँ तो। अपना आवश्यक सामान साथ में ले लूँ ताकि फिर किसी का मुँह ताकना न पड़े।

एक बात मन में खटक रही थी। आप इतनी साहसी और निर्भय थी कि इस प्रकार की अनेक अड़चनें आने पर भी कभी कातर नहीं हुईं। यह अड़चन तो उनकी अन्तर्आत्मा से ही उत्पन्न हुई थी और उसका संबंध उनके दूसरे कर्तव्य के साथ था।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी
-क्रमशः श्रमणोपासक

बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल,
व्यावर

बालकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते-करते आज हमारा यह धारावाहिक सामायिक सूत्र के पड़ाव पर आ पहुँचा है। प्रकृति का नियम है कि जिसकी शुरुआत होती है, उसका अंत भी निश्चित है। उसी तरह हो रहा है इस साल का अंत। परंतु आप सभी निश्चिंत रहें, क्योंकि बच्चों को ज्ञान सिखाने का यह क्रम कभी भी खत्म नहीं होगा।

तो आईए, जानते हैं इस समाप्त होते वर्ष के साथ सौरभ की माता जी ने बच्चों को उनके जीवन से क्या बुरी आदतें समाप्त करने को कहा और आते हुए नववर्ष का स्वागत किन अच्छी बातों से करने को कहा।

सौरभ की माता जी- जय जिनेन्द्र बच्चो! सभी बच्चे तिकखुतो का पाठ अच्छे से याद करके आए हैं?
(सभी बच्चे पूरे जोश से हाँ में स्वीकृति देते हैं)

सौरभ- क्या मैं सभी को विधिवत् वंदना करना सीखा सकता हूँ?
(अपनी माता जी की स्वीकृति मिलने पर सौरभ ने पूर्व दिशा की ओर मुँह करके अपने सभी दोस्तों को विधिवत् वंदना करना सिखाया।)

नीलिमा- आंटी! यह विधि सीखकर वंदना करते हुए हमें बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।

पंकज- जी आंटी! नीचे झुकते ही ऐसा लग रहा है जैसे हम एकदम हलके हो गए हैं।

सौरभ की माता जी- बिलकुल बच्चो, आपके ये भाव बताते हैं कि आप सभी बच्चे भावपूर्वक विधिवत् वंदना कर रहे हो। भावपूर्वक वंदना से हमारे मन का सारा अहंकार समाप्त हो जाता है तथा अनंतानंत पुण्य का बंध होता है।

सौरभ- अगला पाठ हम सीखेंगे इच्छाकारण का पाठ, जिसे आलोचना सूत्र भी कहा जाता है।
(सभी साथी/दोस्त सौरभ की ओर आश्चर्य से देखने लगे कि उसे पहले से ही सभी कुछ आता है)

सौरभ की माता जी- बच्चो! यह पाठ हमारे द्वारा दिनभर में जाने-अनजाने में हुई जीवों की हिंसा की क्षमायाचना के लिए किया जाता है। जैसे चलते हुए किसी छोटे जीव का हमारे पैरों के नीचे दब जाना या किसी दोस्त का मखौल बनाते हुए ऐसा कुछ कह देना

कि उसे बुरा लग जाए। दिनभर में हमारे द्वारा किसी भी जीव को मन से, वचन से, काया से कष्ट पहुँचा हो तो उसके लिए इस पाठ द्वारा क्षमा मांगना।

(तीनों बच्चों की आँखें एकटक देखती रह गईं)

नितिन-

आंटी! हमें तो बहुत आश्चर्य हो रहा है कि ऐसा भी कोई पाठ है, जिससे हम दिनभर की गलतियों की माफी मांग सकते हैं।

सौरभ की माता जी- विलकुल बच्चो! जैन धर्म ऐसी ही कई आश्चर्यजनक बातों व सिद्धांतों से भरा हुआ है। आओ सभी मेरे पीछे-पीछे इच्छाकारण का पाठ बोलो।

इरियावहिया सूत्र (आलोचना सूत्र, इच्छाकारण का पाठ)

इच्छाकारणं संदिसह भगवं! इरियावहियं, पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तरस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(हरिभद्रीयावश्यक, पृष्ठ 572)

मूल शब्द	अर्थ	मूल शब्द	अर्थ
भगवं!	- हे भगवन्! हे गुरु महाराज!	उत्तिंग	- कीड़ी नगरा
इच्छाकारणं	- इच्छापूर्वक	पणग	- पाँच रंग की काई (लीलन-फूलन)
संदिसह	- आज्ञा दीजिए (कि मैं)	दग	- कच्चा पानी
इरियावहियं	- ईर्यापथिकी क्रिया का	मट्टी	- सचित मिट्टी
पडिक्कमामि	- प्रतिक्रमण करूँ	मक्कडा संताणा	- मकड़ी के जालों को
इच्छं	- प्रमाण है	संकमणे	- कुचला हो
इरियावहियाए	- मार्ग में चलने से होने वाली	मे	- मैंने
विराहणाए	- विराधना से	एगिंदिया	- एक इन्द्रिय वाले
पडिक्कमिउं	- प्रतिक्रमण करने की	बेइंदिया	- दो इन्द्रिय वाले
इच्छामि	- इच्छा करता हूँ	तेइंदिया	- तीन इन्द्रिय वाले
गमणागमणे	- जाने आने में	चउरिंदिया	- चार इन्द्रिय वाले
पाणक्कमणे	- किसी प्राणी को दबाया हो	पंचिंदिया	- पाँच इन्द्रिय वाले
बीयक्कमणे	- बीज को दबाया हो	जे	- जो
हरियक्कमणे	- वनस्पति को दबाया हो	जीवा	- जीव हैं (उन्हें)
ओसा	- ओस		

विराहिया	- पीड़ित किया हो	ठाणाओ	- एक जगह से
अभिहया	- सम्मुख आते हुए को हना हो	ठाणं	- दूसरी जगह
वत्तिया	- धूल आदि से ढका हो	संकामिया	- रखा हो
लेसिया	- मसला हो	जीवियाओ	- जीवन से
संघाइया	- इकट्ठा किया हो	ववरोविया	- रहित किया हो
संघट्टिया	- छूआ हो	तरस	- उसका
परियाविया	- परिताप (कष्ट) पहुँचाया हो	दुक्कडं	- पाप
किलामिया	- किलामना उपजाई हो,	मि	- मेरे लिए
	मृततुल्य किया हो	मिच्छा	- मिथ्या (निष्फल हो)
उद्विया	- हैरान या भयभीत किया हो		

भातार्थ

शिष्य- हे गुरु महाराज! इच्छापूर्वक आज्ञा दीजिए कि मैं ईर्यापथिकी क्रिया का प्रतिक्रमण करूँ। गुरु की अनुमति पाने पर शिष्य कहता है कि आपकी आज्ञा प्रमाण है। मैं ईर्यापथिकी क्रिया का प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ अर्थात् मार्ग में चलने से हुई विराधना से निवृत्त होना चाहता हूँ। मार्ग में आते-जाते किसी प्राणी को दबाया हो, सचित बीज तथा हरी वनस्पति को कुचला हो, ओस, कीड़ी नगरा, पाँचों वर्ण की काई (लीलन-फूलन), सचित जल, सचित मिट्टी और मकड़ी के जालों को रौंदा (कुचला) हो। मैंने किन्हीं जीवों की हिंसा की हो, जैसे एक इन्द्रिय वाले पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति, दो इन्द्रिय वाले शंख, सीप, गिंडोला आदि, तीन इन्द्रिय वाले कुंथुआ, जूँ, लीख, कीड़ी, खटमल, चींचड़ आदि, चार इन्द्रिय वाले मक्खी, भँवरा, बिच्छू, टिड्डी, पतंगिया आदि, पाँच इन्द्रिय वाले मनुष्य, तिर्यंच जलचर, स्थलचर और खेचर आदि को सन्मुख आते हुए मारा हो, इन्हें धूल आदि से ढँका हो, जमीन पर या आपस में मसला हो, इकट्ठा करके इन्हें दुःख पहुँचाया हो तथा छूकर पीड़ा दी हो, इन्हें क्लेश पहुँचाया हो, मृततुल्य किया हो, हैरान भयभीत किया हो, एक जगह से दूसरी जगह रखा हो, इनका जीवन नष्ट किया हो तो इससे होने वाला पाप मेरे लिए निष्फल हों अर्थात् जानते-अजानते विराधना आदि से कषाय द्वारा मैंने पापकर्म बाँधा हो तो उसके लिए मैं हृदय से पश्चात्ताप करता हूँ, जिससे कि निर्मल परिणाम द्वारा पापकर्म शिथिल हो जाएँ और मुझे उसका तीव्र फल भोगना न पड़े।

(सभी बच्चे उत्साहित थे कि आज उन्होंने बहुत अनोखी बात सीखी)

प्रतिज्ञा -

1. रात्रि में सोने से पहले इच्छाकारणं का पाठ बोलना।
2. एक डायरी बनाएँ, जिसमें प्रतिदिन अपनी पाँच गलतियाँ व दूसरों की पाँच अच्छाइयाँ लिखें। गलतियों को सुधारने का प्रयत्न करें और अच्छाइयों को जीवन में उतारने का प्रयास करें।

श्रमणोपासक

राजा अरिमर्दन के राज्य में एक चोर चोरी के अक्षम्य अपराध में पकड़ा गया। प्राचीन युग के राजा अपराधियों को दण्ड देने में प्रायः बहुत कठोर रहते थे। जिससे भविष्य में दूसरा व्यक्ति वैसा अपराध करने का दुस्साहस नहीं कर सके। राजा अरिमर्दन भी इसका अपवाद नहीं था। चोर के पकड़े जाने पर जब उसे राजा के समक्ष उपस्थित किया गया तो राजा अरिमर्दन ने सारी स्थिति को समझते हुए अपराधी को दण्ड के रूप में मृत्यु की सजा का आदेश दिया। उस समय की परम्परा के अनुसार अपराधी का मुँह काला किया गया, गधे पर बिठाया गया, ड्रूण्डिम नाद के साथ राजपुरुष शहर के मुख्य मार्गों में इस घोषणा के साथ घुमाने लगे- “इस व्यक्ति ने राज्य-विरुद्ध चोरी का निन्दनीय अपराध किया। इस अपराध के कारण इसे मृत्युदण्ड की सजा दी जा रही है। जो कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के निन्दनीय अपराध को करेगा उसे भी इस प्रकार दण्डित किया जाएगा।”

इस प्रकार की घोषणा करते हुए राजपुरुष जब उसे राजमहलों के पास ले जा रहे थे उस समय चारों रानियों के साथ राजा अरिमर्दन वातायन में बैठा नगर की शोभा निहार रहा था। रानियों ने जब राजपथ पर किसी अपराधी को ले जाते हुए देखा तो राजा से पूछा- “प्राणेश्वर! इस व्यक्ति को किस अपराध में मृत्युदण्ड दिया जा रहा है।”

राजा ने बतलाया- “प्रिये! इसने चोरी जैसा जघन्य कर्म कर राज्य की जनता को बहुत उत्पीड़ित

किया है। इसी अपराध में इसे दण्डित किया जा रहा है।”

चारों ही रानियाँ इसकी दीन दशा देखकर द्रवित हो उठीं और इसे बचाने का उपाय सोचने लगीं। इतने में ही उन्हें राजा द्वारा दिए गए वरदान की बात याद आ गई।

सबसे बड़ी रानी ने राजा द्वारा दिए वरदान की याद दिलाते हुए कहा कि “प्राणेश्वर! आज उस वरदान का अवसर आ गया है। आप मेरी भावना पूरी करिए।”

“बोलो-बोलो प्रिये! तुम्हारी क्या इच्छा है? मैं अपने वरदान के अनुसार तुम्हारी इच्छा को पूरी करने के लिए तत्पर हूँ।” राजा की बात को सुनकर रानी ने कहा- “प्राणेश्वर! एक दिन-रात के लिए आप इस अपराधी की मृत्यु सजा रोककर इसे मेरे सुपर्द कर दीजिए।”

“जैसी तुम्हारी इच्छा।”

राजा के आदेश को पाकर राजपुरुषों ने एक दिन के लिए अपराधी को सबसे बड़ी रानी के सुपर्द कर दिया। रानी ने अपराधी चोर को मनोज्ञ भोजन कराकर एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ देकर संतुष्ट किया। एक दिन-रात के लिए बड़ी रानी ने अपराधी की मृत्यु बचा ली। अपराधी ने रानी के प्रति बहुत कृतज्ञता ज्ञापित की। बहुत-बहुत आभार प्रदर्शित किया।

बड़ी रानी की प्रशंसा सुनकर दूसरी रानी के मन में भी अपनी प्रशंसा करवाने की इच्छा बलवती हो उठी। उसने भी अनुकूल अवसर देखकर राजा से अपना वरदान मांग ही लिया और एक दिन के लिए उसने चोर

के प्राण की रक्षा की और उसे अच्छा खाना खिलाकर पाँच हजार स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान कर तुष्ट किया। चोर ने दूसरी रानी के प्रति भी आभार प्रदर्शित किया। तीसरी रानी भी यह अवसर कब चूकने वाली थी। उसने भी राजा को अपना वरदान याद दिलाकर चोर को एक दिन के लिए निर्भय बना दिया। उसे अच्छा खिलाया-पिलाया और दस हजार स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान की। चोर ने तीसरी रानी का भी गुणानुवाद गाया और उसके प्रति भी अपना आभार ज्ञापित किया।

चौथी रानी को भी यह अवसर अनुकूल लगा। उसने भी राजा को अपने वरदान की याद दिलाकर चोर को अपने पास बुलाया और कहा- “चौर्य कर्म बहुत निंदनीय है, इसी कारण आज तुम्हें मृत्युदण्ड मिल रहा है। बोल, तू क्या चाहता है? जीना चाहता है या मरना ही।” चोर तत्काल बोल उठा- “महादेवी! मुझे और कुछ नहीं चाहिए, केवल जीवन-जीवन। मैं आपके चरणों में गिरता हूँ, मुझे बचा लो, जन्म-जन्म तक मैं आपका उपकार नहीं भुलूँगा, बस मुझे बचा लो।”

छोटी रानी ने कहा- “मैं तुम्हें बस एक ही शर्त पर बचा सकती हूँ। तुम यह निंदनीय कार्य सदा-सदा के लिए छोड़ दो।”

“हे अम्बे! मैं तैयार हूँ। अब कभी भी ऐसा कार्य नहीं करूँगा जो राज्य विरुद्ध होगा। शिष्टता एवं सभ्यता के साथ रहूँगा। बस आप मुझे बचा लो, डूबते हुए को उबार लो।”

महारानी ने चोर को आश्वासन दिया और सम्राट के पास पहुँचकर पूछा- “प्राणेश्वर! राज्य का दण्ड विधान दोषों को नाश करने के लिए है या दोषियों का

नाश करने के लिए है?”

सम्राट ने कहा- “महारानी! दण्ड का संविधान तो दोषों को नाश करने के लिए है।”

“तो बस राजन्! अब मुझे आपके द्वारा दिए वरदान से और कुछ नहीं चाहिए। चोर को मृत्युदण्ड मत दीजिए, उसे जीवनदान दे दीजिए।”

सम्राट अवाक् रह गया, बोला- “देवी! तुम यह क्या कह रही हो? क्या मैं उस भयंकर दुर्दान्त चोर को छोड़ दूँ, जिसे पकड़ने में कितना समय लगा था? इसे छोड़ने पर देश की जनता क्या कहेगी? सोचो रानी यह गंभीर विषय है तुम और कुछ मांग लो।”

रानी ने कहा- “राजन्! मैंने बहुत सोच-समझकर वर मांगा है। इस अपराधी ने सदा-सदा के लिए निंद्य कर्म का त्याग कर दिया है अतः आप उसे बचा लीजिए।”

प्रतिज्ञा के अनुसार राजा ने चोर को निर्भय कर दिया। अब तो चोर मुक्तकंठ से छोटी रानी की प्रशंसा करने लगा। पूरे नगर में छोटी रानी की चर्चा होने लगी। नागरिक भी प्रशंसा करने लगे।

यह चर्चा जब तीनों रानियों ने सुनी तो ईर्ष्या से दग्ध हो उठी। “अरे! इसने चोर को दिया ही क्या है- हमने तो उसे बहुत सारी स्वर्ण मुद्राएँ दीं, फिर भी लोग उसी की प्रशंसा कर रहे हैं। हमारी तो कोई चर्चा ही नहीं करता। जबकि हमारा दान सबसे ज्यादा दान था।”

बड़ी रानी ने कहा- “मैंने उसे एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ दीं।” दूसरी ने कहा- “मैंने उसे तुम्हारे से भी अधिक पाँच हजार स्वर्ण मुद्राएँ दीं।” तीसरी ने कहा- “अरे! जबकि चौथी रानी ने कुछ नहीं दिया फिर भी जनता उसी की प्रशंसा कर रही है। सम्राट से अवश्य इसका निर्णय कराना चाहिए किसका दान सर्वश्रेष्ठ दान है।”



वे ईर्ष्या-दग्ध तीनों महारानियाँ छोटी रानी की प्रशंसा सहन नहीं कर पाई और किसका कार्य सर्वश्रेष्ठ है, इसका निर्णय लेने के लिए तीनों मिलकर सम्राट के निजी कक्ष में पहुँची। तीनों को एक साथ देख का सम्राट अवाक् रह गया! बोला- “क्या चाहती हो, किसलिए तीनों का एक साथ मिलकर यहाँ आना हुआ है?”

बड़ी महारानी ने तीनों की समस्या सामने रखी और दान की सर्वश्रेष्ठता का निर्णय कराने के लिए निवेदन प्रस्तुत किया।



सम्राट स्वयं विचार में पड़ गए, सोचने लगे- “यद्यपि छोटी रानी का दान कार्य ही सर्वश्रेष्ठ है किंतु इसका निर्णय मैं दूँगा तो ये सोच बैठेंगी कि मैंने इसका पक्ष लिया है। अच्छा हो चोर इस बात का निर्णय दे।” यह सोचकर सम्राट ने कहा- “आपकी बात विमर्शनीय है, इसका निर्णय मैं दूँ इससे श्रेष्ठ तो यह होगा कि स्वयं चोर ही इस बात का निर्णय दे। उसे वास्तव में किसने सर्वश्रेष्ठ दान दिया है।” तीनों रानियाँ मान गईं। सभी के समक्ष चोर को बुलाया गया और कहा गया कि “बोलो, इन चारों रानियों में से सर्वश्रेष्ठ दान तुम्हें किसने दिया?”

सम्राट की बात सुनकर चोर विस्मय में पड़ गया फिर भी उसे कुछ तो कहना ही था, बोला- “राजन्!

तीनों रानियों का उपकार मुझ पर बहुत बड़ा है। इनका उपकार भी मैं नहीं भूल सकता। किंतु राजन्! चौथी रानी का उपकार तो अनन्य है। इनके दान के लिए तो मेरे पास कहने योग्य कोई शब्द नहीं है। तीनों रानियों ने यद्यपि मेरा रक्षण, सत्कार-सम्मान एवं स्वर्ण मुद्राओं का दान दिया। मुझे मानसिक शांति बिल्कुल नहीं मिल पाई क्योंकि राजन्! अंततः तो मेरे मस्तिष्क पर मृत्यु मंडरा रही थी। किंतु जब चौथी रानी ने मुझे अभय कर दिया, मृत्यु का भय चक्र मेरे मस्तिष्क से हटा दिया तो मेरा तन-बदन अत्यधिक पारितोष को प्राप्त हुआ। यद्यपि छोटी रानी ने मुझे धन के रूप में कुछ भी नहीं दिया, लेकिन निर्भयता का जो महान दान दिया उसके सामने संसार की सम्पूर्ण वस्तुएँ तुच्छ हैं। अतः हे राजन्! छोटी महारानी का दान ही सर्वश्रेष्ठ दान है।”

यह तो एक घटना क्रम है जिसे आपके सामने रखा गया। घटना चाहे किसी भी रूप में घटी हो या नहीं किंतु इस घटना से यह शाश्वत संदेश मिलता है कि “सर्व्वेसिं जीवियं पियं” संसार के समस्त प्राणी अपना जीवन चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। अतः मृत्यु के भय से जिसे निर्भय किया जाता है, उसकी आत्मा परम संतोष को प्राप्त होती है। इसलिए अभयदान ही सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

साभार- नानेशवाणी-46 (दृष्टांत सुधा) श्रमणोपासक

“ गौतम स्वामी से केशी श्रमण ने पूछा- “सत्तु य इइ के वुत्ते”, आप शत्रु किसे मानते हैं? उत्तर मिला- “एगप्पा अजिए सत्तु”, जिस आत्मा को अभी तक जीता नहीं गया है, जिस पर हमने अधिकार नहीं किया है, जो अपने घर में नहीं आ गया है, केवल बाहर भटक रहा है, वह शत्रु है। बाहर भटकना हमारी मानसिकता बनी हुई है। अनादि संस्कार यह बने हुए हैं कि बाहर जितना आनन्द आता है, उतना अपने घर में नहीं आता। इस भ्रम को मिटाना होगा।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

मुझे जैन होने पर गर्व है

-त्रिलोकचन्द्र जैन, जयपुर
सह-सम्पादक,
जिनवाणी मासिक पत्रिका

■ मैं जैन हूँ, मुझे जैन होने पर गर्व है। यह संकल्प हम अनेक बार दोहराते हैं। लेकिन हम जैन यदि अपने जैन होने का गर्व करें तो इसमें क्या विशेषता है? क्योंकि एक हिन्दू भी अपने हिन्दू होने पर गर्व करता है तो एक मुसलमान भी अपने मुसलमान होने पर गर्व करता है। सभी अपने-अपने धर्म पर गर्व करते हैं। संकल्प दोहराते हुए मन में विचार आया कि मैं मेरे जैन होने का गर्व क्यों करूँ? कुछ तो ऐसी विशेषताएँ जैन धर्म में होनी चाहिए जो कि अन्य धर्मों में नहीं है, जिससे मुझे जैन होने का गौरव हो सके। गुरु-भगवन्तों की कृपा-आशीष से जब जैन धर्म के सिद्धांतों का अवलोकन किया तो सिर गर्व से उठकर कहने लगा कि- 'मुझे जैन होने पर गर्व है।'

मात्र जैन कुल में जन्म लेने से ही मैं 50 प्रतिशत पाप से बच गया। यहाँ जन्म लेने मात्र से ऐसे संस्कार प्राप्त हुए कि कोई 500 रुपये भी दे तो भी एक कीड़ी को मारने की भावना हमारे मन में नहीं आती है, जबकि आए दिन अखबार में पढ़ते हैं कि मात्र कुछ रुपयों के खातिर मनुष्य जैसे विकसित प्राणी की हत्या हो जाती है। ये जन्म के ही संस्कार हैं कि माँस का सेवन तो दूर माँस मंडी के रास्ते से निकलना भी हमें पसंद नहीं होता है। ये जन्म के संस्कार हैं कि कोई भी बड़ा पाप सेवन करने का मन में नहीं आता है। ये जन्म के ही संस्कार हैं कि हमारे परिवार, समाज में

अपशब्दों का प्रयोग भी नहींवत् होता है, जिससे हम अच्छे, सरल-मधुर शब्दों का प्रयोग करते हैं। जब जन्म लेने मात्र से हम 50 प्रतिशत पाप से बच गए, अब जन्म को सार्थक करने के लिए शेष 50 प्रतिशत पाप से बचना है। इस हेतु वास्तविक जैन बनने का प्रयास करना है, जिसमें आचार-विचार की शुद्धता-उच्चता समाहित रहे।

जब कोई अन्य मतावलम्बी मुझसे ये पूछे कि तुम्हें जैन होने का गौरव क्यों है? तो मैं उसे कुछ ऐसी विशेषताएँ बता सकूँ, जिसे सुनकर वह संतुष्ट हो और कहे कि वाकई जैन धर्म और जैन मतावलम्बी सर्वश्रेष्ठ हैं। ऐसी ही कुछ विशेषताएँ बताने का प्रयास कर रहा हूँ, जिनके कारण मुझे जैन होने का गर्व होता है-

1. जैन धर्म की सूक्ष्म अहिंसा :

अहिंसा का महत्त्व सभी धर्मों में प्रतिपादित है। हिन्दू ग्रन्थ महाभारत में तो 'अहिंसा परमोधर्मः' कहकर अहिंसा को श्रेष्ठ धर्म भी कहा है, लेकिन सभी धर्मों से परे जैनियों की अहिंसा अतीव सूक्ष्म है, क्योंकि यहाँ सूक्ष्म से सूक्ष्म प्राणियों का प्राण हरण करना भी हिंसा की श्रेणी में लिया गया है। जिन सूक्ष्म जीवों में अन्य धर्म वाले जीवत्व तक स्वीकार नहीं करते हैं, उन सूक्ष्म जीवों के प्राणों की रक्षा करना केवल मात्र जैन धर्म में कहा है। पाँच स्थावर पृथ्वीकाय, अप्काय, अग्निकाय, वायुकाय एवं वनस्पतिकाय में जीवत्व

स्वीकार कर इनकी हिंसा का जैन साधु पूर्ण त्याग तथा जैन श्रावक इनकी हिंसा की मर्यादा करता है। हम देखते हैं कि व्यवहार जगत् में मनुष्य जैसे विकसित प्राणियों की घात को विशेष त्याज्य बताया गया है। लेकिन जैन धर्म में प्रत्यक्ष नजर नहीं आने वाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय स्थावर जीवों की घात को भी हिंसा में ग्रहण किया है। अहिंसा का इस प्रकार सांगोपांग विवेचन अन्यत्र नहीं मिलता है। इसलिए **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

2. जैन धर्म का अपरिग्रह :

जैन धर्म में परिग्रह के त्याग का अर्थ अपनी आत्मा के सिवाय जो भी 'पर' हैं, ऐसी किसी भी वस्तु पर आसक्ति और ममत्व भाव का त्याग कहा है। यहाँ 'पर' का तात्पर्य शरीर, इन्द्रिय, धन, परिवार, घर, कुटुम्ब आदि सभी लिए हैं। जैन साधु के लिए तो सूर्यास्त पश्चात् पानी की एक बूँद तक रखने का निषेध है। प्रथम प्रहर में लाए हुए आहार-पानी को चौथे प्रहर में ग्रहण नहीं कर सकते हैं, ऐसी अपरिग्रहवृत्ति वाले जैन साधु होते हैं। जबकि अन्य धर्मों में मात्र घर-परिवार को छोड़ना ही साधु बनने के लिए जरूरी है। जैन धर्म में अपरिग्रह को मूल सिद्धांत बताते हुए वस्तुओं के संग्रह का त्याग तो है ही, साथ ही उन वस्तुओं के प्रति किंचित् भी आसक्ति भाव भी नहीं होना चाहिए। ऐसे अकिंचन भाव की पराकाष्ठा होने के कारण **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

3. जैन धर्म का विचक्षण अनेकांत सिद्धांत :

जैन धर्म का एक प्रमुख सिद्धांत है अनेकांत। अनाग्रह वृत्ति, आपेक्षिक कथन, समन्वय भाव, इस सिद्धांत का महत्त्व बताते हैं। सभी धर्मों की अच्छाइयों को ग्रहण करने की अवधारणा अनेकांत में समाई है। विश्व शांति स्थापित करने में अनेकांत सिद्धांत मील का स्तम्भ साबित हो सकता है। बौद्ध दर्शन आत्मा को अनित्य मानता है, सांख्य दर्शन

आत्मा को नित्य मानता है, लेकिन जैन दर्शन आत्मा की नित्यता-अनित्यता दोनों को स्वीकार करता है। जैन दर्शन कहता है कि आत्मा द्रव्य की अपेक्षा नित्य है तथा पर्याय की अपेक्षा अनित्य है। जैसे फोटोग्राफर कोई फोटो को खींचता है तो उसका एक न एक कोण जरूर होता है उसी प्रकार व्यक्ति का कथन भी बिना अपेक्षा के नहीं होता है। इस अनेकांत सिद्धांत से विवाद भी परिवर्तित होकर संवाद हो जाता है। इसलिए **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

4. जैन धर्म का कर्मसिद्धांत :

पूरी जिंदगी किए गए पाप मात्र कुछ शब्दों एवं क्रियाओं से नहीं खत्म हो सकते हैं। इन तरीकों से पापों से मुक्त होना जैन धर्म को अभीष्ट नहीं है। जैन धर्म 'कडाण कम्माण ण मोक्ख अत्थि' के अटल सिद्धांत पर चलने वाला है। किए हुए कर्मों को काटने के लिए तप-संवर की आराधना करनी होगी। कर्मसिद्धांत में आठ कर्म, उनकी प्रकृतियाँ, उनके बंध के कारण आदि अनेक विषयों का विस्तृत विवेचन जैन ग्रन्थों में प्रतिपादित है। इसलिए **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

5. जैन धर्म का सर्वजीव मोक्षाधिकार :

ईश्वर एक है, ईश्वर जगत् का कर्ता है। ऐसी मान्यताओं में अधिकांश धर्म आबद्ध हैं। लेकिन जैन धर्म की मान्यता अलग है- जगत् की न तो कोई आदि है और न ही इसका अंत होने वाला है, यह तो अनादि अनंत है। इस जगत् का कोई कर्ता तथा संचालक भी नहीं है। ईश्वर एक भी नहीं है, बल्कि सभी जीवों के अन्दर से ईश्वरीय शक्ति प्रकट होने से अनंत सिद्ध-परमात्मा माने गए हैं। महात्मा गाँधी के चौथे पुत्र देवदास गाँधी ने जॉर्ज बर्नार्ड शाँ से पूछा कि आपको जैन धर्म में ऐसी क्या विशेषता नजर आई कि आप अगले जन्म में जैन बनना चाहते हो? तब जॉर्ज बर्नार्ड शाँ ने कहा कि जैन धर्म में मैंने दो ऐसी विशेषताएँ

देखी हैं जो अन्य धर्मों में नहीं है-

(1) जैन धर्म में प्रत्येक आत्मा को परमात्मा बनने का अधिकार दिया है।

(2) जैन धर्म का अनेकांतवाद सिद्धांत। बृहदालोयणा में कहा भी है-

**सिद्धा जैसो जीव है, जीव सो ही सिद्ध होय।
कर्म मैरु का आन्तरा, बूझे विरला कोय।।**

जैन धर्म में प्रत्येक आत्मा को परमात्मा का स्वरूप कहा है। जीव और सिद्ध में कर्म का ही अंतर है। कर्म काटने के बाद जीव सिद्ध अर्थात् भगवान बन जाता है। एकमात्र जैन धर्म ही आत्मा को परमात्मा बनने का अधिकार प्रदान करता है। इसलिए **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

6. जैन धर्म का श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य :

सभी धर्मों में ब्रह्मचर्य की महत्ता बताई है, लेकिन जैसा श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य जैन धर्म में प्रतिपादित है वैसा अन्य धर्मों में नहीं है। एक दिन के जन्मे बालक का स्पर्श भी 50 साल की दीक्षित साध्वी नहीं कर सकती है, ऐसे ब्रह्मचर्य व्रत के पालक हमारे संत-सती होते हैं। ब्रह्मचर्य की नववाड़ का वर्णन करते हुए स्त्री के संसर्ग, परिचय, दृश्य आदि देखने से भी ब्रह्मचर्य का खंडित होना कहा है। ऐसे उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य का सिद्धांत होने के कारण **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

7. जैन धर्म में रात्रिभोजन निषेध :

रात्रिभोजन के निषेध पर जितना जोर जैन धर्म में दिया है, वैसा अन्य धर्मों में नहीं। हिन्दू धर्म के ग्रन्थ महाभारत में अवश्य रात्रिभोजन त्याग की प्रेरणा की गई है, लेकिन जितना विस्तृत वर्णन जैन आगमों में रात्रिभोजन त्याग का मिलता है वह अन्य स्थान पर नहीं मिलता है। जैन साधु तो पानी की एक बूँद भी सूर्यास्त के पश्चात् ग्रहण नहीं कर सकते हैं। रेल या बस के सफर में जब सूर्यास्त पूर्व भोजन के लिए टिफिन खोलते हैं तो सफर

के साथी पूछ बैठते हैं कि क्या आप जैन हैं? ओसवाल जैन समाज की तो प्रथम दो प्रतिज्ञा ही रही कि- (1) नवकार मंत्र पर श्रद्धा और (2) रात्रिभोजन त्याग। इस प्रकार रात्रिभोजन त्याग जैन धर्म की प्रमुख पहचान है। इसलिए **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

8. जैन धर्म की उत्कृष्ट क्षमा :

जैन धर्म की क्षमा भी विलक्षण है। 'खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमन्तु मे' सभी जीव मुझे माफ करें तथा मैं सभी जीवों को माफ करूँ। ऐसी श्रेष्ठ भावना का कथन जैन धर्म का प्राण है। प्रभु को श्रेष्ठ क्षमा का उदाहरण कहा है। जब संगम देव ने भगवान महावीर को भीषण उपसर्ग दिए। प्रभु ने उसे कर्मों की उदीरणा का निमित्त समझकर उपकारी माना। प्रभु द्वारा महान् अपकारी को भी महान् उपकारी मानना, उनकी महान् क्षमा का अद्भुत उदाहरण है। 'जैसे को तैसा' की तर्ज पर अपराधी को दण्ड देने की मान्यता ही अधिक प्रचलित है, लेकिन जैनदर्शन कर्मसिद्धांत को सर्वोपरि मानकर निमित्त की अपेक्षा उपादान को महत्त्व देकर अपराधी को क्षमा भी प्रदान करता है। इसलिए **मुझे जैन होने पर गर्व है।**

9. आठवाँ आश्चर्य जैन साधु :

सात अजूबे इस दुनिया में हैं, अगर आठवाँ अजूबा देखना है तो जैन साधु की चर्या को देख लेना चाहिए। अन्यमती के साधु-साध्वी और जैन साधु-साध्वी में रात-दिन का अंतर होता है। जैन साधु की आश्चर्यकारी कुछ साधनाएँ हैं-

- (1) जीवनपर्यंत कच्चे पानी का त्याग,
- (2) जीवनपर्यंत केशलोच द्वारा बालों को उखाड़ना,
- (3) जीवनपर्यंत विजातीय स्पर्श का त्याग,
- (4) जीवनपर्यंत विद्युत प्रयोग का त्याग,
- (5) जीवनपर्यंत मात्र सफेद वस्त्रों का मर्यादित प्रमाण में उपयोग,

सहजता

-आरती नवलखा, बारडोली

- (6) जीवनपर्यंत सचित्त वस्तुओं का त्याग,
- (7) जीवनपर्यंत भिक्षावृत्ति से जीवनयापन,
- (8) जीवनपर्यंत एक कोड़ी भी पास में नहीं रखना,
- (9) जीवनपर्यंत शोभा विभूषा का त्याग,
- (10) जीवनपर्यंत स्नान का त्याग,
- (11) जीवनपर्यंत नंगे पैर विहार करना,
- (12) जीवनपर्यंत हिंसा, चोरी, झूठ आदि का पूर्णतया त्याग।

ऐसी अनेक चर्या जैन साधु की है जो आश्चर्यकारी हैं। जैन साधु त्यागमय जीवन का उत्कृष्ट रूप है। इसलिए मुझे जैन होने पर गर्व है।

10. जैन धर्म में पुरुषार्थ की उपादेयता :

कुछ किए बिना जय-जयकार नहीं होती है। इस उक्ति के आधार पर जैनों की साधना-आराधना रही हुई है। जैन धर्म आत्मा को ऊँचा उठाने के लिए पुरुषार्थ को विशेष महत्त्व देता है। साधना करने से, सहने से, तप-त्याग करने से धर्म का होना मानता है। पानी को ऊपर चढ़ाना है तो मोटर लगानी पड़ती है, नीचे गिराने के लिए नहीं। उसी प्रकार आत्मा को ऊपर उठाना है तो साधना-आराधना का पुरुषार्थ करना पड़ता है। पुरुषार्थ की उपादेयता स्वीकार करने के कारण मुझे जैन होने पर गर्व है।

ऐसी अनेक विशेषताएँ जैन धर्म में हैं, जो कि हमें विशेष बनाती है। प्रभु की वाणी, प्रभु के सिद्धांत अलौकिक हैं। इनका पालन करना सर्वश्रेष्ठ साधना है। इन सबसे ज्ञात होता है कि देवता भी जैन कुल में क्यों जन्म लेना चाहते हैं, क्यों वे जैन धर्म के पालन का मनोरथ रखते हैं।

ऐसी परम वाणी का कोई मुकाबला नहीं है। इसका एक वाक्य भी जीवन का कल्याण करने में पर्याप्त है। मेरा रोम-रोम जैन धर्म की महानता को स्वीकार करके यही कहता है कि जैन धर्म जयवंत है, श्रेष्ठ है। इसलिए मुझे जैन होने पर गर्व है।

श्रमणोपासक

जिसमें कोई तनाव, विकल्प, दोष, आक्रोश नहीं हो वही सहजता है। सहजता जीवन का उल्लास, निर्विकल्प परमानंद है। जो नियमित पर्याय है उसे स्वीकार कर भावों में परिवर्तन नहीं लाना सहजता है। जीवन का आधार सहजता है, जहाँ ना हेर-फेर के भाव हो, ना हर्ष हो और ना ही शोक हो। जो जिस स्वरूप में है उसे उसी रूप में देखना और स्वीकार करना सम्यक्त्व है। जीवन का एक लक्ष्य सहजतापूर्वक परम पवित्र जीवन जीना होना चाहिए।

कोई भी द्रव्य इष्ट-अनिष्ट नहीं होता। स्वकाल में उदय होता है और परिणित होता है। सम्यग्ज्ञानी उसमें कोई बदलाव नहीं लाना चाहता और उसे सहजता से स्वीकार कर लेता है। जो सत्य है उसे स्वीकार करना ही सहजता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं ध्यान सहज हैं। ज्ञान की गौरव गरिमा है, धर्म का मर्म सहजता है और संत-मुनिराजों का सत्संग धर्म सरिता है। आत्म-अनुभव करना ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान, धर्म-ध्यान, समाधि, योग है। जिसमें आधि-व्याधि, उपाधि न हो वही सहज समाधि है। समाधि सुखमय जीवन है। समाधिमय जीवन में देहान्त हो तो वह समाधिमरण है। बिना मोह, क्षोभ के समभाव से जीवन जीना अद्भुत और अनूप है। जीवन का सर्वांग सत्य सहजता है।

श्रमणोपासक

जीवन विहार

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

वि - विनय की रीति से विशेष प्रकार से

हा - हास्य परिहास से

र - रहित होकर गमन करना

जीवन एक पथ है और प्रत्येक मनुष्य यहाँ यात्री है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हर मानव इस जीवन पथ पर चलता है। इस पथ पर चलते हुए वह चाहता है कि मेरा जीवन आनंद, मंगल व प्रकाश से भरा रहे और यही उसके मनुष्यत्व की सार्थकता है। वह मनुष्य ही नहीं वह देश भी धन्य हो जाता है जहाँ आदमी सार्थक जीवन का बोध पाता है। बाइबिल में लिखा है-

“Good life is necessary step for godly life”

अर्थात् दिव्य जीवन तक पहुँचने के लिए श्रेष्ठ जीवन एक आवश्यक चरण है। अपने कदमों को नियमित संयमित बनाते हुए लक्ष्य की ओर उड़ान भरना, मंजिल को प्राप्त करने का प्रखर पुरुषार्थ करना, विहार विवेक का सफल चरण है। हमारे आचार, विचार, व्यवहार का हमारे विहार पर बहुत प्रभाव पड़ता है। विहार कदमों से ही होता है ऐसी बात नहीं है। विहार हमारे नयनों (आँखों) से, कानों से, विचारों से, हाथों से भी होता है। हम कैसा देख रहे हैं, क्या सुन रहे हैं, क्या सोच रहे हैं, क्या ले रहे हैं, क्या दे रहे हैं, इन सभी बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है। हमारी दृष्टि जितनी सकारात्मक होगी, सृष्टि भी उतनी ही सकारात्मक होगी।

विहार का आनंद अलमस्त जीवन की सुवास है। यह जीवन पावन पुनीत बने ऐसी संजीवनी खास है। इसका अनुसरण करना सिद्धों का सोपान है। दर्शन का बीज, ज्ञान का पौधा, चारित्र के पुष्प से विहार विवेक

सुगन्धित होता है। आत्मस्नान के लिए एक ही त्रिवेणी है- दर्शन, ज्ञान और चारित्र। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्। यही संगान हो, यही जीने का आधार हो, यही सपना और यही लक्ष्य हो।

*गतिशील चरण ही मंजिल को पाते हैं,
कितनी ही बाधाएँ आएँ या मंकट के बादल छाएँ
मंकल्प के बल पर ही व्यक्ति
अपने कदमों को लक्ष्य तक पहुँचाएँ।।*

एक प्यास काफी है सागर तक जाने को, एक किरण काफी है सूरज तक जाने को, एक गंध काफी है बगिया तक जाने को और एक कदम काफी है मंजिल



तक पहुँचने को। हमारे कदम बाहर की यात्रा करते हुए आत्मविहार (आत्मरमणता) की यात्रा करें। आत्मविहार की यात्रा हमें शाश्वत मंजिल की ओर ले जाती है, जिसे प्राप्त करने के बाद कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रहता। ऐसा विहार जिस दिन हो जाएगा उस दिन हमारे संसार अटवी का विहार खत्म हो जाएगा। विहार विवेक हमें प्रेरणा देता है कि मन, वचन, काया को संयमित रखते हुए जीवन की शुभ यात्रा करें।

ज्ञानियों का कथन है कि इस जीवन के विहार को दो ढंग से जीया जा सकता है- एक तो है फूटी हुई बाल्टी की तरह जीना। जैसे फूटी हुई बाल्टी को कुएँ में डालों तो वह पानी से भरी हुई दिखाई देती है। उसके भरने में शोरगुल तो बहुत होता है, पर उसे ऊपर खींचो तो पानी छिद्रों द्वारा गिरना शुरू हो जाता है। जब तक वह कुएँ से बाहर आती है तब तक खाली हो जाती है। जीने का ढंग इस छिद्रयुक्त बाल्टी जैसा है, जिससे मात्र साधनों को जुटाने की व्यवस्था में ही इस बहुमूल्य जीवन को खो देते हैं। आज सभी की जीवनशैली विकृत हो गई है। जैसे किसी ने शक्कर में धूल मिला दी हो। आश्चर्य तो यह है कि हमने व्यर्थ के साथ इतना तादात्म्य कर लिया है कि सार-असार, अर्थ-व्यर्थ और सार्थक-निरर्थक को छोटना ही मुश्किल हो गया है। जीने का दूसरा ढंग छिद्र रहित बाल्टी जैसा है। छिद्र रहित बाल्टी को कुएँ में डालो तो बिना किसी शोरगुल के वह भर जाती है और जब खींचो तो पानी को लेकर ऊपर आती है। ऐसा छिद्र रहित जीवन उनका हो सकता है जो जीवन की बहुमूल्य सम्पदा को अल्पमूल्य के पीछे नहीं गँवाते।

जीवन का सच्चा विहार तब होगा जब हम साधक बनकर व्यर्थ के कार्यों से बचकर जीवन के अर्थ को सुरक्षित रख सकेंगे तभी जीवन का सम्पूर्ण सौन्दर्य खिल सकता है। ऐसा बोध भीतर में हम सदा बनाए रखें। जिसने भी जीवन को जाना, समझा और परखा है, उसने अपने जीवन को मंदिर बना लिया। मंदिर वह है जहाँ मनुष्य अपने अंतस् के पवित्र भावों को अर्चना के रूप में अभिव्यक्त करता है और आत्मशांति को प्राप्त करता है। यह

जीवन भी वास्तव में एक मंदिर है। मंदिर की उपादेयता इसी में है कि दोषों को हटाना और पवित्रता को स्थापित करना। जैसे पत्थर को तराश कर प्रतिमा का निर्माण किया जा सकता है वैसे ही जीवन को भी सदगुणों से सजाकर भीतर रही हुई परमात्मा की मूर्त को प्राप्त किया जा सकता है। गुलदस्ता फूलों से भरा होने पर ही सुन्दर व नयनाभिराम लगता है किंतु यदि उसमें काँटे भरे हों तो वह किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा। यही बात जीवन के विषय में भी है। जीवन सदगुणों के सुगन्धित फूलों से भरा हो तो वह सुन्दर, मोहक और सुहावना लगता है।

*बात अंधेनों की नहीं, उजालों की कबनी होगी,
चर्चा काँटों की नहीं, गुलाबों की कबनी होगी।
मोड़ दिया है जिन्दगी को जिम्मे ने भी,
दृष्टि चील की नहीं हंस की कबनी होगी।।*

श्रमणोपासक

भक्ति रस

विहार

-राखी अलिझाड़, मुक्ताईनगर

सुरक्षित हो संत-सतियों का विहार,
ये ही तो हैं धर्म का मजबूत आधार।
संत-सतियों के बिना, जीवन बन जाएगा कटी पतंग,
धर्म को जीवित रखने के लिए, जरूरी है इनका संग।
गाँव-गाँव जाकर देते हैं, ये धर्म संस्कार,
सुरक्षित हो संत-सतियों का विहार।। 1 ।।

गाँव-गाँव, शहर-शहर कई कोसों पैदल चल,
धर्म से बनाते हैं यह सुंदर कल।
दुर्गति में गिरने वालों के हैं तारणहार,
सुरक्षित हो संत-सतियों का विहार।। 2 ।।

श्रावक-श्राविकाएँ हैं मात-पिता, यह कर्तव्य निभाना,
संत-सती की सुरक्षा हेतु, विहार सेवा में जाना।
इनकी सुरक्षा जिम्मेदारी है, इनके हैं अनंत उपकार,
सुरक्षित हो संत-सतियों का विहार।। 3 ।।

श्रमणोपासक

साधु-साध्वी किसी स्थान पर एक मर्यादित काल तक ही विराजते हैं। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक इन चार मास के चातुर्मास में एक स्थान पर विराजते हैं। इसके अलावा शेष काल में साधु-साध्वी एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करते हैं। विचरण के दौरान संत म.सा. किसी एक स्थान पर अधिकतम 29 दिवस एवं सतियाँ जी म.सा. 58 दिवस तक विराज सकते हैं। किसी विशेष कारण से इससे अधिक समय तक विराज सकते हैं, सुखे समाधे या बिना कारण नहीं।

मनुष्य का एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच आना-जाना प्रायः होता रहता है। लेकिन साधु-साध्वियों के गमनागमन को 'विहार' जैसे शब्द विशेष से जाना जाता है। साधु-साध्वियों का विहार स्व-पर कल्याण के उद्देश्य से निहित होता है।

साधु जीवन बड़ा दुष्कर कहा गया है। तलवार की धार पर चलना कदाचित् आसान हो सकता है, लेकिन साधु-जीवन, संयम पालन आसान नहीं है। कुछ विरल आत्माएँ ही ऐसे परीषहमय दुष्कर जीवन को हर्ष व प्रसन्नता से स्वीकार करती हैं। लक्ष्य रहता है आत्मकल्याण का और जीवनपर्यंत अहिंसामय पंच महाव्रतों की पालना करते हुए स्व-कल्याण के साथ पर-कल्याण जैसा परोपकार भी करते हैं।

साधु जीवन स्व-पर कल्याणकारी होता है। चातुर्मास काल में चार मास एक स्थान पर विराजना जीव रक्षा के लिए होता है तो शेष काल में विचरण-विहार भी जीव रक्षा के लिए ही होता है, क्योंकि विहार में ईर्यासमिति का पालन किया जाता है। आप पाँच समिति तीन गुप्ति रूपी अष्ट प्रवचनमाता का शुद्ध आराधन करते हैं। समिति-गुप्ति का पालन साधु-साध्वियों के लिए मोक्ष को प्रशस्त बनाने वाला होता है। पाँच समिति में प्रथम है- ईर्यासमिति। सावधानी, सजगता, यतनापूर्वक गमनागमन करना ही ईर्यासमिति है।

विचरण के दौरान संत म.सा. किसी एक स्थान पर अधिकतम 29 दिवस एवं सतियाँ जी म.सा. 58 दिवस तक विराज सकते हैं।

संस्कार सौरभ

मर्यादा ही विवेक

-सुरेश बोरदिया, मुंबई

कहावत है -

'पानी तो बहता भला

और साधु तो चलता भला'। नदी अपने मार्ग से बहती रहती है, लक्ष्य तो महासागर में समा जाने का होता है, लेकिन अपने मार्ग में आने वाले प्यासों को भी अपने शीतल जल से तृप्त करती जाती है और मार्गवर्ती क्षेत्रों को भी उपजाऊ बनाती रहती है। बहता हुआ पानी निर्मल बना रहता है लेकिन अगर वही पानी एक स्थान पर भरा रहे तो उसकी निर्मलता बनी रहना कठिन है।

साधु-साध्वी भी बहते हुए पानी की तरह होते हैं। साधु अपने चरम लक्ष्य 'मोक्ष' को पाने के उद्देश्य से संयमी जीवन का निर्वहन करते हुए विचरण करते हैं और सान्निध्य में आने वाले पिपासुओं की आध्यात्मिक पिपासा को तृप्त करते हैं। इनका जिन क्षेत्रों में विचरण होता है, उन क्षेत्रों को भी पावन, धर्ममय बनाते हैं।

महापद्म राजा, जिनकी राजधानी पुंडरीकिणी नगरी थी। उनके दो पुत्र- पुंडरिक एवं कंडरिक थे। धर्मघोष स्थविर से संसार की असारता का अनुभव कर राजा दीक्षित हो गए। पुंडरिक ने राज्यभार ग्रहण किया। कालांतर में धर्मघोष स्थविर का पुनः पधारना हुआ तो कंडरिक भी उनसे प्रतिबोधित होकर दीक्षित हो गया।

दीक्षित होकर कंडरिक मुनि स्थविर भगवन् के

साथ देश-देशांतर में विचरण करने लगे। राजकुमार के रूप में राजसी सुखों में पले-बड़े कंडरिक मुनि अब संयमी जीवन में क्षुधा-पिपासा जैसे परीषहों को सहन कर रहे थे और निरंतर रूखा-सूखा आहार करते हुए उनका शरीर रुग्ण हो गया। विचरण करते-करते पुंडरीकिणी नगरी में पधारना हो गया।

स्थविर भगवन् एवं भ्राता मुनि के पधारने के शुभ समाचार सुनकर पुंडरिक राजा को हर्ष, प्रसन्नता होना स्वाभाविक ही था। शीघ्र ही राजपरिवार सहित दर्शन के लिए पहुँच गया। दर्शन, वंदन कर सुखसाता पूछी। कंडरिक मुनि की शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति

पानी तो बहता भला और साधु तो चलता भला

जानकर स्थविर भगवन् से निवेदन किया-

“भगवन्! आप

यानशाला में पधारने की कृपा करावें ताकि राजवैद्य द्वारा मुनिश्री के रोग का समुचित उपचार किया जा सके एवं मुझे भी सेवा का सुअवसर प्राप्त होगा।”

स्थविर भगवन् पुंडरिक राजा के निवेदन को स्वीकार कर यानशाला पधार गए। कंडरिक मुनि के उपचार प्रारंभ कर दिया गया एवं कुशल राजवैद्य के द्वारा उपचारस्वरूप कुछ ही दिनों में मुनि अब स्वस्थ हो गए।

जिस प्रयोजन से यानशाला पधारना हुआ था वह अब पूर्ण हो चुका था। मुनिश्री के रोग का पूर्णतः निवारण हो चुका था। अब उनके वहाँ विराजे रहने की न तो कोई आवश्यकता थी और न ही औचित्य।

लेकिन कंडरिक मुनि! वे तो अब राजसी माहौल एवं आहार-पानी पर आसक्त हो चुके थे। जिन भौतिक सुखों को कुछ ही दिनों पहले स्वयं लात मारकर ठुकरा दिया था अब वे पुनः उन्हीं सुखों में लीन रहने लगे। यह भी कह सकते हैं कि कंडरिक मुनि संयम में शिथिलाचारी बन गए और वहाँ से विहार करने की इच्छा भी न रही। बिना आवश्यकता के वहीं विराज गए।

स्थविर भगवन् तो वहाँ से विहार कर अन्यत्र पधार गए थे लेकिन कंडरिक मुनि? अब उन्हें कहाँ विहार का भान था?

पुंडरिक राजा उनकी आसक्ति एवं शिथिलता को समझ गए। उनके लिए कंडरिक मुनि सांसारिक भ्राता से अधिक तो मुनि ही थे। उनकी शिथिलता को दूर करने के लिए अपने विवेक से समझाने लगे। विवेकवान श्रावक का कर्तव्य ऐसा होना ही चाहिए।

पुंडरिक द्वारा समझाया जाना कंडरिक मुनि को अच्छा तो नहीं लगा, लेकिन लज्जावश विहार करने को तैयार हो गए और अनिच्छापूर्वक विहार कर भी दिया। भोगों में आसक्त कंडरिक मुनि के लिए मात्र स्थान परिवर्तन कर लेना ही पर्याप्त नहीं था बल्कि मन को भोगों से स्वतंत्र करना आवश्यक था। लेकिन कंडरिक मुनि भोगों में इतना डूब चुके थे कि उनसे निकल नहीं पाए। उस स्थान, वहाँ के आहार-पानी के प्रति जो आसक्ति बढ़ती रही, उसके सामने संयम को ही विस्मृत कर गए।

और एक दिन अवसर देखकर सहवर्ती संतों को बिना कुछ बताए एकाकी विहार करके पुनः उसी यानशाला पहुँच गए जहाँ से उनके पतन की शुरुआत हुई थी। यह विहार, विहार नहीं था, पतन की यात्रा थी, आवागमन मात्र था। विहार होता है स्व-कल्याण एवं पर-कल्याण के लिए। विहार होता है तीर्थकर भगवंतों की

सावधानी, सजगता, यतनापूर्वक गमनागमन करना ही ईर्यासमिति है।

आज्ञा का पालन करने के लिए। लेकिन कंडरिक मुनि का यह विहार इन सबसे परे था। यह विहार था त्याग से पुनः भोगों में प्रवृत्त होने के लिए।

कंडरिक मुनि के पुनः आगमन के समाचार सुनकर पुंडरिक राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और राजपरिवार के साथ उनके समीप पहुँच गए। कंडरिक मुनि के मन के भावों को समझने में पुंडरिक को देर न लगी और पूर्व की भांति उन्हें फिर से समझाने लगे। एक बार, दो बार, तीन बार समझाया, लेकिन कंडरिक मुनि कहाँ समझने वाले थे! वे तो अब भी मौन थे।

पुंडरिक उस खामोशी का मतलब समझ ही गए कि

मुनि अब अपने पथ से भटक चुके हैं। पथ से ही नहीं, लक्ष्य से भी भटक चुके हैं। जिन भावों के साथ राज्य सुख का त्याग किया था, उन भावों का अभाव अब स्पष्ट झलक रहा था। राजसी सुख-सुविधाओं के बीच अधिक समय तक रह जाना उनके संयम के लिए घातक साबित हुआ और उसका परिणाम!

परिणाम यह कि कंडरिक मुनि अब मुनि नहीं रहे। मुनि जैसा श्रेष्ठ शब्द उनके लिए अतीत बन चुका था। पुंडरिक राजा ने उनका राज्याभिषेक कर दिया और उनके संयमोपकरण स्वयं लेकर दीक्षित हो गए। दीक्षित होकर पुंडरिक मुनि ने स्थविर भगवन् की सेवा में पहुँचने हेतु पुंडरीकिणी नगरी से विहार कर दिया।

उधर कंडरिक राजा तो भोगों में तीव्र आसक्त बन गया और रुग्ण होकर अल्पकाल में ही आयुष्य पूर्ण कर मर गया और तैंतीस सागरोपम की स्थिति वाली सातवीं नारकी में उत्पन्न हुआ।

पुंडरिक मुनि स्थविर भगवन् की सेवा में पहुँच गए और जिन उत्कृष्ट भावों के साथ संयम ग्रहण किया था, उन्हीं उत्कृष्ट भावों के साथ पालन करने लगे और उग्र साधना करके समाधिपूर्वक शरीर त्यागकर सर्वार्थ सिद्ध विमान में तैंतीस सागरोपम की स्थिति वाले अनुत्तर वैमानिक देव बने।

मुनि बनकर तो पुंडरिक ने अपना जीवन धन्य कर ही लिया, लेकिन मुनि जीवन से पहले भी पुंडरिक कितने विवेकवान थे, यह उपर्युक्त कथा से स्पष्ट हो जाता है।

सर्वप्रथम तो स्थविर भगवन् एवं कंडरिक मुनि के राजधानी में आगमन के साथ ही पुंडरिक राजा शीघ्र ही दर्शन-वंदन के लिए पहुँच गए और शारीरिक रोग की जानकारी मिलने पर मुनि के उपचार के लिए स्थविर भगवन् से निवेदन किया।

यहाँ बड़ा विवेक का प्रसंग है, भ्राता मुनि के रोग का उपचार करने का निवेदन स्थविर भगवन् से किया, मुनि से नहीं। क्योंकि मुनि से पहले स्थविर भगवन् थे, अतः उनसे निवेदन किया और मुनि के रोग का यथासंभव उपचार करवाया। स्वस्थ होने के बाद विराजना आवश्यक न होने पर पुंडरिक ने भ्राता मुनि को

विहार करने का निवेदन भी किया और न करने पर समझाया भी। और तो और कंडरिक के संयम से भटक जाने पर जिनशासन की महिमा, गरिमा को बनाए रखने के लिए पुंडरिक स्वयं दीक्षित हो गए।

हमारा भी विवेक इस तरह होना चाहिए। अपने गाँव, क्षेत्र के आस-पास साधु-साध्वियों का विचरण होने पर दर्शन-वंदन का भाव रखना चाहिए। शारीरिक सुखसाता पूछने पर अगर किसी तरह के उपचार की आवश्यकता हो तो उपचार का उपाय करना चाहिए।

विहार सेवा में हमें और भी कई तरह के विवेक की आवश्यकता रहती है। विहार सेवा में चलते हुए किसी तरह की चर्चा या जिज्ञासाओं के समाधान नहीं करने चाहिए क्योंकि साधु-साध्वियों के ईर्ष्यासमितपूर्वक विहार में हमारी चर्चाओं से व्यवधान पैदा हो सकता है। मार्ग बताने हेतु, मार्ग बदलने हेतु अथवा दूरी बताने जैसी आवश्यक जानकारी दे सकते हैं।

साधु-साध्वियों को गंतव्य स्थान पर पहुँचा देना ही पर्याप्त नहीं है, वहाँ गोचरी-पानी के घरों से साधुओं को अवगत करवाना चाहिए। किसी स्थानीय श्रावक-श्राविका को भी म.सा. के आगमन की सूचना अवश्य दे देना चाहिए। अगर उस गाँव में जैन घर न हो तो गोचरी-पानी होने तक हमें वहाँ रूक जाना चाहिए।

म.सा. से अगले विहार के बारे में भी पूछ लेना चाहिए कि अगला विहार कब, किस दिशा में संभावित है। अगले विहार की दूरी, विराजने के स्थान एवं जैन घरों की संख्या, अजैन शाकाहारी घरों की संख्या के बारे में भी म.सा. को अवगत करा देना चाहिए।

अतिमहत्त्वपूर्ण है कि साधु-साध्वियों का विहार यतनामय, अहिंसामय होता है। उनकी सेवा में चलते हुए हम स्वयं भी यतना रखें, जीव हिंसा से बचे रहें। आपसी वार्तालाप से भी बचें ताकि हम भी यतनामय रहकर हिंसा से बचें।

श्रावक को साधु-साध्वियों का अम्मा-पिया अर्थात् माता-पिता कहा गया है तो श्रावक का कर्तव्य है कि वह भी एक माता-पिता की तरह ही कर्तव्य निर्वहन करे।

भगवान महावीर स्वामी का दीक्षाकल्याणक

-कचनदेवी कांकरिया, कोलकाता

धन्य-धन्य हैं वे आँखें जिन्होंने भगवान महावीर का भव्य दीक्षाकल्याणक देखा है। हम भी श्रीमद् आचारांगसूत्र के 15वें भावना अध्ययन का यह अनुपम शब्द चित्र समाधि भावों में पढ़ते हुए अपने आंतरिक सौंदर्य (शुभ कर्मों) में शतगुणा वृद्धि करते हुए अपूर्व कर्मनिर्जरा कर धन्य-धन्य हों, इस उद्देश्य से यह लेख प्रस्तुत किया जा रहा है।

शास्त्र में तीर्थकरों के कल्याणकों के वर्णन में मुख्य रूप से देवों द्वारा तीर्थकर भगवान के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं जिनशासन की प्रभावना के उद्देश्य से महोत्सव मनाने का उल्लेख है। भौतिक ऋद्धि में देव मनुष्यों से बहुत आगे हैं। उन्हें देखकर तथा उनके द्वारा निर्मित भव्य वातावरण से प्रभावित होकर कई अबोध व्यक्ति अहिंसामय जैन धर्म को अपनाकर आत्मकल्याण कर लेते हैं - देवों द्वारा कल्याणक मनाने की यह सफल उपलब्धि है।

प्रत्येक तीर्थकर भगवान दीक्षा ग्रहण करने से एक वर्ष पूर्व तक प्रतिदिन सूर्योदय से लेकर प्रातराश (नाशता, एक प्रहर तक) तक एक करोड़ आठ लाख स्वर्णमुद्राओं का दान करते हैं। इस प्रकार तीर्थकर भगवान एक वर्ष में कुल तीन अरब, अठासी करोड़, अस्सी लाख (3,88,80,00,000) स्वर्णमुद्राओं का दान देते हैं। (वर्षीदान के माध्यम से भगवान ने द्रव्य दान पर प्रकाश डाला है। वर्षीदान यह स्पष्ट करता है कि दान आत्मा की दया भावना के विकास का साधन है।)

भगवान महावीर का जीवन गृहस्थ अवस्था में भी अनासक्त, विरक्त एवं अप्रमत्त था। अतः जब तीर्थकर भगवान के हृदय में दीक्षा लेने की भावना जागृत होती है तब पहले देवलोक की उत्तर दिशा का लोकपाल कुंडलधारी वैश्रमण देव और 5वें देवलोक के महान ऋद्धिसम्पन्न लोकांतिक देव तीर्थकर भगवान को प्रतिबोधित करते हैं। यहाँ प्रतिबोधित करने का अर्थ है सविनय निवेदन करना। क्योंकि तीर्थकर भगवान तो स्वयंबुद्ध होते हैं, उन्हें बोध देने की आवश्यकता नहीं होती है। ये देव अपनी परम्परा के अनुसार (जीताचार का पालन करने के लिए) भगवान के पास आकर उन्हें धर्म तीर्थ की स्थापना करने के लिए विनयपूर्वक निवेदन करते हैं। वर्षीदान पूर्ण होने पर तीर्थकर भगवान के दीक्षा लेने के अभिप्राय को जानकर भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव-देवियाँ अपने-अपने रूप में, अपने-अपने वस्त्रों में, अपने-अपने चिह्नों से युक्त होकर तथा अपनी-अपनी समस्त ऋद्धि, द्युति और समस्त बल समुदाय सहित यानी राजसी ठाठ-बाठ से अपने-अपने यान-विमानों (यात्रा के विमानों) पर चढ़ते हैं और उनमें चढ़कर बादर (स्थूल) पुद्गलों को अलग करते हैं

और सूक्ष्म (छोटे) पुद्गलों को ग्रहण करके (नोट देखें) उड़कर अपनी उत्कृष्ट दिव्य देव गति से क्षत्रिय कुंडपुर (कुंडलपुर) के ईशानकोण दिशा में उतरते हैं। वे देव-देवियाँ अपना अहोभाग्य समझते हैं कि हमें तीर्थकर भगवान के धर्मकार्य की अनुमोदना (समर्थन) करने का अवसर मिल रहा है। इसलिए वे स्फूर्ति, श्रद्धा और हर्षोल्लास से आते हैं। देव-देवियों के आगमन से आकाश मंडल खिले हुए पुष्पों के वनखंड के समान, शरदकाल में कमल के फूलों के समूह से युक्त पद्म सरोवर के समान, चंपक वन एवं सरसों के वन आदि के फूलों के झुंड के समान सुहावना लग रहा था।

32 लाख विमानों एवं असंख्य देवों के स्वामी देवराज शक्रेंद्र द्वारा अभिनिष्क्रमण यात्रा के पूर्व भक्तिवश की गई तैयारियों का वर्णन किया जा रहा है। देवराज शक्रेंद्र धीरे-धीरे अपने यान-विमान से उतरकर एकांत में जाकर महान वैक्रिय समुद्घात करके मणि-स्वर्ण-रत्न आदि से जड़ित एक बहुत बड़े अति सुंदर देवच्छंदक (विशाल चबूतरे) का निर्माण करते हैं। देवच्छंदक के मध्य में पादपीठ सहित एक विशाल मणि-स्वर्ण-रत्नमय महामूल्यवान सिंहासन बनाते हैं जो शुभ, सुंदर और रम्य होता है।

इसके पश्चात् देवराज शक्रेंद्र भगवान महावीर स्वामी के पास जाकर तीन बार तिक्रुत्तो के पाठ से वन्दना-नमस्कार करके उन्हें देवच्छंदक पर लाकर पूर्वाभिमुख करके सिंहासन पर बैठाते हैं। फिर भक्ति भावना से शतपाक और सहस्रपाक तेलों से भगवान महावीर की मालिश करके सुगंधित द्रव्यों से उनका उबटन करते हैं। फिर शुद्ध जल से उन्हें स्नान कराके उनके शरीर पर तीन पट को लपेट कर बनाए हुए एक लाख मूल्य वाले गोशीर्ष चंदन का लेप करते हैं। फिर नाक से निकलने वाली वायु से उड़ने वाला पतला, मनोहर हंस के समान श्वेत वर्ण का क्षौम वस्त्र (कपास से निर्मित वस्त्र) जो सोने के तार से विभूषित होता है,

उस एक लाख स्वर्णमुद्राओं का वस्त्र युगल पहनाते हैं।

तत्पश्चात् हार, अर्द्धहार, मुकुट आदि अनेक श्रेष्ठ महामूल्यवान आभूषण एवं दिव्य पुष्पमालाएँ पहनाकर उन्हें कल्पवृक्ष की तरह सुसज्जित (अलंकृत) करते हैं। इन सबसे भगवान महावीर के सुंदरतम शरीर को शोभायमान करते हैं।

शिविका निर्माण :- भगवान महावीर स्वामी को अलंकृत करने के पश्चात् देवराज शक्रेंद्र वैक्रिय समुद्घात करके चन्द्रप्रभा नामक एक विशाल सहस्रवाहिनी आकर्षक शिविका (एक हजार पुरुषों द्वारा उठाई जाने वाली पालकी) का निर्माण करते हैं। वह पालकी मृग, वृषभ, अश्व आदि जीवों तथा वनलताओं से चित्रित थी। उस पर अनेक विद्याधरों के जोड़े अंकित थे। वह पालकी हजार किरणों से सुशोभित सूर्य ज्योति के समान दैदीप्यमान थी। उसमें मोती एवं मोतियों के जाल पिरोए हुए थे। वह शिविका रत्नों की, मणियों की व दिव्य पुष्पों की मालाओं से तथा घण्टों एवं पताकाओं से सुशोभित थी। वह अत्यंत शुभ, सुंदर व मन को प्रसन्न करने वाली थी।

दीक्षा यात्रा का वर्णन :- मार्गशीर्ष के कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन द्वितीय प्रहर बीतने पर शुभ अध्यवसायों में चौविहार बेले की तपस्या से युक्त और शुभ लेश्याओं से विशुद्ध बने हुए भगवान महावीर श्रेष्ठ रत्नों से सुसज्जित शिविका में सिंहासन पर विराजमान हुए। सिंहासन के दोनों ओर देवराज शक्रेंद्र और ईशानेंद्र खड़े होकर मणि, रत्न आदि के हत्थे (डंडे) वाले चामर ढुलाते हैं।

पहले उन मनुष्यों ने शिविका उठाई जिनके रोम-रोम श्रद्धा, भक्ति एवं हर्ष से विकसित हो रहे थे। फिर शिविका को पूर्व दिशा में वैमानिक देव, दक्षिण दिशा में असुरकुमार देव, पश्चिम दिशा में गरुड़ (सुपर्ण) देव और उत्तर में नागकुमार देव उठाकर चलते हैं। देव, असुर, किन्नर, गंधर्व आदि देव बहुत हर्ष से बाजे बजा रहे थे तथा उस यात्रा में उत्तम ढोल, भेरी, झालर, शंख आदि

सैंकड़ों वादिन्द्रों से गुंजायमान आकाश एवं धरणी तल (भूभाग) बड़ा ही मनोहर एवं रमणीय हो रहा था। देवगण बहुत तरह के नृत्य और नाटक कर रहे थे। सारा वातावरण हर्ष एवं उल्लास से भरा हुआ था। ऐसे अनुपम भव्य महोत्सव के समय भी भगवान महावीर शुभ परिणामों में शांत (भाव ऐश्वर्य में) बैठे हुए थे। इस प्रकार क्षत्रिय कुंडपुर के मध्य भाग से होते हुए देव और मनुष्यों का जुलूस ज्ञात खण्ड उद्यान में पहुँचा। वहाँ पर देव शिविका को भूमि से स्पर्श न कराते हुए रख देते हैं। राजकुमार वर्धमान शिविका से धीरे-धीरे नीचे उतरकर पूर्व दिशा की तरफ मुख करके वहाँ सिंहासन पर बैठ जाते हैं और अपने आभूषणों को उतारते हैं तब वैश्रमण देव घुटने टेककर भगवान महावीर स्वामी के चरणों में झुक कर भक्तिपूर्वक हंस के समान श्वेत वस्त्र में उन अलंकारों को ग्रहण करते हैं। उसके बाद भगवान दाहिने हाथ से दाहिनी ओर के और बाएँ हाथ से बाईं ओर के केशों का पंचमुष्टिक लोच करते हैं। तब देवराज शक्रेंद्र घुटने टेक कर भक्तिपूर्वक भगवान के चरणों में झुकता है और उन केशों को वज्रमय (हीरे के) थाल में ग्रहण करके “भंते! आपकी अनुमति है” ऐसा कहकर उन केशों को

क्षीर समुद्र में प्रवाहित करा देते हैं।

दीक्षा ग्रहण :- भगवान महावीर लोच पूर्ण करके सिद्धों को नमस्कार करते हैं और “सर्वं मे अकरणिज्जं पावं कम्मं” अर्थात् आज से मेरे लिए सभी पापकर्म अकरणिय हैं— ऐसा कहकर सामायिक चारित्र अंगीकार करते हैं। उस समय देवराज शक्रेंद्र के आदेश से (हाथ ऊपर उठाने से) देवों और मनुष्यों की परिषद् चित्रलिखित सी निश्चेष्ट हो गई यानी सर्वत्र शांति छा गई तथा “सर्वं मे अकरणिज्जं पावं कम्मं” इन परम पवित्र शब्दों को सुनकर सभी के रोम-रोम हर्ष से पुलकित हो उठे और भगवान महावीर स्वामी सामायिक चारित्र में संलग्न हो गए। इस संलग्नता यानी आयत योग (तन्मयता योग) के कारण भगवान महावीर ने जिस महत्तम (कर्म क्षय के) उद्देश्य से दीक्षा ग्रहण की उसमें उन्हें पूर्ण सफलता मिली।

नोट :- देव 4-5 आवास तक ही अपनी ऋद्धि (मूल शरीर) से जाते हैं उसके आगे परऋद्धि अर्थात् उत्तर वैक्रिय शरीर बनाकर जाते हैं। वैक्रिय शरीर बनाने की प्रक्रिया (वैक्रिय समुद्घात) में पूर्व गृहीत वैक्रिय शरीर नामकर्म के स्थूल पुद्गलों को पृथक् करके सूक्ष्म पुद्गल ग्रहण किए जाते हैं - यह बोध कराया गया है। श्रमणोपासक

एक व्यक्ति के पास भोजन की सारी सामग्री उपलब्ध थी। आटा, दाल, घी आदि सब पर्याप्त मात्रा में थे। उसे बहुत तेज भूख लग रही थी। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा कि मुझे भूख लग रही है, मुझे भूख लग रही है।

उसकी यह स्थिति देखकर उसके एक सुज मित्र ने कहा- “अरे! तुम चिल्ला क्यों रहे हो? यदि तुम भूखे हो तो तुम्हारे पास भोजन की सामग्री पड़ी हुई है। जब सारी वस्तुओं का संयोग है तो उपयोग क्यों नहीं करते?”



-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

वह व्यक्ति बोला- “मेरे पास संयोग है, किंतु मुझे इसका उपयोग करना नहीं आता।”

मित्र ने कहा- “इसीलिए तुम भूखे मर रहे हो।” क्षुधा-तृप्ति के लिए संयोग के साथ उपयोग भी होना चाहिए। वर्तमान की स्थिति भी कुछ ऐसी ही बन रही है। हमें श्रेष्ठतम वस्तु मानव तन प्राप्त हो गया है। आवश्यकता है इस संयोग का सही दिशा में उपयोग करने की। केवल सुख के लिए चिल्लाने मात्र से सुख प्राप्त नहीं हो सकता। श्रमणोपासक

विहार विवेक

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

करते हैं चौमासे में स्थिरवास,
किसी जीव की नहीं करते घात।
पंच महाव्रत नित्य स्पर्शित करते,
धन-दौलत की इन्हें नहीं कोई आस॥

ऐसे होते हैं सच्चे संत मुनिराज।
जी हाँ! ऐसे हैं हमारे गुरु महाराज...॥

ना गाड़ी मोटर, ना कोई स्कूटर,
चलते हैं जो बिना जूते और चप्पल।
न चुभते काँटों की परवाह है,
ना कंकड़-पत्थरों का कोई डर॥

ना सर पर कोई छाँव,
जलती सड़क पर भी थमते नहीं पाँव।
अपना सामान अपने ही कंधों पर लाद,
विहार करते हैं यह नंगे पाँव॥
हाईवे पर दौड़ते वाहन,
तेजी से दौड़ते ट्रकों की रफ्तार।
मोटर गाड़ियों की इस भीड़ में भी,
काँपते नहीं इनके पाँव॥

विहार विवेक का पूरा रखते ध्यान।
जी हाँ! ऐसे हैं हमारे गुरु महाराज....॥

ज्ञान की ज्योत जलाने को,
अंधकार अज्ञान का हटाने को।
धर्म की अलख जगाने को,
नहीं देखते ये पाँव के छालों को॥

गाँव-गाँव, शहर-शहर पैदल चलते,
बोते जाते धर्म के बीज।
यह चलते-फिरते कल्पवृक्ष हैं,
देते सबको सुंदर शीश्व॥

सुनो ना!! समझो अब!!
त्यौहार दीपावली का अब बीत गया,
बारी आती है अब अहो विहार की।
एक नहीं! दो नहीं! चार नहीं!
बारी है अब आठ मास के त्यौहार की॥
बारिश का मौसम तो बीत गया,
विहार सेवक बनने का मौसम आ गया।
विहार में विवेक रखकर अपना,
फर्ज निभाने का मौका आ गया॥
समझाओ ना!! कैसे रखना विहार विवेक।
विहार है तीन शब्दों का मेल,
आओ समझें इसका विवेक॥

वियानी - विधि, वंदन, व्यवहार।
विहार में पूरा समय संतों के सांनिध्य में
इन्वेस्ट करना जरूरी है।
एक क्षण भी ना हो बेकार
ख्याल इसका भी जरूरी है॥

यह सिर्फ विहार सेवा ही नहीं,
संतों से जुड़ाव की सेवा है।
वंदन व्यवहार ही हमारी पहचान बने,
ऐसा विवेक जरूरी है॥

जिस राह से गुजरे विहार सेवक,
सबके दिलों में बस जाए।
गंदगी ना छोड़ें पीछे,
स्वच्छ भारत अभियान जरूरी है।।

1 यानी - हृदय से सेवा, हर पल सेवा।
हृदय से सेवा करें हर संत की,
दिखावे का कोई काम नहीं।
विनयपूर्वक अर्ज करें,
भाषा विवेक भी जरूरी है।।

विहार सेवक मोबाइल अपना ऑफ रखें,
स्माइल ऑन रखना जरूरी है।
टेंशन का कोई काम नहीं,
आनंद का भाव जरूरी है।।

2 यानी - रिलेशन, रूल, रूटीन।
रिलेशन ऐसा हो कि,
सबसे अच्छा कनेक्शन बने।
रूटिन देखें साधु साधवियों की,
उनके नियम जानना भी जरूरी है।।
नहीं चाहिए उन्हें धन और दौलत,
नहीं अभिलाषा गाड़ी-बंगलों की।
बस अपनी बुरी आदतों की भेंट,
गुरुचरणों में चढ़ानी जरूरी है।।

बताओ ना!! क्या फल होता है?
विहार सेवा का।
तो सुनो!! ध्यान से....

विहार सेवा अनमोल सेवा है,
ज्ञानीजन फरमाते हैं।
कर्म काटने की चाबी हैं ये,
बहुत लाभ इससे बतलाते हैं।।

वाशित्रात्माओं के साथ चलने से,
शरीर रहता स्वस्थ और मस्त।
विहार सेवा निःस्वार्थ सेवा है,
जीवन में लाता शांति का बसंत।।

सत्कार मिलता, सम्मान मिलता,
स्वयं को परखने का
मौका मिलता है।

लाभ ले लो विहार सेवा का संध्या,
ऐसा मौका कभी-कभी ही आता है।।

चलते तो हैं पैर मगर,
मन शांत व स्थिर हो जाता है।
ज्ञानचर्चा होती जब किसी पड़ाव पर,
चेतन आनंद से भर जाता है।।

जागो श्रावक, उठो श्राविका,
न खोओ अपना अमूल्य समय।
शासन की धरोहर को संभाल लो,
बड़े कीमती हैं ये रत्नत्रय।।

विहार सेवा में समय देकर तो देखो,
किस्मत के ताले खुल जाएंगे।
चार कदम साथ चलकर तो देखो,
सारे पाप धुल जाएंगे...।।
कर्म सारे कट जाएंगे...।।



जाते-जाते भूल न जाना, लौटकर गुरुवर जल्दी आना।
संघ शक्ति की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।
दृढ़ संयम की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।।

पधारजे घणी खम्मा से गूँजता रहा राठौर परिसर युग निर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का ऐतिहासिक, अलौकिक 'साधना महोत्सव' चातुर्मास सोल्लास संपन्न

चातुर्मास के दौरान

- * 97 मासखमण
- * अनेक अठाइयाँ व तेले
- * पचरंगी तप
- * धर्मचक्र
- * 15 रंगी सामायिक
- * षट्त्रस तप
- * सामूहिक दया
- * पौषध
- * सैकड़ों आजीवन शीलव्रत
- * 441 कायाक्लेश (केशलुंचन) तप
आदि तपस्याओं से धर्म की
अद्भुत प्रभावना
- * 8 दीक्षा अनुज्ञा-पत्र गुरुचरणों में
समर्पित एवं दो दीक्षाएँ संपन्न
- * आजीवन आयंबिल की लड़ी का
शुभारंभ

निष्काम भाव से साधना करें

-आचार्य श्री राजेश

संयम की पूर्णता तक पहुँचना संयम की
सार्थकता है

-उपाध्याय प्रवर

जैन स्थानक, राठौर परिसर, नीमच (म.प्र.)।

जिनशासन की शान हैं, गुरु राम जिनका नाम है।
वर्तमान के वर्धमान हैं, हम भक्तों के भगवान हैं।।

चातुर्मास को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन
संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता युवा
संघ, समता बालिका मंडल, नीमच आदि का
अनुकरणीय सराहनीय योगदान स्वर्णाक्षरों में अंकित हो

- * मुमुक्षु हितेश जी कांकरिया, मुमुक्षु यश जी कोटड़िया, मुमुक्षु काजल जी पितलिया एवं मुमुक्षु प्रनिधि जी पारख की जैन भागवती दीक्षा 22 जनवरी को जावद के लिए व मुमुक्षु चहेती जी मुणोत की जैन भागवती दीक्षा 17 फरवरी को निम्बाहेड़ा के लिए घोषित
- * तपस्वी श्री गगन मुनि जी म.सा. द्वारा चातुर्मास में 3 मासखमण तप संपन्न
- * नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा संपन्न

गया। स्थानीय संघ की सभी शाखाओं एवं सेवा समर्पित कार्यकर्ताओं ने गुरु एवं संघ समर्पणा के लक्ष्य से हर कार्य को साधने के लिए कमरकस मेहनत की और चातुर्मास एवं केन्द्रीय संघ सहित स्थानीय संघ में आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस चातुर्मास में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने तीन मासखमण तप पूर्ण कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया। सम्पूर्ण चातुर्मास में चारित्रात्माओं में अनेक तपस्याओं के साथ 18 मासखमण तप पूर्ण हुए। श्रावक-श्राविका वर्ग में इंदिरा जी नाहर 117 उपवास, सरिता जी मुणत 72 उपवास, सुशीला जी कांठेड़ 51 उपवास के साथ नीमच में 59 मासखमण एवं बाहर से पधारे तपस्वियों के 20 मासखमण तप के प्रत्याख्यान हुए। सम्पूर्ण चातुर्मास ऐतिहासिक रहा।

साधु जीवन आत्महित के लिए होना चाहिए

नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा सम्पन्न

16 नवम्बर 2023। प्रार्थना के प्रभास से आलोकित भोर में प्रभु एवं गुरुभक्ति का गुणगान किया गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र, प्रतिक्रमण, श्रुत आरोहक आदि का ज्ञानार्जन करवाया।

राठौर परिसर में प्रातःकालीन दैनिक क्रम में आयोजित प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए विश्ववन्दनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “भगवान महावीर का शासन 21 हजार वर्ष तक चलेगा। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं के बल पर निरंतर धारा प्रवाहित होती रहेगी। लगभग ढाई हजार वर्ष से ऊपर समय व्यतीत हो चुका है। अंत में दशवैकालिक सूत्र के चार अध्याय रहेंगे। उनका अध्ययन करके साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका एक भवावतारी होंगे। हम भी प्रयत्नशील बनें। हमारे भीतर यह भावना जगे कि -

हे प्रभो मेरी एक पुकार, मैं भी बन जाऊँ अणगार।

छोड़ के सारे पाप अठारह, मैं भी बन जाऊँ अणगार।।

मन सच्चा है, भाव सच्चे हैं तो भगवान हमारी भावना पूरी करेंगे। अभी मुमुक्षु प्रनिधि पारख सुपुत्री स्नेहा जी ललित जी पारख, राजनांदगाँव ने अपना प्रतिज्ञा-पत्र व पारिवारिकजनों ने अनुज्ञा-पत्र प्रस्तुत किया है। आज नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) का प्रसंग भी है। आज आपने महाव्रतों में प्रवेश पाया है। केवल एक शब्द इन्हें रमा लेना है-

‘अत्तहियद्वयाए’ ये साधु जीवन में आत्महित के लिए स्वीकार किया है, किसी को उपदेश देने या धर्म प्रचार के लिए नहीं। आत्महित के लिए धर्मारोधना हीनी चाहिए।

आत्महित यानी आत्मशांति, समाधि प्राप्त करना है। आत्मा के भीतर संक्लेश परिणाम नहीं होने चाहिए। शांत समाधि भाव, समभाव कर्मों की निर्जरा कराने वाले होते हैं।” आचार्य भगवन् ने जैसे ही श्री गगन मुनि जी

म.सा. के तीसरा मासखमण तप होने की घोषणा एवं मुमुक्षु प्रनिधि पारख की दीक्षा 22 जनवरी के लिए स्वीकृति प्रदान की तो सम्पूर्ण पाण्डाल जय-जयकारों एवं जयवंता-जयवंता के नाद से गूँज उठा।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) की विधि प्रारंभ की। दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए तीन करण तीन योग से सम्पूर्ण सावद्य हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह का त्याग करवाकर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिहग्रह महाव्रतों में आरुढ़ किया।

नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि आचार्य भगवन् की कृपा से जो यह संयम रत्न प्राप्त हुआ है, उसके लिए सदैव ऋणी रहूँगी।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मुनि जीवन स्वीकार करने में हमारा भी प्रयास होना चाहिए। सांसारिक सुखों में सच्चा आनंद नहीं है। सच्चा आनंद तो संयम में है। साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने 'गुरुवर तो परम उपकारी हैं, दर्शन भी मंगलकारी हैं' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने 'तपस्या की महिमा तो देवों ने गाई है' तप गीत प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु बहन प्रनिधि जी पारख ने अपने उद्गार में कहा कि हर कष्ट, हर दुःख में आपश्री जी की कृपादृष्टि मुझ पर बनी रही। सभी संत-सतियाँ जी म.सा. का उपकार मानती हूँ, जिन्होंने संयम बीज का रोपण किया। माता-पिता का भी उपकार मानती हूँ, जो आज अनुज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित कर रहे हैं। प्रतिज्ञा-पत्र का पठन मुमुक्षु बहन प्रनिधि जी पारख ने एवं अनुज्ञा-पत्र का पठन वीर पिता ललित जी पारख, राजनांदगाँव ने किया। वीर परिवार की ओर से सम्पत जी पुष्पादेवी पारख आदि पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित किया। सभा में जयवंता-जयवंता के स्वर अनवरत गूँज रहे थे।

संघ मंत्री व महेश नाहटा ने द्वय महापुरुषों के अतिशय का उल्लेख करते हुए मुमुक्षु बहन का परिचय दिया। इस अवसर पर मुमुक्षु नेहा जी सुपुत्री नवनीत जी ज्योति जी राखेचा, शिरपुर भी सभा में उपस्थित थीं। दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। देशभर के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने सभा का गौरव बढ़ाया।

मुमुक्षु प्रनिधि जी पारख, मुमुक्षु नेहा जी राखेचा एवं उनके परिजनों का श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ नीमच द्वारा आत्मीय बहुमान किया गया। बम्बोरा संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। मध्य प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री परम गुरुभक्त हिम्मत जी कोठारी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में जिज्ञासा समाधान, कार्यक्रम हुआ। बच्चों को शिविर में भेजने, दशवैकालिक सूत्र कंठस्थ करने, कम से कम 5 शास्त्रों का हिन्दी अर्थ पढ़ने की विशेष प्रेरणा दी गई। कई लोगों ने संकल्प ग्रहण किए।

साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री चित्तरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुनिता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने 'गुरु स्वस्थ रहें, अलमस्त रहें' गीतिका के माध्यम से शुभ भाव फरमाए।

न किसी की निंदा करना, न सुनना

17 नवम्बर 2023 | प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना एवं तत्त्वज्ञान कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. द्वारा श्री दशवैकालिक सूत्र, प्रतिक्रमण एवं श्रुत आरोहक के अध्ययन पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को धर्म का मर्म

समझाते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ‘पाँच प्रकार के ज्ञान बताए गए हैं- आभिनिबोधकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान। केवलज्ञान सर्वश्रेष्ठ है। ऐसा उत्तम ज्ञान जिन्होंने प्राप्त किया है, उन भगवान महावीर की नमस्कार करता हूँ। विनय, श्रुत, तपस्या, आचार ये चार समाधियाँ बताई गई हैं। लोगस्स का भावपूर्ण उच्चारण एवं धम्मो मंगलमुक्कट्टं पाँच गाथाओं का ध्यान लगाकर उच्चारण करने से आपको लगेगा कि मेरी अशांति कहाँ चली गई। श्रुतज्ञान के अध्ययन से ज्ञात होगा कि जो चीज मेरी नहीं है उसको मैं अपनी बताना चाहता हूँ, तभी समस्या खड़ी होती है और जो चीज मेरी है वह कहीं बाहर नहीं जाएगी। श्रुत का ज्ञान, आगम का ज्ञान हम पढ़ेंगे तो हमें प्राप्त होगा। संसार में जितनी भी बाहर की चीजें हैं वे केवल उपभोग के लिए हैं। उपभोग के लिए भी इसलिए कि अभी मैं संसार में रह रहा हूँ। उन चीजों के प्रति लगाव, आसक्ति नहीं होनी चाहिए। पकड़ने की कोशिश से समस्या पैदा हो जाती है। ईर्ष्या, द्वेष, निंदा ये दुर्गति के रास्ते हैं। उसके लिए सद्वृत्ति संभव नहीं है। जानते हुए भी इस बात से बचने की कोशिश नहीं करते हैं। हमें न किसी की निंदा करना है, न सुनना है। हमारी दृष्टि अच्छाई या बुराई क्या खोज रही है? हर किसी में अच्छाई या बुराई रहती है। किसी को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति से हम दूर रहें।’

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि ज्ञान सीखने-सीखाने में हमारी रुचि बढ़नी चाहिए। साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा. के मासखमण तप पर ‘तारा है सारा जमाना, गुरुवर हमको भी तारो’ भजन प्रस्तुत किया।

इस साधना महोत्सव चातुर्मास में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने अपूर्व आत्मबल एवं गुरुकृपा से तीसरा मासखमण तप पूर्ण कर गुरुचरणों में विशेष भेंट चढ़ाई। आपश्री जी पूर्व में 6 मासखमण, 1 से 21 तक की लड़ी, 3 अठाई, दो बार 9, 100 तेले, 27 माह एकांतर आदि कई तपस्याएँ कर चुके हैं। जयवंता-जयवंता की मधुर ध्वनि से सभा हर्षविभोर हो गई। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने मंगलवाड़ क्षेत्र स्पर्शन व अन्य प्रसंग प्रदान करने की विनती प्रस्तुत की।

अपना पुरुषार्थ करें, किसी से ईर्ष्या नहीं करें

18 नवम्बर 2023 | मंगलमय भोर के प्रस्फुटन पश्चात् आयोजित प्रार्थना में देव-गुरु-धर्म को समर्पित गुणगान किया गया। तत्पश्चात् दशवैकालिक सूत्र, जैन धर्म परिचय, प्रतिक्रमण, श्रुत आरोहक एवं तत्त्वज्ञान का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया।

विशाल धर्मसभा में उपस्थित जनमेदिनी को भगवान महावीर की पावन अमृतवाणी का पान कराते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ‘तीर्थंकर भगवान को भौतिक पदार्थों की कामना के लिए नमस्कार नहीं करना चाहिए। नमस्कार करने से गुणपरक दृष्टि का अवतरण होता है। साधुओं की नमस्कार ज्ञान, दर्शन, चारित्र के भावों के साथ किया जाता है। शरीर को नहीं, अपितु शरीर के माध्यम से आत्मा को नमस्कार किया जाता है।

ज्ञान पंचमी ज्ञान का प्रकाश फैलावे।

अज्ञान तिमिर को दूर हटा विकसावे।।

हमने बहुत व्याख्यान सुने उसके बावजूद हमारे भीतर विरक्ति जागृत नहीं हो रही है। किंतु कुछ लोग ऐसे होते हैं कि एक व्याख्यान सुना और उनके भीतर बदलाव की स्थिति बन जाती है। हलुकर्मों जीव को थोड़ा-सा अवसर मिलते ही जागरूक हो जाता है। कर्मों की मार बड़ी भारी है। ज्ञान नहीं मिलना भी परीषह है और ज्ञान मिलना भी परीषह है। कोई दूसरा ज्ञानी हो रहा है तो उससे ईर्ष्या मत करो। अपना-अपना पुरुषार्थ करो। एक गाथा, सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी याद नहीं होते - ऐसा कई लोग कहते हैं किंतु याद करने के लिए पुरुषार्थ करना होगा। याद करने के लिए सर्वप्रथम हाथ जोड़कर प्रभु महावीर और सुधर्मा स्वामी को नमन करें।

फिर अपने गुरुवर को नमन करते हुए 21 नमोत्थु णं का उच्चारण करें। ज्ञान पंचमी के दिन पौषध सहित उपवास करें तथा नमो णाणस्स की 21 बार माला फेरें, 21 लोणस्स का ध्यान करें, 21 नमोत्थु णं का ध्यान करें और ज्ञान के प्रति निरंतर भाव बनाएँ। यह ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयीपशम करने का माध्यम है।”

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम, संस्कार, सदगुण ये सब सत्संग से आते हैं। संयम शतक में हर घर से, हर संघ से, हर शहर से एक दीक्षा होनी चाहिए। आपश्री जी ने आगामी मई माह में 15 दिवसीय मोक्ष आराधना शिविर लगाने की प्रेरणा दी।

साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. ने ‘तन-मन-रसना को वश करना है साधना’ तपस्या गीत प्रस्तुत किया। प्रतिदिन धार्मिक पुस्तक का एक पृष्ठ पढ़ने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा. ने मासखमण तप पूर्ण करके अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया।

मुमुक्षु हितेश जी सुपुत्र हेमकरण जी-ऊषा जी कांकरिया, धामणगाँव रेलवे और मुमुक्षु यश कोटड़िया सुपुत्र दिनेश जी-जयश्री जी कोटड़िया, नंदुरबार की दीक्षा हेतु अनुज्ञा-पत्र व आज्ञा-पत्र गुरुचरणों में प्रस्तुत किए गए।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा का वर्षण करते हुए दोनों की दीक्षा हेतु 22 जनवरी 2024 के लिए आगारों सहित स्वीकृति प्रदान की। ‘जयवंता-जयवंता’ एवं ‘राम गुरु विराट है, दीक्षाओं का ठाठ है’ के जयघोष से सभा प्रफुल्लित हो उठी।

भाग्येश्वर मंदिर में आयोजित एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु भाई हितेश जी कांकरिया, वीर परिजनों हेमकरण जी ऊषा जी कांकरिया एवं परिजनों दिनेश जी जयश्री जी कोटड़िया तथा संघ अधिकारियों आदि का स्वागत-अभिनंदन श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच द्वारा तिलक, माला, शॉल से किया गया।

स्वयं का स्वयं पर नियंत्रण संयम है

19 नवम्बर 2023 | रिविारीय समता शाखा से दिन का शुभारंभ हुआ, जिसमें श्रद्धालु भाई-बहनों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कक्षा में दिशा-निर्देश दिया। प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में भक्तिरस से जन मन को पावन करते हुए अपनी मधुर वाणी में फरमाया कि “ध्रुवपद में रमण करने वाले हमारे स्वामी वंदनीय, पूजनीय हैं। भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति करते हुए ये शब्द उद्धृत हुए हैं। निष्काम भाव से साधना करने पर यह अवस्था प्राप्त होती है। निष्काम मतलब कोई कामना नहीं, कोई याचना नहीं, कोई अभिलाषा नहीं, पूर्ण तृप्ति है। जब हमारे भीतर तृप्ति का भाव उतरगा तभी साधना की परिपूर्णता होगी। वह तृप्ति बड़ी महत्वपूर्ण है। संयम साधना से ही यह तृप्ति हो सकती है। जब तक तृप्ति नहीं मिलेगी, संसार में हमारा जन्म-मरण होता रहेगा। मीत मंगल है, जन्म मंगल नहीं है। लोग मृत्यु का महोत्सव नहीं मनाते हैं। साधना का क्षेत्र मृत्यु का महोत्सव बनाने वाला होता है। संलेखना भाव राग, द्वेष रहित रहना चाहिए तभी निष्काम मृत्यु की प्राप्ति होगी। वह उसके जीवन का सच्चा महोत्सव है। साधना का अर्थ जिंदगी के उद्देश्य की प्राप्ति करना है। आराधना का मतलब उसमें सफल हो जाना। हमने साधनाएँ बहुत की, कितनी ही तपस्याएँ की, पौषध किए, परीषहों को सहन किया, किंतु अंतिम समय में हमारा रिजल्ट सही नहीं आया। वास्तव में संयम जीवन जीने पर ही मालूम पड़ेगा कि संयम

मुमुक्षु हितेश जी सुपुत्र हेमकरण जी-ऊषा जी कांकरिया, धामणगाँव रेलवे और मुमुक्षु यश कोटड़िया सुपुत्र दिनेश जी-जयश्री जी कोटड़िया, नंदुरबार की दीक्षा हेतु अनुज्ञा-पत्र व आज्ञा-पत्र गुरुचरणों में प्रस्तुत किए गए।

क्या होता है? संयम कोई कठिन नहीं है। जिसने अपने आपको नियंत्रित कर लिया, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। स्वयं का स्वयं पर आधिपत्य हीना संयम है। निष्काम भाव की साधना में यश की, पद की, प्रतिष्ठा की कामना लुप्त हो जाती है। जो अपने आप में मौजूद ही जाता है, उसकी पद-प्रतिष्ठा की इच्छा नहीं होती है।”

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार का सुख क्षणिक है। सच्चा सुख संयम में है। वैराग्य की भावना को आगे बढ़ाएँ। प्रवचन सभा से पूर्व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के नवमनोनीत कार्यकारिणी सदस्यों को प्रेरक मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि “धर्म साधु-साध्वी पर टिका हुआ है। उनके संयम जीवन में हम सहयोगी बनें। हम भी जिनशासन की निष्काम सेवा करें। अपनी साधना को आगे बढ़ाएँ। मैं सब कुछ कर सकता हूँ, यह आत्मविश्वास होना चाहिए। सदैव कुछ न कुछ सीखने की इच्छा होनी चाहिए। काम समय पर करना और समय से पूर्व काम होने का लक्ष्य होना चाहिए। संघ सेवा समर्पित भाव के साथ करें।”

श्री साधुमार्गी जैन संघ, जावरा ने आचार्य भगवन् के आगामी वर्ष 2024 के पावन चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। सुंदरम् होटल में नवीन कार्यसमिति के सदस्यों को श्वेता जी बच्छावत, कोलकाता ने नेतृत्व कला के गुर सिखाए।

आत्मा में रमण करें

20 नवम्बर 2023। सूर्योदय के साथ ही मंगलमय प्रातःकालीन प्रार्थना में पंच परमेष्ठी का गुणगान किया गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्व की जानकारी प्रदान की।

प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “सत्य, असत्य में परिणत नहीं होता है। सत्य, सत्य में और असत्य, असत्य में परिणत होता है। गीता में कहा गया है कि असत्य से कभी भी विद्यमानता प्रकट नहीं होती। पुद्गल का परिणमन पुद्गल में होगा और जीव का जीव में होगा। शरीर परस्पर सभी प्रकार के जीवों में बंधेगा। जीव, जीव में और जड़ पदार्थ जड़ में बंधेगा। हमारे काम आने वाली चीज क्या थोड़े काल के लिए हमारे साथ जुड़ी है या हमेशा हमारे साथ रहती है। जिसने हमेशा हमारा साथ निभाया और साथ निभाएगा वह सत्य है। जितने लोग हमारे साथ हैं वे हमारे लिए असत्य हैं। सत्य की पहचान करना मतलब अपने आपकी पहचान करना। एक ही चीज हमें देखनी है कि आत्मा के साथ रमण कर रहे हैं या अनात्मा में रमण कर रहे हैं। वो ही हमारे सुख-दुःख को परिभाषित करती है। कौन सुखी है? सुनिश्चित उत्तर है कि जो आत्मा में रमण करता है। हमारी पूरी साधना हमें अनात्मा से खींच कर आत्मा में ले जाती है। आत्मा सत्य है, जगत् मिथ्या है। भगवान ने कहा है कि साधु नीचे जमीन देखकर चले ताकि किसी जीव की घात न हो। कई लोग कहते हैं कि हम महाराज के दर्शन करने जाते हैं तो वे नजर उठाकर नहीं देखते हैं। तो भाई हम आपकी मानें या भगवान की मानें? नजर उठाकर देखना ठीक है या नीचे जमीन देखकर चलना?” सभी श्रद्धालु- ‘नीचे जमीन देखकर चलना ठीक है।’

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म की ताकत जैसे-जैसे बढ़ती है, वैसे-वैसे जीवन में सरलता बढ़ती है। साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ‘बहुश्रुत तपस्वी रत्न, यतना में रहते मगन’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

जिनेश्वर की स्तुति से दुःख-दुर्भाग्य दूर होते हैं

21 नवम्बर 2023। प्रातःकालीन मंगल प्रार्थना एवं श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. द्वारा तत्त्वज्ञान कक्षा में ज्ञानार्जन करवाया। धर्मसभा में सिरिवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतमय वाणी में मार्गदर्शन प्रदान

करते हुए फरमाया कि “प्रभु स्मरण से दुःख, दुर्भाग्य दूर ही जाते हैं। दुःख मोह कर्म से, दुर्भाग्य नामकर्म से होता है। ऐसा व्यक्ति जहाँ जाता है वहाँ ठोकरें खाता है। असाता वेदनीय कर्म से भी दुःख होते हैं। भगवान महावीर असाता वेदनीय कर्म से भी विचलित नहीं हुए। हमने भव-भव में दुष्कार्य किए हैं, जिनके कारण दुःखों का उपार्जन होता है। दुःख, दुर्भाग्य जिनेश्वर भगवान की स्तुति से दूर ही जाते हैं। इसके लिए जिनेश्वर देव की वाणी को जीवन में रमाना होगा। जीव-अजीव, पुण्य-पाप, आश्रव-संवर, निर्जरा-बंध, मोक्ष, नवतत्त्व को जिसने समझ लिया उसकी दृष्टि हेय-ज्ञेय-उपादेय बन जाने से समकित निर्मल हो जाएगी और इससे आसक्ति घटती जाएगी। आसक्ति जीव को भारी करने वाली है। धर्म सिद्धांत की दृढ़ता आत्मा को हलका करने वाली है।”

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि घर, परिवार, मोबाइल से हमारी गहरी आसक्ति है। इसे छोड़ने का प्रयास करें, नहीं तो इनसे हमारी गति बिगड़ेगी। साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रगति श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने ‘गाओ रे गाओ रे गीत, सब गाओ राम गुरु की जय बोलो रे’ गीत प्रस्तुत किया।

कंजाड़ा एवं मोरवनबाँध संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत की। समरथ जी चौधरी-नीमच ने एक तेला, 12 उपवास, आजीवन पक्की नवकारसी एवं 36 वंदना प्रतिदिन करने आदि कई प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

स्वाद के लिए नहीं, साधना के लिए भोजन करें

22 नवम्बर 2023 प्रातः प्रार्थना एवं दशवैकालिक सूत्र, स्वाध्याय, जिज्ञासा-समाधान का ज्ञानार्जन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में हुआ। राठौर परिसर स्थित प्रवचन स्थल पर धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति नयनाभिराम थी। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य अनुपम वाणी में फरमाया कि “यतना से भोजन करना भी साधुचर्या का अंग है। स्वाद के लिए भोजन नहीं करना अपितु समाधि के लिए भोजन करना है। भूखा व्यक्ति न लुखी देखता है, न चुपड़ी हुई, उसे तो पेट भरना है। कई लोग कहते हैं कि बासी (रात्रि का) नहीं लेना चाहिए, लेकिन भगवान ने स्वयं लिया। जिस भोजन में लार पड़ गई हो, दुर्गन्ध आने लग गई हो, ऐसा आहार चाहे ताजा हो या बासी हो; उसका वर्जन करने की बात कही गई है। मूल बात यह है कि भूख मीठी होती है। दीनता के भाव नहीं आने चाहिए। दीनता में चेहरे का नूर समाप्त हो जाता है। अदीनता में अपना गौरव बना रहता है। साधु को अपनी साधुचर्या का भान रहता है कि मैं दीनता से नहीं अपितु वीरता से साधु बना हूँ। यह वीरता बनी रहनी चाहिए। श्रावक को जीव-अजीव तत्त्वों का ज्ञाता होना चाहिए। जो जीव-अजीव को नहीं जानता वह व्रत-आराधन नहीं कर पाएगा।” आपश्री जी ने सुनंदा चारित्र की सुंदर व्याख्या प्रस्तुत की।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने ‘जो जिनवर के गुण गाता है वह भवसागर तिर जाता है’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमें आत्मा पर ध्यान देना है। चौबीस घण्टे में से इस नाशवान शरीर के लिए हम कितना समय दे रहे हैं और अजर-अमर आत्मा के लिए कितना समय दे रहे हैं? साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने ‘गुरु का पद प्रभु पद से भी ऊँचा’ गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया।

विहार सेवाकर्मी शिविर में साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने शुद्ध भिक्षा विधि, धोवन पानी, व्यसनमुक्ति, संस्कार जागरण आदि की जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, नीमच संघ अध्यक्ष सहित अनेक गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। पुर व भीलवाड़ा संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

संसार असार है, सार निकालें

23 नवम्बर 2023 | प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र स्वाध्याय व जिज्ञासा समाधान के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

धर्मसभा में दयानिधान, कृपानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य अमृतवर्षिणी वाणी में फरमाया कि “धर्म के दो भेद हैं- निश्चय और व्यवहार। निश्चय धर्म अभेद है, जिसमें कोई भेद नहीं है। शुद्धात्मा का अनुभव होना यह निश्चय धर्म है। व्यवहार धर्म के दो भेद- अणगार धर्म और आगार धर्म, निश्चय धर्म तक पहुँचने के साधन हैं। सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण के माध्यम से हम शुद्धात्मा की अनुभूति करते हैं। आत्म-परिणति में चलते रहें इसके लिए क्रियाएँ की जाती हैं। किंतु निश्चय धर्म एक है। निश्चय धर्म को जो प्राप्त करेगा वह मुक्ति को वरेगा। पोशाक हमें पार लगाने वाली नहीं है किंतु पोशाक से जो भाव बनेंगे वे शुद्धात्मा की दिशा में ले जाने वाले बनेंगे। संसार असार है, शरीर छूटने वाला है। जब तक इन्द्रियाँ शिथिल नहीं होती, उनसे धर्मारोधना कर लेनी चाहिए। संसार से सार निकालें।” **‘सुंदर हो संस्कार भविकजन सुंदर हो संस्कार’** फरमाते हुए सुनंदा चारित्र के माध्यम से नई-नई प्रेरणाएँ आचार्य भगवन् ने दी।

परम गुरुभक्त भंवरलाल जी पिरोदिया-रतलाम के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। पारसमलजी पितलिया-मोरवन ने 1800 सामायिक, 325 दिन बड़ा स्नान का त्याग व 321 दिन पौरसी के पच्चक्राण ग्रहण किए।

धैर्य से कठिनाइयाँ पार हो जाती हैं

24 नवम्बर 2023 | प्रभु एवं गुरुभक्ति से सराबोर मंगलमय प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् दशवैकालिक सूत्र व जिज्ञासा समाधान के माध्यम से श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने विशेष ज्ञानार्जन करवाया।

नीमच की पावन धरा पर प्रवचन सभा में जन-जन गुरुदेव की अमृतवाणी से पावन होने के लिए जनमेदिनी के रूप में उपस्थित थे। एकदम शांत-प्रशांत वातावरण में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी सिंहगर्जना में फरमाया कि “शांति के स्वरूप की प्राप्ति के लिए धैर्य की स्वीकार करो। मन की अधीर बनाओगे तो शांति नहीं मिलेगी। आज हम देखें तो जैन धर्म का हास होता जा रहा है। जीवन का आनंद शांति और सहिष्णुता के खम्भों पर टिका हुआ है। सहिष्णुता मतलब कठिनाइयों को सहन करने का सामर्थ्य होना चाहिए। कितने ही कष्ट आएँ मैं सहन करूँगा। मन में कोई विषाद पैदा नहीं होना चाहिए। सहने के लिए मन में धैर्य होना बहुत जरूरी है। यदि धैर्य होता है तो सारी कठिनाइयों से पार पाया जा सकता है। सारी सफलताएँ धैर्य के आधार पर प्राप्त होती हैं। मोक्ष जाने का शॉर्टकट कौन-सा? हमारे भीतर ऐसी भावना पैदा ही कि कब तक संसार में रहूँगा। मुझे जल्दी से जल्दी मोक्ष कैसे मिल सकता है। ऐसी तत्परता, ऐसी तड़पन पैदा नहीं होगी तब तक हम मोक्ष कैसे पहुँचेंगे? हमारी लगन पैदा होगी तो मंजिल दूर नहीं है।” सुनंदा चारित्र की सुन्दर व्याख्या आचार्य भगवन् के श्रीमुख से श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कपड़े बदलते हैं, रिश्ते, गाड़ी, मोबाइल आदि बदलते हैं, लेकिन अपने आपको नहीं बदलते। आत्मा में लगे मैल को साफ करना होगा, कषाय कम करने होंगे। साधु बनें, न बन सकें तो श्रावक अवश्य बनें। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। चातुर्मास में क्या खोया, क्या पाया इस पर प्रस्तुति दी गई। निम्बाहेड़ा संघ ने विभिन्न प्रसंगों हेतु भावभरी विनती प्रस्तुत की।

अपूर्व कृपा बरसाते हुए आचार्य भगवन् ने **मुमुक्षु चहेती जी मुणत** सुपुत्री अभिषेक जी-हीना जी मुणत,

रतलाम की जैन भागवती दीक्षा **17 फरवरी** के लिए घोषित की। सम्पूर्ण पाण्डाल जय-जयकारों से चहक उठा और चारों तरफ हर्ष का वातावरण छा गया।

शांति हमारे भीतर है

25 नवम्बर 2023 | प्रार्थना की पावन कड़ियाँ कर्णगोचर होते ही प्रार्थना के शब्द स्वतः ही उच्चरित होने लगे। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र का ज्ञानार्जन प्रदान किया। धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति नयनाभिराम लग रही थी। संयम साधना के सजग प्रहरी आचार्य भगवन् ने धर्मसभा को अमृतवाणी रूपी रस का पान कराते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “शांति का स्रोत हमारे भीतर है, उसे भीतर से ही प्राप्त करना होगा। हमें शांति प्राप्त क्यों नहीं हो रही? क्योंकि हमने आधार-आलम्बन सही नहीं लिया है। शांति प्राप्त करने के लिए

“दीक्षा आप लीजिए, औरों को दिलाइए। जो दीक्षा लेना चाहे उसका साथ दीजिए।”

आधार शुद्ध होना चाहिए। फालतु का जंजाल हमारे भीतर अशांति की पैदा करता है। हम काम की वृत्तियों को हटाकर सात्विक क्रिया करेंगे तो शांति मिल जाएगी। हम साधना, स्वाध्याय कर रहे हैं, उसका आलम्बन क्या है? धैर्य, शांति, सहनशीलता नहीं हैं तो जीवन में शांति की प्राप्ति नहीं हो पाएगी। कब तक सहना? जब तक जीवन है तब तक। सहना आ जाए तो सारी समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। दीक्षा लेकर संयम पालन से बढ़िया काम दूसरा नहीं हो सकता। दीक्षा आप लीजिए, औरों को दिलाइए। जो दीक्षा लेना चाहे उसका साथ दीजिए।”

सम्पूर्ण सभा ने इन पंक्तियों को दोहराया। प्रेरणादायी सुनंदा चारित्र भाग आज पूर्ण हुआ।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने ‘जो जिनवर के गुण गाता है, वह भवसागर तिर जाता है’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मन, वचन, काया को शुद्ध निर्मल बनाएँ। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने नीमच संघ की श्रद्धा, भक्ति की सराहना करते हुए श्री गौतम मुनि जी म.सा. की रचना प्रस्तुत की।

साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ‘तेरा कैसे कर्ज चुकाऊँ, कितने अहसान गिनाऊँ, तू देकर भूलने वाला है, मैं लेकर हाथ फैलाऊँ’ गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया।

30 नवकार महामंत्र स्मरण करने का नियम कई लोगों ने लिया। निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ संघ ने आगामी चातुर्मास एवं दीक्षा प्रसंग की विनती गुरुचरणों में अर्पित की। आचार्य भगवन् ने कृपा वर्षण करते हुए **22 जनवरी 2024** को होने वाली दीक्षाएँ **जावद** में एवं **17 फरवरी 2024** को होने वाली दीक्षाएँ **निम्बाहेड़ा** हेतु साधु मर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित स्वीकृति प्रदान की। ‘**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है**’ एवं जय-जयकारों से सम्पूर्ण प्रवचन स्थल गूँज उठा। देशभर में हर्ष की लहर छा गई। ‘**चातुर्मास में क्या खोया, क्या पाया**’ विषय पर अनेक वक्ताओं ने मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत की।

जो अटका, वो भटका

26 नवम्बर 2023 | प्रातःकाल से ही प्रवचन स्थल पर हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ आज किसी विशेष अवसर को परिलक्षित कर रही थी। आज का विशेष अवसर था रविवारीय समता शाखा के आयोजन का। आचार्य भगवन् द्वारा जन-जन के जीवन उद्धार हेतु प्रदत्त यह विशेष आयाम हर किसी की रग-रग में बस गया है। प्रातःकालीन रविवारीय समता शाखा में समता आराधना हेतु श्रद्धालुओं का उत्साह देखने लायक था। तत्त्वबोध का ज्ञान श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया।

अमृतवाणी के पावन निर्झर से उपस्थित श्रद्धालुओं को आत्मतृप्त करते हुए धर्मसभा में युगनिर्माता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “त्याग की महिमा अपरम्पार हैं। जो त्यागता हैं वो पाता हैं, जो त्याग नहीं पाता वो अटककर रह जाता हैं। हमारा मन कहीं अटका रह गया, तो उसे भटकन ही मिलेगी। उसको किनारा मिलना मुश्किल हैं। पकड़ी मत, छोड़ी। छोड़ने की दृष्टि आते ही समाधि आ जाएगी। संतों की संगति यह कहती हैं कि छोड़ी, जो संग्रह करके रखा हैं उसको छोड़ी। जो पकड़ रखा हैं उसे छोड़ी और यदि वह छोड़ने की हमारी तैयारी हैं तो ही चातुर्मास की सार्थकता हैं। हमने जितना भी संग्रह किया हैं वह अशांति का कारण हैं। बिखेरते चले जाएँ तो शांति हमारे साथ रहेगी। जो भी हमें अशांति देगा उसे छोड़ते हुए आगे बढ़ें। संग्रह को हटाएँगे तो शक्तियाँ अपने आप प्रकट ही जाएँगी और शांति मिल जाएगी। उपाध्याय प्रवर द्वारा संयम तप की घोषणा हुई। जनचेतना जागृत हो गई, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं में उत्साह का संचार हुआ और सबका एक ही लक्ष्य हो गया तो कार्य सिद्धि होने में देर नहीं लगेगी।” आचार्य भगवन् के मुखारविंद से विदाई गीत का उच्चारण होते ही सभी की आँखें नम हो गईं-

‘चातुर्मास अब पूर्ण हुआ, मुनिगण करें विहार।

मित्रों रखना धर्म से ध्यार॥’

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारे अंदर अनंत शक्ति है। हम बहुत कुछ कर सकते हैं। मोक्ष जाने का सामर्थ्य है हम में। विश्वास के बिना एक दिन भी जिया नहीं जा सकता। लाखों भक्त हैं, सौ दीक्षाओं का लक्ष्य कोई बड़ी बात नहीं है।

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु की दृष्टि ही जीवन की सृष्टि है। हमें आध्यात्मिक साधना से जीवन सुशोभित करना है। आचार्य भगवन् का आत्मानुशासन निराला है। हम अपनी कमजोरी को दूर करें। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हम भाग्यशाली हैं जो हमें भगवान महावीर जैसे सुगुरु आचार्य श्री रामेश एवं गौतम स्वामी जैसे श्रुतनिधि उपाध्याय प्रवर का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। उपाध्याय प्रवर द्वारा प्रदत्त संयम शतक को पुरुषार्थ से पूर्ण करना है। संयम शतक का अभियान चलाना है। देश का कोई कोना बाकी नहीं रहना चाहिए।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने ‘अपने जीवन के जौहरी स्वयं ही बनें, क्या पता फिर यह मौका मिले ना मिले’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो सपनों में जीता है वह हकीकत में कुछ नहीं कर सकता है। कुछ लोग सपनों को हकीकत में बदलने का प्रयास करते हैं। तपस्या से कर्म खपाने हैं। तपस्या आनंद देने वाली है। गांधी परिवार ने इस चातुर्मास में सात मासखमण करके गुरुभक्ति का परिचय दिया है।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिसने परिवार को त्यागकर गुरु से संबंध जोड़ा है, वह संबंध भव-भव तक काम आएगा। संघ सेवा, शासन सेवा, गुरु सेवा को सर्वोपरि रखते हुए अहं को त्यागेंगे तो ही गुरु का आशीर्वाद मिलेगा। जो भी संघ विनती कर रहे हैं, उस गाँव या नगर में संख्या के अनुसार सवाया दया का आयोजन, जितने घर है कम

आचार्य भगवन् ने कृपा वर्षण करते हुए 22 जनवरी को होने वाली दीक्षाएँ जावद में एवं 17 फरवरी को होने वाली दीक्षाएँ निम्बाहेड़ा हेतु साधु मर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित स्वीकृति प्रदान की। ‘राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है’ एवं जय-जयकारों से सम्पूर्ण प्रवचन स्थल गूँज उठा। देशभर में हर्ष की लहर छा गई। ‘चातुर्मास में क्या खोया, क्या पाया’ विषय पर अनेक वक्ताओं ने मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत की।

से कम उसके आधे प्रतिक्रमण एवं जितने घर हो उसके चौथाई संवर कम से कम होने चाहिए।

साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा.,

**जो भी संघ विनती
कर रहे हैं, उस गाँव या नगर में
संख्या के अनुसार सवाया दया का
आयोजन, जितने घर है कम से
कम उसके आधे प्रतिक्रमण एवं
जितने घर हो उसके चौथाई संवर
कम से कम होने चाहिए।**

साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने 'ओ गुरुवर चरणों से हमको न जुदा करना' गीत प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया। आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने 'नाता जोड़ लिया गुरु से नाता जोड़ लिया' गीत प्रस्तुत किया।

नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष रघुराज सिंह जी चौरडिया, श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ अध्यक्ष जी सहित अनेक वक्ताओं ने गुरुचरणों में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने इस चातुर्मास को अविस्मरणीय व ऐतिहासिक बताया।

दयानिधि आचार्य भगवन् ने **मुमुक्षु काजल जी पितलिया** सुपुत्री श्री विजयेन्द्र जी-संगीता जी पितलिया, हैदराबाद की जैन भागवती दीक्षा हेतु **22 जनवरी 2024** के लिए जैसे ही घोषणा की। चारों ओर जय-जयकारों का नाद होने लगा।

साधना का परिणाम सिद्धि है तो साधना सार्थक है

27 नवम्बर 2023 प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना के बाद श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्व का बोध प्रदान किया। धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए फरमाया कि "किसी भी कार्य का प्रारंभ करना एक बात है और उसे आगे बढ़ाना दूसरी बात। हर कार्य की पूर्णता महत्त्वपूर्ण है। कार्य शुरू करने वाले बहुत हैं, लेकिन पूर्णता को प्राप्त करने वाले कम हैं। हमारी साधना का परिणाम यदि सिद्धि है तो वो साधना सार्थक है। अनेकानेक साधनाएँ करने के बाद भी अंतिम चरण में भावनाएँ बिगड़ जाती हैं। विचार साधना के विपरीत बन जाएँ, चिंतन अधोगामी बन जाए तो आप धर्म से दूर हट रहे हैं। शास्त्र कहते हैं कि अनंतानंत काल तक भी संसार भ्रमण करना पड़ सकता है। पूर्णता तक कार्य को नहीं पहुँचाया जाए तो किए-कराए पर पानी फिर जाएगा। संयम लेना अच्छा है, लेकिन संयम की पूर्णता तक पहुँचना, संयम की आराधना तक पहुँचना और भावों में संयम बनाए रखना ही संयम की सार्थकता है। संयम लेकर भी संयम कोरा रहना अनाथता है। हमारी साधना पूर्णता की हो। हमारे संकल्प, हमारी प्रतिज्ञा, निष्ठा, पवित्र भाव कायम रहे। बाहर के अवरोधों से, झंझावातों से विचलित करने वाले तूफानों से, चारों तरफ की जय-जयकारों से हमारा चित्त संयम मार्ग से न फिसले।"

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. फरमाया कि हमें लोभ प्रवृत्ति को छोड़कर संतोष वृत्ति को धारण करना है। साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने 'तेरे अहसानों का बदला चुकाया नहीं जा सकता' भाव गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने फरमाया कि साधना-आराधना में अपने भावों में सदैव संयम बनाए रखना चाहिए। वक्ताओं ने चातुर्मास के अनुभव प्रस्तुत किए। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। प्रत्येक पूर्णिमा को आचार्य भगवन् के दर्शनों का लक्ष्य रखने वाले विभिन्न क्षेत्रों के गुरुभक्तों सहित राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी ने आचार्यदेव के दर्शन कर व प्रवचन श्रवण का लाभ लिया।

नम आँखों से महापुरुषों को पुनरागमन हेतु विदाई

28 नवम्बर 2023 | प्रातः मंगलमय प्रार्थना पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. द्वारा धर्म तत्त्व का बोध प्रदान किया गया। राठौर परिसर स्थित प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने उपस्थित गुरुभक्तों को जीवन का मर्म समझाते हुए अपनी दिव्यदेशना में धम्म सद्धा चालीसा की पंक्तियों के साथ फरमाया कि -

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।

धर्माराधन नित करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

“धर्म हमारे मन की टूटने नहीं देता है। हमारे मन की गमगीन नहीं होने देता है। धर्म का प्रवाह पूरा बना हुआ है तो मन हरा-भरा रहेगा। वात्सल्य धर्म का बहुत बड़ा गुण है। वात्सल्य के आधार पर धर्म बढ़ता है। हमारा मन चिंतामणि रत्न के समान है। हम जो सोचेंगे वह हीगा। हम अच्छा सोचेंगे तो अच्छा हीगा और बुरा सोचेंगे तो बुरा हीगा। धर्म का रहस्य हमारे मन में, जीवन में निरंतर प्रवाहित होता रहे। साधुओं का आना और जाना स्वाभाविक प्रक्रिया है। चारित्रात्माएँ एक से दूसरे गाँव में विहार करते रहते हैं। जब तक साधु में विहार करने की क्षमता है तब तक उसे एक स्थान पर नहीं ठहरना चाहिए। चरैवेति-चरैवेति अर्थात् चलते रहो, चलते रहो। विदाई की बेला कठिन है। जब साधु-साध्वियों का विहार हो जाएगा तक उनकी जिम्मेदारी श्रावक-श्राविकाओं की होती है। उस जिम्मेदारी का ईमानदारी से निर्वाह करना चाहिए। मन स्वस्थ रहेगा तो धर्म की आराधना सही होगी। जहाँ वात्सल्य छलकता है वहाँ शिकायत और प्रतिक्रिया पैदा नहीं होगी।”

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि विनय और सरलता से आत्मा पवित्र हो जाती है। धन, परिवार कोई साथ देने वाला नहीं है। एक मात्र धर्म ही हमारा साथ निभाएगा। साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् का सुन्दर मन, सुन्दर वाणी सुनकर मन पुलकित हो गया है। आगे 100 दीक्षाओं का आह्वान जरूर पूरा होगा। उपाध्याय प्रवर ने हमको शुद्ध संयम पालन करना सिखाया है। साध्वीवर्याओं ने ‘आज है जुदाई, कल है विदाई’ विदाई गीत प्रस्तुत किया।

आगममर्मज्ञ आचार्य भगवन् ने ‘यह मीठा प्रेम का प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला’ गीतिका फरमाकर सभी को आत्मभावों से सराबोर कर दिया। वीर दादा नाहरसिंह जी राठौर, संघ अध्यक्ष जी आदि ने महापुरुषों के असीम उपकारों के प्रति कृतज्ञ भाव व्यक्त करते हुए हार्दिक क्षमायाचना के भाव गुरुचरणों में अर्पित किए। परम गुरुभक्त डालचंद जी घोड़ावत, सुमेरपुर के निधन पर पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

दोपहर में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 का जैन स्थानक भवन से सिद्धि विनायक कॉलोनी हेतु विहार हुआ। हजारों श्रद्धालुओं ने नम आँखों से महापुरुषों को विदाई दी। ‘जाते-जाते भूल न जाना, लौटकर गुरुवर जल्दी आना’ एवं ‘संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं’ आदि उद्घोषों से सम्पूर्ण मार्ग गुंजायमान हो रहा था। जैन-जैनेतर समुदाय ने उपस्थित होकर भावभीनी विदाई दी और सदैव कृपादृष्टि बनाए रखने की मंगलकामना की। ऐतिहासिक विदाई के समय चतुर्विध संघ आचार्यदेव के प्रति अहोभाव व्यक्त कर रहा था।

आचार्यदेव एवं उपाध्याय प्रवर आदि संतरत्नों का सिद्धि विनायक कॉलोनी, स्टेशन रोड स्थित सागरमल जी धींग के निवास पर जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। सभी को आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ श्रवण का लाभ मिला।

मन को सरल और व्यवहार को शुद्ध रखें

29 नवम्बर 2023 | प्रातः से ही धुंध का माहौल होने के कारण प्रातः 10 बजे तक महापुरुष बाहर नहीं पधार पाए। धुंध की समाप्ति के पश्चात् सिद्धि विनायक कॉलोनी स्थित सागरमल जी धींग के निवास पर आयोजित धर्मसभा

में धम्म सद्धा चालीसा की पंक्तियों के साथ परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने उपस्थित गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए फरमाया कि “धर्म श्रद्धा जब अंतर्मन से प्रकट होती है तो उसके दो परिणाम होते हैं- मन की सरल बनाना एवं व्यवहार को शुद्ध बनाना। मन सरल बनेगा तो उसका व्यवहार में असर आएगा। धर्म श्रद्धा के 5 लक्षण बताए गए हैं- सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था। सम का अर्थ होता है शांत होना। कषाय हटाएँगे तभी मन सरल होकर व्यवहार शुद्ध होगा। स्वयं की शांत बनाएँगे तो संवेग मन में मुक्ति की भावना जागेगी। निर्वेद का अर्थ होता है संसार के विषय-वासनाओं से उपरत हो जाना। पाँच इन्द्रियों के पाँच विषय बताए गए हैं- अच्छा सुनना, अच्छा देखना, अच्छा सूँघना, अच्छा स्वाद लेना और अच्छा स्पर्श होना। ये पाँच विषय प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर आकर्षित करते हैं। हमारा मन उनकी ओर आकर्षित होता है। यह आकर्षण धीरे-धीरे आसक्ति का रूप ले लेता है और वह आसक्ति हमें संसार में रोके रखने वाली है। किसी भी नए पदार्थ को देखकर कौतूहल पैदा न हो। आकर्षण पैदा नहीं होगा तो पाने की अभिलाषा पैदा नहीं होगी, जिससे आसक्ति भाव पैदा नहीं होगा। दुःखी प्राणी को देखकर मन में कम्पन्न होना अनुकम्पा है। आस्था आत्मा पर विश्वास है। हमें हमारा पुरुषार्थ जागृत करना होगा तभी हमें मुक्ति मिलेगी। महावीर जैसी शक्ति को हम प्रकट करें।”

साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने ‘धन्य है जिनवाणी’ गीत प्रस्तुत किया। सागरमल जी धींग एवं कलाबाई धींग ने भावाभिव्यक्ति देते हुए अधिकाधिक विराजने की विनती गुरुचरणों में रखी। बाहर से दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। कॉलोनी के जैन-जैनेतर सभी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

दुःख का कारण स्नेह है

30 नवम्बर 2023 | समता भवन जवाहर नगर, नीमच में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “अनादिकाल से मैं दुःख किसलिए भोग रहा हूँ? दुःख से मुक्त होकर सुखी जीवन अगर जीना है तो साधु और श्रावक जीवन है। श्रावक भी सुखी जीवन जी सकता है बशर्ते कि उसके अंतर में धर्म रम जाए। धर्म का अंश यदि हमारे भीतर आएगा तो हमारे जीवन में बदलाव होगा। संसार का प्रवाह है यह चलता रहेगा। संबंधों का, रिश्तों का जो जुड़ाव है वह भी होता रहेगा। कभी रिश्ते ज्यादा तो कभी कम होंगे। संबंध बनते और जुड़ते रहेंगे। उनमें ट्रस्ट मानकर जीवन कैसे जीया जा सकता है? ट्रस्ट मानकर जीने वाला यह मानता है कि यह सम्पत्ति मेरी नहीं है और यदि वह उस सम्पत्ति को अपनी मानने लग जाए तो दुःखी होगा। मेरी आत्मा ज्ञान-दर्शन से युक्त है। बाकी जितने भी संयोग हैं वे बाहर के हैं। ये संयोग निश्चित रूप से वियोग में बदलेंगे। हमारा एक भी संयोग रहने वाला नहीं है। हमारा आत्मभाव, आत्मचिंतन उन सबसे अलग होना चाहिए। सुखी जीवन का स्रोत है संयोग से मुक्त होना। स्नेह का बंधन तोड़ना बहुत मुश्किल होता है। दुःख का कारण स्नेह है। जो स्नेह का बंधन तोड़ता है, वह सुखी हो जाता है।”

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मानव जीवन धन कमाने की अंधी दौड़ के लिए नहीं मिला है अपितु धर्माराधना के लिए मिला है। मन अभी तक भरा नहीं है। आसक्ति कर्मबंध का कारण है।

भारत विकास परिषद् शाखा नीमच के सदस्यों ने द्वय महापुरुषों से मार्गदर्शन प्राप्त किया। भगवन् ने व्यसनमुक्ति अभियान को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। धनेरिया कलां हाई स्कूल में व्यसनमुक्ति जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रतिदिन दोपहर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम में जिज्ञासु महानुभावों ने अपने प्रश्नों का आगमसम्मत सटीक समाधान प्राप्त कर गुरुवर को जिनशासन का गौरव निरूपित किया। देशभर से महापुरुषों के दर्शनार्थ श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहा।

नीमच के शठौर परिसर स्थित प्रवचन पांडाल एवं संतों के विराजने के स्थान के पास से जब भी स्थानीय गुरुभक्तों एवं आस-पास के निवासियों का आना-जाना होता है तो हर कोई पाँच माह के स्वर्णिम साधना महोत्सव चातुर्मास के स्वर्णिम पलों को याद कर अतीत में खो जाता है। सूनसान पड़े इस परिसर को देखकर अहसास होता है कि यदि धर्म की रौनक है तो चारित्रात्माओं से है। चारित्रात्माओं के विहार के बाद धर्म के वैसे ठाठ नहीं लग पाते जैसे उनके सान्निध्य में होते हैं। संत-सती रत्न जहाँ भी विराजते हैं वहाँ धर्म-ध्यान, त्याग-तप एवं संयम जीवन का बसेरा हो जाता है। तो इस बात को आत्मसात् करते हुए संकल्प लें कि हमारी और देश की इन धरोहर की सार-सम्हाल हेतु हम सभी इनके विहार के समय सेवारत रहेंगे और इनकी पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

मासखमण	श्री गगन मुनि जी म.सा. (चातुर्मास में तीसरा मासखमण पूर्ण) साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा.
--------	---

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	गौतम जी गोलछा-नगरी, बाबूलाल जी मेहता-बम्बोरा, विमलचंद जी बैद-दिल्ली, हेमकरण जी ऊषादेवी कांकरिया-धामणगाँव रेलवे, दिलीप जी लता जी जैन-दिल्ली, रतनलाल जी कंचनदेवी रांका-ब्यावर/चेन्नई, रामचंद्र जी राठौड़-बरखेड़ा, अशोक जी सुनीता जी कटारिया, श्रीपाल जी वनिता जी नपावलिया-नीमच, अजीत जी रूपा जी मोगरा, पारस जी सुशीला जी रंगवाला, रतनलाल जी शर्मा, मोटराज जी, बाबूलाल जी-रघुनाथगढ़, जयराम प्रसाद जी तिवारी-बड़कागाँव, मालसिंह जी, रविंद्र कुमार जी लीला जी खिंदावत-मुम्बई, दशरथ जी खारोल-मुलतान, प्रेम जी विमलादेवी अब्भाणी-चित्तौड़गढ़, अनिल जी ओसवाल-नागदा, राजेन्द्र जी मंजू जी चौरड़िया-बालाघाट, विजय जी कटारिया-इंदौर, उदयलाल जी गुर्जर, गौतमचंद जी पिछोलिया-गंगापुर, गुलाबदेवी घोड़ावत-सुमेरपुर
पौषध	वर्ष में 60- विजय जी सांड-देशनोक वर्ष में 50- आजाद जी मेहता-रतलाम, सरोज जी मुणत-रतलाम
मासखमण	लोकेश जी सियाल-रतलाम, शीतल जी गांधी, दूसरा मासखमण पूर्ण- दिनेश जी गांधी-केसुंदा/नीमच
उपवास	21- भावना जी वया (23 के प्रत्याख्यान)
वर्षतिप	26वाँ- शांतादेवी कटारिया-रतलाम
नमोत्थु णं	वर्ष में 20,000- रतनलाल जी रांका, चेन्नई (4 लाख नवकार महामंत्र जाप)
गाथा का स्वाध्याय	वर्ष में 5 लाख- राजकुमारी जी पगारिया-जावरा वर्ष में 4 लाख- प्रतिमा जी बोथरा-रायपुर वर्ष में 2 लाख- किरण जी चौपड़ा-रायपुर वर्ष में 1 लाख- सपना जी नाहटा-रायपुर

-महेश नाहटा 

मुमुक्षु श्री हितेश जी कांकरिया

- नाम** : मुमुक्षु श्री हितेश जी कांकरिया
निवास स्थान : धामणगाँव रेलवे (महाराष्ट्र)
जन्म तिथि : 22 मई 1991
वैराग्यकाल : 8 वर्ष 6 माह
व्यावहारिक शिक्षा : बी.ई. - सी.एस.ई.
धार्मिक अध्ययन : श्री पुच्छिसु णं, श्री उववाई सूत्र की 22 गाथा, श्री सुखविपाक सूत्र, श्री दशवैकालिक सूत्र, श्री उत्तराध्ययन सूत्र, श्री नंदीसूत्र, श्री अनुत्तरोववाई सूत्र, भक्तामर स्तोत्रम्, चिंतामणि स्तोत्रम्, लघुदंडक, गति-आगति, गुणस्थान स्वरूप, 98 बोल का बासठिया, 102 बोल का बासठिया, श्री प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े, कर्मग्रंथ भाग-1, 2, 3
संभावित दीक्षा तिथि : 22 जनवरी 2024



पारिवारिक परिचय

- दादा जी-दादी जी** : स्व. श्री मांगीलाल जी-स्व. श्रीमती केशरबाई कांकरिया
पिता जी-माता जी : हेमकरण जी-ऊषा जी कांकरिया
बड़े पिता जी-माता जी : शुभकरण जी-उर्मिला जी, अशोक जी-किरण जी कांकरिया
चाचा जी-चाची जी : प्रमोद जी-सुनीता जी, संजय जी-निशा जी, शीतल जी-वर्षा जी कांकरिया
भुआ जी-फुफा जी : स्व. श्रीमती राजुबाई-स्व. श्री गोकुलचंद जी बोथरा, उज्ज्वलबाई-समीरमल जी बांठिया
नाना जी-नानी जी : स्व. श्री इंद्रचंद जी-ताराबाई बोथरा
मामा जी-मामी जी : अनिल जी-रोशनी जी बोथरा
मौसी जी-मौसा जी : सुषमा जी-शांतिलाल जी सिसोदिया, मंजुषा जी-देवेंद्र जी देशलहरा, निशा जी-संजय जी कांकरिया
भाई-भाभी : राहुल जी-तेजस्विनी जी, करण जी-करिश्मा जी, हिमांशु जी-अंजना जी
जीजी-जीजा जी : रश्मि जी-संदीप जी लोढ़ा, रीटा जी-आलोक जी नाहार, शिल्पा जी-महेन्द्र जी बुरड़, श्वेता जी-नितिन जी छाजेड़, स्मिता जी-जितेंद्र जी लुंकड़, पूजा जी-दर्शन जी बोथरा
भाई, बहन : आनंद जी, प्रणव जी, पलाश जी, खुश जी, गुंजन जी, खुशी जी, स्नेहा जी
परिवार से दीक्षित : श्री प्रणत मुनि जी म.सा.

मुमुक्षु श्री यश जी कोटड़िया

नाम	: मुमुक्षु श्री यश जी कोटड़िया
निवास स्थान	: नंदुरबार (महा.)
जन्म तिथि	: 08 दिसम्बर 1999
वैराग्यकाल	: लगभग 3 वर्ष
पदयात्रा	: लगभग 400 कि.मी.
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.कॉम.
धार्मिक अध्ययन	: श्री पुच्छिसुणं, श्री दशवैकालिक सूत्र 1-4 अध्ययन, श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1-10 अध्ययन, थोकड़े- 32 सिद्धांत, लघुदंडक, गति आगति
संभावित दीक्षा तिथि	: 22 जनवरी 2024



पारिवारिक परिचय

परदादा जी-परदादी जी	: स्व. श्री मिश्रीलाल जी-स्व. श्रीमती जतनबाई कोटड़िया
दादा जी-दादी जी	: स्व. श्री देवीचंद जी-पुखीबाई, नथमल जी-विरदीबाई, खेतमल जी-श्रीबाई कोटड़िया
पिता जी-माता जी	: दिनेश जी-जयश्री जी कोटड़िया
बड़े पिता जी-माता जी	: रामसुंदर जी-स्व. श्रीमती पुष्पाबाई, श्यामसुंदर जी-आशाबाई कोटड़िया
चाचा जी-चाची जी	: जयप्रकाश जी-संगीता जी, जयचंद जी-नैना जी, विजय जी-राखी जी, कमल जी-मंजू जी, कैलाश जी-मोना जी, रमेश जी-भावना जी कोटड़िया
भाई-भाभी	: महावीर जी-करिश्मा जी कोटड़िया
बहन-बहनोई	: खुशबू जी-अश्विन कुमार जी भंडारी, चंचल जी-रिषभ जी बरड़िया, सेजल जी-सागर कुमार जी पारख
भाई, बहन	: चंदन जी, दर्शना जी, पद्म जी, पारस जी, नमन जी, आदेश जी, नीरज जी, झलक जी, श्रीपाल जी, नयन जी, मोक्षा जी, लोकेश जी, केतन जी, झील जी
भतीजी, भांजा, भांजी	: धृति, सम्यक्, दार्शिक, रूही, प्राव्या, धैर्य
भुआ जी-फूफा जी	: चंद्राबाई-जसराज जी बोथरा, कमलाबाई-मुरलीधर जी बोथरा, गीताबाई (मंजूबाई)-पूनमचंद जी बोथरा, निर्मलाबाई-रमेशचंद जी बोथरा, जयवंती जी-नितिन जी बरड़िया, पन्ना जी-प्रफुल कुमार जी वैद
नाना जी-नानी जी	: स्व. श्री शांतिलाल जी-पुष्पाबाई बाफना
मामा जी-मामी जी	: मनोज कुमार जी-रंजनाबाई बाफना
मौसी जी-मौसा जी	: नीतूबाई-उत्तमचंद जी झाबक, मालती जी-दिनेश जी बाणगोता, आशाबाई-रिषभ जी बाणगोता, नविता जी-धीरज कुमार जी झाबक

मुमुक्षु सुश्री अंकिता जी बाफणा

- नाम : मुमुक्षु सुश्री अंकिता जी बाफणा
- निवास स्थान : शिरपुर (महा.)
- जन्म तिथि : 19 दिसम्बर 1994
- व्यावहारिक शिक्षा : बी.फार्मसी
- धार्मिक अध्ययन : पुच्छिसु णं, श्री उववाई सूत्र, श्री उत्तराध्ययन सूत्र एवं श्री दशवैकालिक सूत्र के कुछ अध्ययन, श्री सुखविपाक सूत्र, भक्तामर स्तोत्रम्, तत्त्वार्थ सूत्र आदि, थोकड़े- जैन सिद्धांत बत्तीसी, अष्टप्रवचनमाता, 67 बोल, लघुदंडक, गति आगति, जीवधड़ा, श्री प्रज्ञापना सूत्र, श्री भगवती सूत्र के थोकड़े, कर्मप्रज्ञप्ति एवं अन्य थोकड़े
- धार्मिक शिक्षा : आरुगबोहिलाभं
- धार्मिक परीक्षाएँ : जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1 से 7, श्रुत आराधक 1 से 5, जैन सिद्धांत भूषण, जैन सिद्धांत कोविद
- संभावित दीक्षा तिथि : 22 जनवरी 2024



पारिवारिक परिचय

- दादा जी-दादी जी : छगनलाल जी-स्व. श्रीमती सजनबाई बाफणा
- बड़े दादा जी-दादी जी : स्व. श्री मगनलाल जी-स्व. श्रीमती सूरजबाई बाफणा
- छोटे दादा जी-दादी जी : स्व. श्री धनराज जी-विमलाबाई, स्व. श्री सुरेशचंद जी-सुशिलाबाई बाफणा
- पिता जी-माता जी : अनिल जी-शोभा जी बाफणा
- चाचा जी-चाची जी : अभय जी-संगीता जी, अजय जी-रूपाली जी बाफणा
- भाई, बहन : अंकुश जी, आकाश जी, विरल जी, सोनम जी, सेजल जी
- भुआ जी-फूफा जी : अनिता जी-नरेंद्र जी भुरट, अभिलाषा जी-सुनील जी सुराणा
- नाना जी-नानी जी : लालचंद जी-स्व. श्रीमती मोहिनीबाई कोटड़िया
- मामा जी-मामी जी : रमेश जी-अनिता जी, हसमुख जी-ऊषा जी, खूबचंद जी-खुशबू जी, राजमल जी-संगीता जी कोटड़िया
- परिवार से दीक्षित : श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय भाई)
साध्वी श्री पुण्यप्रभा श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय मौसी जी)
साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन)

मुमुक्षु सुश्री काजल जी पितलिया

नाम	: मुमुक्षु सुश्री काजल जी पितलिया
जन्म स्थान	: बेंगलुरु
निवास स्थान	: हैदराबाद
मूल निवासी	: सिरियारी, जिला पाली (राज.)
जन्म तिथि	: 01 मार्च 1996
वैराग्यकाल	: लगभग एक वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.कॉम., इंटीरियर डिजाइनर
धार्मिक अध्ययन	: श्री दशवैकालिक सूत्र 1-4 अध्ययन, श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1 अध्ययन, पुच्छिसु णं, लोक-क्षेत्र, लघुदंडक, गति आगति, जीवधड़ा, गुणस्थान स्वरूप, जैन सिद्धांत बत्तीसी, श्री भगवती सूत्र एवं श्री प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े
धार्मिक परीक्षाएँ	: जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1-3
तपाराधना	: 1, 2, 3, 4, 5, 9
संभावित दीक्षा तिथि	: 22 जनवरी 2024



पारिवारिक परिचय

दादा जी-दादी जी	: शासन गौरव स्व. श्री पारसमल जी-स्व. श्रीमती सरलादेवी पितलिया
पिता जी-माता जी	: विजयेंद्र जी-संगीतादेवी पितलिया
चाचा जी-चाची जी	: रमेश जी-नीलमदेवी, दिलीप जी-विभादेवी पितलिया
भाई, बहन	: वंश, विरांश, खुशी, मुस्कान, दिशा, चाहत
भुआ जी-फूफा जी	: शोभादेवी-स्व. श्री प्रकाशचंद्र जी कटारिया (हुबली), स्व. श्रीमती मंजूदेवी-प्रकाशचंद्र जी गाँधी (मैसूर), प्रतिक्षा (पद्मा)-रमेश जी गाँधी (मनमाड़), संगीतादेवी-रोहित जी कटारिया (विजयवाड़ा)
नाना जी-नानी जी	: मंगलचंद्र जी-स्व. श्रीमती तारादेवी भलगट (बेंगलुरु)
मामा जी-मामी जी	: स्व. श्री गौतमचंद्र जी-स्व. श्रीमती चंद्रादेवी, अशोक जी-इंद्रादेवी, महावीर जी-विजयादेवी भलगट
मौसी जी-मौसा जी	: चंद्रादेवी-अमृतलाल जी पटवा (मारवाड़ जंक्शन) संतोषदेवी-सिद्धार्थ जी बोहरा (बेंगलुरु)
परिवार से दीक्षित	: साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा.

मुमुक्षु सुश्री आर्ची जी नाहर

नाम	: मुमुक्षु सुश्री आर्ची जी नाहर
निवास स्थान	: बेगूँ, चित्तौड़गढ़ (राज.)
जन्म तिथि	: 16 जून 1999
व्यावहारिक शिक्षा	: एम.सी.ए.
धार्मिक अध्ययन	: श्री दशवैकालिक सूत्र के कुछ अध्ययन, तत्त्व का ताला ज्ञान की कुँजी भाग-2 के कुछ थोकड़े, जैन सिद्धान्त भूषण, कोविद आदि
धार्मिक शिक्षा	: आरुणबोहिलाभं



संभावित दीक्षा तिथि : 22 जनवरी 2024

पारिवारिक परिचय

पड़दादा जी-पड़दादी जी	: स्व. श्री कन्हैयालाल जी-स्व. श्रीमती गट्टुबाई नाहर
दादा जी-दादी जी	: शांतिलाल जी-सुंदरदेवी नाहर
छोटे दादा जी-दादी जी	: स्व. श्री पारस कुमार जी-मधुदेवी, तेजमल जी-ललिता जी, अशोक कुमार जी-चंदना जी नाहर
पिता जी-माता जी	: राजेश जी-सुषमा जी नाहर
चाचा जी-चाची जी	: महावीर जी-शालू जी, पंकज जी-मोनिका जी, धीरज जी-स्नेहा जी, सुशील जी-स्वाति जी, राहुल जी-नीतू जी, महेन्द्र जी, अंकित जी-निकिता जी नाहर
भुआ दादी जी-फूफा जी	: लाडदेवी-स्व. श्री मोहनसिंह जी सिसोदिया, आशा जी-नवरतन जी जैन, इंद्रा जी-सुनील जी खमेसरा
भुआ जी-फूफा जी	: प्रेमदेवी-जसवंत जी पटवारी, ललिता जी-प्रदीप जी चौधरी, निशा जी-विपिन जी कोठीफोड़ा, मीना जी-धर्मेन्द्र जी आंचलिया, ज्योति जी-हेमंत जी चोरड़िया, मेधा जी-हेमंत जी सियाल
भाई	: पीयूष जी, अमन जी, चिराग जी, वैभव जी, आदि जी, भव्य जी, मनन जी, चिन्मय जी, रिषित जी, मितेश जी, मयंक जी, ध्रुव जी
बहन	: ज्योति जी, कीर्ति जी, श्रद्धा जी, सुहानी जी, माही जी, लव्या जी, टिया जी, भाविका जी, ध्रुवी जी, भूमि जी, नीरवी जी, जिनल जी
बड़े नाना जी-नानी जी	: नक्षत्रमल जी-प्रकाशबाई धाकड़ (बड़ीसादड़ी)
नाना जी-नानी जी	: स्व. श्री मदनलाल जी-गुलाबबाई धाकड़ (बड़ीसादड़ी)
मामा जी-मामी जी	: भूपेंद्र जी-मधु जी, मनोहर जी-संतोष जी, सुनील जी-तेजल जी, मुकेश जी-सोनल जी, रमेश जी-अनिता जी, मनीष जी-आशा जी, संदीप जी-श्वेता जी धाकड़
मौसी जी-मौसा जी	: अनिता जी-स्व. श्री जसवंत जी, शांता जी-शैलेष जी, त्रिशला जी-महेश जी, रेखा जी-अरुण जी, रीना जी-महावीर जी, अनु जी-सुशील जी

मुमुक्षु सुश्री प्रनिधि जी पारख

नाम	: मुमुक्षु सुश्री प्रनिधि जी पारख
निवास स्थान	: बेलगाँव, राजनांदगाँव (छ.ग.)
जन्म तिथि	: 21 नवम्बर 2000
वैराग्यकाल	: 4 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.एससी. द्वितीय वर्ष
धार्मिक अध्ययन	: श्री दशवैकालिक सूत्र, श्री सुखविपाक सूत्र, श्री उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, श्री भगवती सूत्र एवं प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़े, कर्मप्रज्ञप्ति 1-31
धार्मिक शिक्षा	: आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ	: भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी (2, 3)
तपाराधना	: मासखमण



संभावित दीक्षा तिथि : 22 जनवरी 2024

पारिवारिक परिचय

दादा जी-दादी जी	: स्व. श्री गेंदमल जी-स्व. श्रीमती कस्तूरीबाई पारख
पिता जी-माता जी	: ललित जी-स्नेहा जी पारख
बड़े पिता जी-बड़ी माता जी	: संपतलाल जी-पुष्पा जी, स्व. श्री ज्ञानचंद जी-विजया जी, कमलचंद जी-सुनीता जी, रमेश जी-अनिता जी, दिलीप जी-वर्षा जी पारख
चाचा जी-चाची जी	: स्व. श्री सुनील जी-दीप्ति जी पारख
भाई-भाभी	: अमित जी-स्वीटी जी, नवदीप जी-पूजा जी, संदीप जी-रुचि जी, पार्श्व जी-प्रियंका जी, आदित्य जी-पल्लवी जी, प्रणय, रौनित, रौनक, विनीत
बहन-बहनोई	: सपना जी-कविश जी छाजेड़, वर्षा जी-नितिन जी बाघमार, प्रिया जी-राज जी गटागट, अदिति
भुआ जी-फूफा जी	: मधु जी-राजकुमार जी छाजेड़, संजय जी-इंदु जी कटारिया, विकास जी-श्रुति जी नाहटा
मामा जी-मामी जी	: ज्ञानचंद जी-रानी जी, ओमप्रकाश जी-हेमलता जी, रेखचंद जी-रेणु जी, अनूप जी-अंजलि जी, नीलेश जी-रूपाली जी सुराना
परिवार से दीक्षित	: श्री इंद्रमुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय नाना जी), साध्वी श्री गरिमा श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय नानी जी), साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय मौसी जी), साध्वी श्री पुण्यप्रिया जी म.सा. (संसारपक्षीय मौसी जी), साध्वी श्री कामना श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहिन)

आओ मनाएँ 'महत्तम महोत्सव'

हम सभी के आराध्य, नाना गुरु के राम, परमागम रहस्यज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ (स्वर्ण) दीक्षा दिवस माघ सुदी 12 संवत् 2081, दिनांक 09 फरवरी 2025 को है। इस पावन अवसर के स्वागत हेतु संघ द्वारा आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव' आयाम के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया, जिसका शुभारंभ 13 जुलाई 2022 को हुआ। इस आयाम के नौ बिंदुओं के अन्तर्गत लगभग प्रत्येक साधुमार्गी परिवार के सदस्य धर्माराधना एवं ज्ञानार्जन से अपना जीवन धन्य बना रहे हैं।

इस पावन अवसर के उपलक्ष्य में हमारा यह प्रयास है कि श्रमणोपासक के आगामी अंक आचार्य श्री रामेश के जीवन पर आधारित हों, जिनमें उनकी दीर्घ कठोर संयम साधना, चारित्र्य, दीक्षाओं के प्रसंग, संघ एवं समाज के उत्थान के लिए उनके द्वारा किए गए अनमोल प्रयास, जन-मन को पावन करते उनके मार्गदर्शन आदि से संबंधित सामग्री समाहित करने का प्रयास रहेगा। ऐसे किसी विशेष प्रसंग की जानकारी या कोई संस्मरण आपके पास हो तो शीघ्र ही साफ अक्षरों में लिखकर श्रमणोपासक टीम के भिजवाने का कष्ट करें ताकि वह सामग्री आगामी अंकों में प्रकाशित कर उसे संघ व समाज हित में सभी से साझा किया जा सके।

आप अपनी रचनाएँ वॉट्सएप 9314055390 व email : news@sadhumargi.com के माध्यम से भेज सकते हैं।

-सह-सम्पादिका

श्रमणोपासक के बाल पाठकों के लिए नववर्ष पर एक सुनहला अवसर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक में 'बालसुलभ भाव' नाम से नवीन कॉलम की शुरुआत की जा रही है। इस हेतु बच्चों द्वारा स्वलिखित रचनाएँ उनके नाम के साथ प्रकाशित की जाएगी। यह क्रम प्रतिमाह के धार्मिक अंक में रहेगा। तो उठाइए अपनी कलम और गुरु, धर्म, संस्कार, समर्पण, संघ विषयक लेख, कविता, कहानी, रूपक हिंदी व अंग्रेजी भाषा में लिखकर हमें अतिशीघ्र ही वॉट्सएप नं. 9314055390 एवं ईमेल : news@sadhumargi.com पर भिजवा दें।

-श्रमणोपासक टीम



राम चयकर्ते भानु समाना

कार्यसमिति बैठक



20 जनवरी, 2024 (शनिवार)
जावड़ (म.प्र.)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर
12.15 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर
12.15 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रभारी, राष्ट्रीय एवं आंचलिक प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय संघ/शाखा अध्यक्ष, लीड मेम्बर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर
12.15 बजे से

—* निवेदक *—



राष्ट्रीय महामंत्री



श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ



सर्वोत्तमं भानु समाना

संयुक्त सत्र
जावड़ (म.प्र.)

महत्तम महोत्सव
आध्यात्मिक स्नेह सम्मेलन

20 जनवरी,
2024
शाम 7 बजे
से



आमंत्रित

श्रीसंघ, महिला समिति, समता युवा संघ
पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य एवं स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री

आमंत्रित
मध्यप्रदेश अंचल की तीनों इकाइयों के
अध्यक्ष व मंत्री तथा महत्तम महोत्सव प्रमुख व क्षेत्रीय प्रतिनिधि

—* निवेदक *—



राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ



सर्वोत्तमं भानु समाना

लीडरशिप ऑरियंटेशन
प्रोग्राम

जावड़
(म.प्र.)

21 जनवरी,
2024

प्रातः 9 बजे
से

आमंत्रित

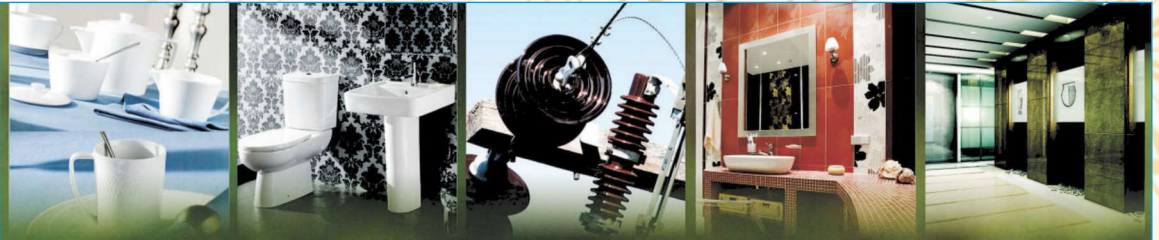
शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

—* निवेदक *—

राष्ट्रीय महामंत्री

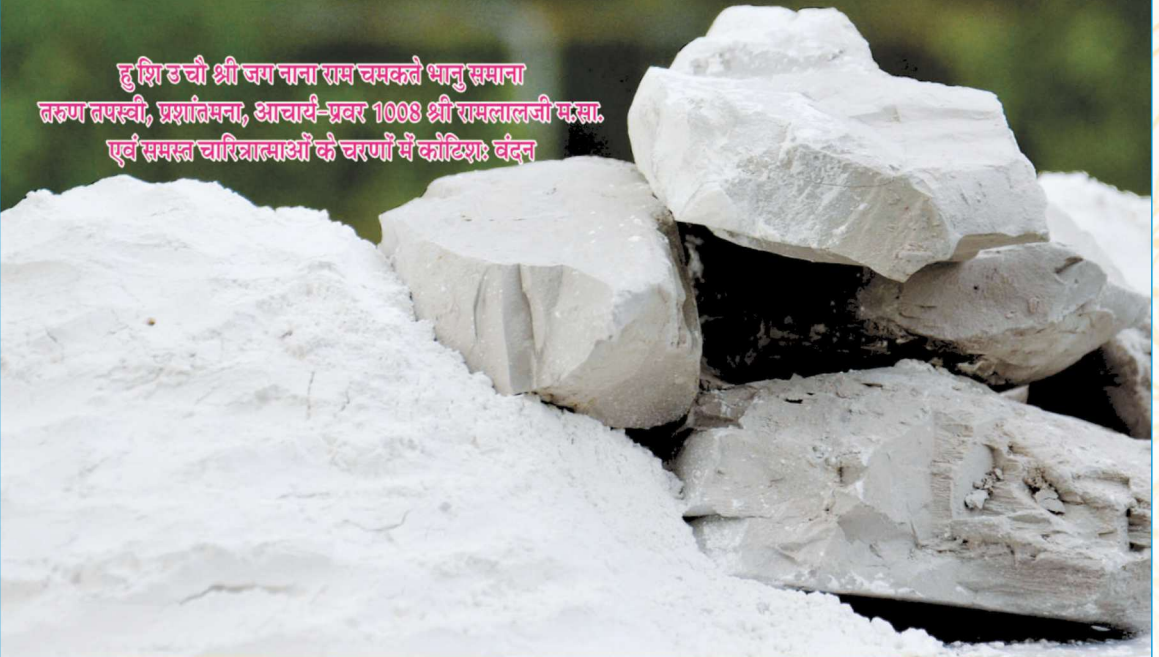
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ





Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

15-16 दिसम्बर 2023
www.sadhumargi.com

श्रमणोपासक

65

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT



PATIENT ROOM



RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095

Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से

कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com



व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	} news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	} examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर
YOUR TRUST

जय गुरु राम



RAKSHA[®]

PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL



Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA

Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.

Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond
Dureflex

Diamond
DUROLON



Now with new
M.R.O.
Technology
Resists High Impact



IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526 149



LUCALOR
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटेर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh



www.facebook.com/HOSadhumargi

